Nagari Pracharini Granthamala Series No. 24

लाल कवि रचित

छत्रप्रकाश ।

—:o:—

श्यामसुन्दरदास बी० ए० और कृष्णबल्देव वर्म्मा
द्वारा सम्पादित

तथा
काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित ।

1916
THE INDIAN PRESS, ALLAHABAD

भूमिका।

—:०:—

भारतवर्ष के मध्य भाग में बुंदेलखंड प्रान्त स्थित है। इसके उत्तर ग्रोर जमुना, दक्षिण ग्रोर नर्मदा, पूर्व की ग्रोर तौंस ग्रौर पश्चिम की ग्रोर कालिसिन्ध नदी बहती है।

ऐसा कहा जाता है कि जिस समय महाराज युधिष्ठिर भारतवर्ष का राज्य कर रहे थे उस समय इस प्रान्त में शिशुपाल नाम का राजा राज्य करता था ग्रौर इस प्रान्त का नाम चेन-देश था। शिशुपाल के उत्तराधिकारियों ने बहुत दिनों तक यहां राज्य किया। अन्त में अवध के राजा करन ने इसे जीत लिया ग्रौर कालिंजर में एक महल बनवाया ग्रौर शिशुपाल के समय की बसी हुई चँदेरी नगरी को उजाड़ कर गेरुपर्वत के निकट उसे फिर से बसाया। ग्राज कल चँदेरी नगरी ललितपुर से १८ मील पश्चिम की ग्रोर स्थित है। शिशुपाल के समय की चँदेरी नगरी ग्राधुनिक नगरी से ७ मील के लगभग उत्तरपश्चिम की ग्रोर स्थित थी। इसे अब बूढ़ी चँदेरी कहते हैं ग्रौर टूटे फूटे मन्दिर ग्रब तक इसकी प्राचीनता की साक्षी देते हैं। राजा करन ने ग्रपनी बसाई हुई चँदेरी में एक बड़ा तालाब खुदवाया जिसे "परमेश्वर" नाम दिया ग्रौर गेरु पर्वत पर एक कोट बनवा कर वहाँ अपनी सेना रक्खी। इस वंश का ग्रन्तिम राजा सोमी हुआ जो अपना राज छोड़ कर कच्छभुज की ग्रोर चला गया। इस समय उज्जैन का राजा भर्तृहरि था। पर वह भी वैरागी होकर राज पाट छोड़ जंगल में चला गया ग्रौर उसका छोटा भाई विक्रम राज्य का अधिकारी हुआ।

इसने समस्त मध्य भारत को जीत कर चेन-देश को अपना केन्द्रस्थान नियत किया।

विष्णु पुराण में लिखा है कि जमुना से नरवदा तक और चम्बल से केन तक नागवंशी क्षत्रियों का राज्य था पर इनके राजकाल की अवधि ठीक ठीक स्थिर नहीं की जा सकती।

इस वंश का अन्तिम राजा देवनाग हुआ जिसके समय में राजा गोपाल के सेनापति तोरमान कछवाहा ने इरन* पर आक्रमण किया और भुपाल से इरन तक के समस्त देश को जीत लिया। देवनाग अपना राज छोड़कर नरवर की ओर जैपाल चला गया और तोरमान का वंशज सूरसेन इस देश का राजा हुआ। इसने ग्वालियर का प्रसिद्ध कोट बनवाया।

सूरसेन ने बहुत दिनों तक राज्य किया। सन् ५९३ में कन्नौज के राजा ने ग्वालियर, चँदेरी और नरवर को छोड़ कर समस्त देश जीत लिया पर कछवाहों ने उसे वहाँ से शीघ्र ही भगा दिया। इसी समय में ठाकुर चन्द्रब्रह्म ने महोवे के निकट अनेक गांवों पर अपना अधिकार जमा लिया। इसी ठाकुर के वंशज चन्देल कहलाए।

कछवाहा वंश का अन्तिम राजा तेजकरन था। इस के समय में परिहार वंश का प्रताप बढ़ा और उन्होंने ग्वालियर को जीत लिया। इस पर तेजकरन धुन्धार में जा बसा पर उसके वंशजों ने नरवर और इदुर में रहना स्थिर किया। परिहार राजाओं का राज बहुत दिनों तक न चल सका। चन्देल राजाओं की शक्ति दिनों दिन बढ़ती गई और अन्त में ग्वालियर को छोड़ कर समस्त देश उनके अधिकार में आ गया। पर ग्वालियर भी कछवाहों के हाथ में बहुत दिनों तक न रहा। सन् १२३२ में तोमर वंशी ठाकुरों ने उसे जीत कर अपने वश में कर लिया।

---

* यह स्थान सागर जिले में बेन नदी के किनारे स्थित है।

चन्देल वंश का पहला राजा वाक्पति हुआ। इसके दो लड़के जयशक्ति और विजयशक्ति हुए। इनके पीछे राहिल, हर्ष, यशोवर्मन, विनायकपाल देव, विजयपाल, कीर्तिवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन, परमार्दि देव, त्रिलोकवर्मदेव, वीरवर्मन, और भोजवर्मन क्रम से राजा हुए। भोजवर्मन के समय में वीर बुन्देला ने इस देश को अपने अधिकार में कर लिया।

वीरभद्र गहिरवार क्षत्री था और इसके पूर्वज काशी के राजा थे। छत्रप्रकाश में वीरभद्र के पूर्वजों की नामावली इस प्रकार दी है। रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंश में हरिब्रह्म हुए जिनके पीछे वीरभद्र तक ये राजा हुए—महिपाल, भुवपाल, कमलचन्द्र, चित्रपाल, बुद्धिपाल, नन्दसिंहगराज, काशिराज, गहिरदेव, विमलचन्द्र, नाहुचन्द्र, गोपचन्द्र, गोविंदचन्द्र, टिहनपाल, विन्ध्यराज, सोलिकदेव, वीझलदेव, अर्जुनदेव, वीरभद्र।

वीरभद्र के पाँच लड़के थे, राजसिंह, हंसराज, मोहन, मान, जगदास। जगदास जिसे पंचम भी कहते हैं, अपने पिता का सब से प्यारा पुत्र था। इसलिये वीरभद्र ने अपना आधा राज्य तो जगदास को दे दिया और आधा राज्य दूसरे चार लड़कों में बाँट दिया। इस पर राजसिंह, हंसराज, मोहन और मान को बड़ी ईर्षा हुई और उन्होंने अपने पिता के मरने पर सन् ११७० में जगदास उपनाम पंचम का राज्य छीन लिया और उसको आपस में बाँट लिया। पंचम दुखित हो विन्ध्याचल को चला गया और वहाँ श्रावण कृष्ण १ संवत् '१२२८ से उसने घोर तपस्या प्रारंभ की। नौ दिन तक कठिन व्रत रख कर उसने दसवें दिन यह निश्चय किया कि अपना सिर काट कर विन्ध्यवासिनी देवी को चढ़ाऊँ। ऐसा कहा जाता है कि ज्योंही उसने यह करना चाहा त्योंही ये शब्द सुन पड़े कि "जा, तू राजा होगा"। इस पर पंचम ने कहा कि मुझे दर्शन दो और ऐसी कोई वस्तु दो जिससे मैं अपने भाइयों को जीत कर उनसे अपना राज्य छीन लूं। पर जब

इसका कोई उत्तर न मिला तो वह पुनः अपना सिर काटने पर उद्यत हो गया। इस पर विन्ध्यवासिनी देवी ने पंचम को दर्शन दे कहा कि "जा तेरी जय होगी, तू अपना राज्य करेगा और तेरे वंश के लोग मध्य भारत पर राज्य करेंगे।" पंचम ने जो तलवार अपने सिर काटने के लिये उठाई थी वह उसके सिर पर लग गई और उससे रक्त का एक बूँद पृथ्वी पर गिर पडा। इस पर भगवती ने कहा कि तेरे वंश के लोग बुंदेला कहलावेंगे। यह कह देवी तो अन्तर्हित हो गईं और पंचम वहाँ से चला आया। पीछे से उसने सेना इकट्ठी करके अपने भाइयों को जीता और उनसे अपना राज्य छीन लिया। इसी समय से पंचम के वंशज वीर बुँदेला कहलाए और जिस देश पर उन्होंने राज्य किया वह बुंदेलखंड कहलाया। पंचम से लेकर छत्रसाल तक बुँदेलों की वंशावली इस प्रकार है—

पंचम (सन् १२१४ में मरा)
वीर बुँदेला (सन् १२३१ में काल्पी, मुहोनी, और कालिंजर जीता)
करनतीर्थ (इसने काशी में कर्णघंटा तीर्थ बनवाया)
अर्जुनपाल (इसने महोनी को अपनी राजधानी बनवाया)

वीरबल—सोहनपाल और दयापाल। अर्जुनपाल की मृत्यु पर वीरबल राज्याधिकारी हुआ और सोहनपाल को कुछ थोड़े से गांव मिले पर इससे वह सन्तुष्ट न हुआ—इस पर वह अनेक राजाओं के पास गया कि जिसमें उनसे सहायता लेकर अपना राज्य बढ़ावे पर किसी ने सहायता न दी। अन्त में पँवार ठाकुरों की सहायता से उसने कुराट के राजा नाग को मार एक नया राज्य स्थापित किया। धीरे धीरे सोहनपाल आधे बुंदेलखंड का राजा होगा।

सहजेन्द्र—सोहनपाल का पुत्र—यह सन् १२९९ में गद्दी पर बैठा इसका छोटा भाई "राम" था।

नानकदेव—सन् १३२६ में गद्दी पर बैठा, इसका छोटा भाई सैानिकदेव था।

पृथ्वीराज—सन् १३६० में गद्दी पर बैठा—इसका छोटा भाई इन्द्रराज था।

छत्रप्रकाश में लिखा है कि पृथ्वीराज के पीछे रामसिंह, रामचन्द्र और मेदिनीमल्ल क्रम से राजा हुए पर अन्य इतिहासों से यह विदित होता है कि पृथ्वीराज के पीछे सन् १४०० में उसका पुत्र मदनपाल राज्य का अधिकारी हुआ।

मदनपाल—

अर्जुनदेव—सन् १४४३ में गद्दी पर बैठा—कविप्रिया में केशवदास ने इनकी बहुत प्रशंसा की है—इनके दो भाई माल और भीमसेन थे।

मलखान—सन् १४७५ में गद्दी पर बैठा। सन् १४८२ में बहलोल लोदी (१४५३—१४८८) से लड़ा। मलखान सन् १५०७ में मरा। इसके आठ लड़के थे जिनके नाम ये हैं—प्रतापरुद्र, शाह, जैत, जोगजीत, बरयारसिंह, भाऊसिंह, खड्गसेन, और धीरचन्द।

प्रतापरुद्र—छत्रप्रकाश में इनका नाम रुद्रप्रताप लिखा है। इसने इबराहीम लोदी का बहुत सा राज्य अपने राज्य में मिला लिया। जब बाबर ने इब्राहीम को जीत कर चन्देरी के राजा मेदनीराय को पराजित किया तो उसकी इच्छा प्रतापरुद्र से इब्राहीम के राज को छीन लेने की हुई पर वह केवल काल्पी ही ले सका। वैसाख कृष्ण १३ संवत् १५८७ (सन् १५३०) को प्रतापरुद्र ने ओड़छे का नगर बसाया। इन्हें आखेट का बड़ा व्यसन था और इसी में इनकी सन् १५३१ में जान गई। इनके बारह लड़के थे जिनके नाम ये हैं—

भारतीचन्द, मधुकरसाहि, उदयाजीत, कीरतिसाहि, भूपतिसाहि, अमनदास, चंदनदास, दुर्गादास, घनश्याम, प्रागदास, भैरोंदास, खांडेराय।

भारतीचंद्र—सन् १५३१ में गद्दीपर बैठे थे, इनके समय में शेरशाह (१५४२—१५४५) ने बुंदेलखंड जीतना चाहा पर वह कृतकार्य न हो सका। इस समय राज्य की वृद्धि बहुत कुछ हुई और उसकी वार्षिक आय लगभग दो करोड़ के थी। इनके कोई पुत्र न था इसलिये मधुकर-साहि राजा हुए।

मधुकरसाहि—ये सन् १५५२ में गद्दी पर बैठे। इनके समय में अकबर ने बुंदेलखंड जीतने का कई बेर उद्योग किया। कभी तो मुसलमानों की जीत होती और कभी बुँदेलों की। अन्त में १५८४ में शाहजादा मुराद स्वयं एक बड़ी सेना लेकर आया—पर मधुकरसाहि की वीरता से प्रसन्न होकर उसने उसका सारा राज्य लौटा दिया। मधुकरसाहि के पीछे उसके वंश का राज्य ओड़छे में चला। राजा प्रतापरुद्र ने अपने तीसरे लड़के उदयाजीत को महेवा दे दिया था इसलिये अब महेवे का वंश अलग चला।

मधुकरसाहि के पीछे उनके वंशजों और मुसलमानों से निरन्तर

लड़ाई होती रही, कभी एक जीतता कभी हारता, पर दिनों दिन बुंदेलखण्ड में मुसलमानों का अत्याचार बढ़ता रहा। उदयाजीत के वंश के लोग भी इन युद्धों में सम्मिलित रहते थे। मधुकरसाहि के पुत्र वीरसिंह देव के पीछे जुझारसिंह ने अपने भाई राजकुमार हरदेव को अपनी ही रानी से विष दिलवा कर मार डाला। इस जघन्य पाप से चारों ओर हाहाकार मच गया। बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा इस घटना का वर्णन इस प्रकार अपने "बुंदेलखण्ड पर्य्यटन" में लिखते हैं—

"कहते हैं कि जब ओड़छाधीश, महाराज वीरसिंहदेव के पीछे, दिल्लीश्वर की राजसभा में रहने लगे, तब राज्यप्रबन्ध का भार राजकुमार हरदेवसिंह के सिर पड़ा। अपना कार्य सभी भली भांति सम्हालते हैं। राजकुमार दत्तचित हो राज्यप्रबन्ध करते रहे। उनके प्रबन्ध में घूस खाने हारों का निर्वाह न था। जिन लोगों का पेट घूस ही के द्वारा भरता था, उनको हरदेवसिंह से ईर्षा उत्पन्न हो गई और राज-प्रबन्ध हरदेवसिंह से छीनने का वे लोग प्रयत्न करते रहे। राजकुमार की भक्ति अपनी भ्रातृपत्नी में माता के समान थी और वह भी अपने देवर को पुत्रवत ही मानती थी। परस्पर यही सम्बन्ध सदैव रहता था। पुत्रवत्सला माता को जैसे अपने पुत्र को बिना देखे चैन नहीं आता, वही दशा उनकी भ्रातृपत्नी की थी। विश्वासघाती प्रतीतराय ने यह देख भ्राताओं में वैमनस्य कराना चाहा और एक पत्र राजा को लिखा कि राजकुमार का राजमहिषी से अश्लील सम्बन्ध है। सत्य है "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"। राजा ने पत्र पढ़ राजमहिषी के सतीत्व में सन्देह कर परीक्षा करनी चाही। अतएव उन्होंने राजमहिषी से कहा कि यदि तुम्हारे सतीत्व में अन्तर नहीं पड़ा और तुम्हारा हरदेवसिंह से घृणित सम्बन्ध नहीं है तो तुम अपने हाथ से उसे विष दो। राजमहिषी ने बड़े दुःख से अपनी धर्मरक्षार्थ प्रस्ताव स्वीकार किया और भोजन प्रस्तुत किए। कहते हैं कि जब वे भोजन हरदेवसिंह को परोसने लगीं तब उनके

अश्रु संचालन हो उठा। हरदेवसिंह ने क्रान्त हो पूछा कि माता! आज पुत्र को खिलाने में तुम क्यों रोती हो? क्या मैंने कुछ तुमको दुःख दिया है। भूमि की तृप्ति तो मघा के बरसने और पुत्र की तृप्ति माता के परोसने से होती है। क्या आज तुममें कुछ मातृस्नेह न्यून होगया है जो तुम रोती हो? राजमहिषी चीख मार कर रो उठीं और जब हरदेवसिंह ने बहुत प्रबोध किया तो बोलीं कि वत्स! अब मैं माता कहे जाने के उपयुक्त नहीं हूं! महाराज को मेरे सतीत्व में सन्देह हुआ है। जगत प्रलय होते हुए भी स्त्री का पहला धर्म सतीत्व-रक्षा है; अस्तु उसीकी इस समय परीक्षा ली गई है, जिसके कारण तुझ सा देवर, जो वास्तव में मेरे पुत्र के समान ही था, आज विष भोजन कर रहा है और अपनी धर्मरक्षा के लिये आज मुझ दुर्भागिनी को यह घोर वत्सहत्या करनी पड़ी। हरदेवसिंह यह सुनते ही उस भोजन को बड़े प्रेम से शीघ्र शीघ्र खाने लगे और बोले कि माता! यह भोजन मेरे लिये अमृत समान है। तेरी धर्मरक्षा से मेरी सुकीर्ति युगानुयुग होगी। राजमहिषी इन सौजन्यपूरित वाक्यों को सुन और भी कातर हो उठीं। उनके ज्येष्ठ भ्राता यह धर्मपरीक्षा और धर्मभक्ति देख कर्तव्यविमूढ़ पत्थर की प्रतिमा सम मुग्ध हो अपनी दुर्बुद्धि पर रोने लगे। हरदेवसिंह जी वहां से रसोई का विष-पूरित शेष भोजन उठवा लाए और उन्होंने अपनी दशा का अन्तिम समाचार अपने मित्रों सेवकों और कर्मचारियों से कहा। उनमें से कितने ही हरदेवसिंह जी के सद्गुणों से ऐसे अनुरक्त थे जो उनके साथ ही चलने को उद्यत हो गए और बहुतों ने वही विषपूरित भोजन पा लिया। हरदेवसिंह जी के प्यारे हाथी घोड़े को भी वही भोजन खिलाया गया। हरदेवसिंहजी अपनी बैठक के बंगले में बैठ गए। प्रेमरस पीने हारे थोड़ी देर में झूम झूम गिरने लगे। हरदेवसिंहजी अपनी सेना के अग्रगामियों का स्वर्गमार्ग में बढ़ना देखते ही देखते स्वयम् भी झूमने लगे। अन्तकाल-रूपी अश्व इनके लिये प्रस्तुत होने

लगा। जब विष की तरंगों की उमंगें आपके शरीर में उठने लगीं, तब आप बाटिका के बंगले से उठ एक पत्थर के टुकड़े पर, जो रघुनाथजी के मन्दिर के आंगन में ठीक मूर्ति के सम्मुख गड़ा है, मर्य्यादा पुरुषोत्तम की मूर्ति के सम्मुख हाथ जोड़ आ बैठे और ध्याना-वस्थित आँखें किए प्रेमपूर्ण लड़खड़ाती वाणी से भैतापहारी अवध-विहारी से अपने पापों की क्षमा और उनकी दया की भिक्षा माँगने लगे और थोड़ी ही देर में वहीं समाधिस्थ हो अटल निद्रा में ब्रह्मानन्द के स्वप्नों के दृश्य देखने लगे। महाराज हरदेवसिंह उसी समय से प्रख्यात हरदेवलाल के नाम से विशूचिका के दिनों में पुजने लगे। इनके चौतरे समस्त भारतवर्ष में ठौर ठौर बने हुए हैं। हरदेवसिंह जी की मृत्यु के पीछे समस्त ओड़छे में उदासी छा गई। राजा के इस जघन्य कर्म की निन्दा सजातीय और विजातीय सब लोग करने लगे और ऐसे अविवेकी महाराज के साथ को सर्वदा भयप्रद जानकर उनसे सम्बन्ध तोड़ बैठे। सम्बन्धियों ने भी महाराज से नाता तोड़ा। ओड़छे के लिये यह बड़े अभाग्य का दिन था।"

निदान इस अवसर को अच्छा जान कर शाहजहाँ ने मुहब्बत खाँ, खांजहाँ, और ख्वाजह अबदुल्ला के अधीन बड़ी सेना भेज कर बुंदेलखंड को जीतना चाहा। वीरसिंह देव के छोटे भाई उदयाजीत के प्रपौत्र चम्पतराय से यह न सहा गया। वे अपने सम्बन्धियों की ओर से लड़ने को उद्यत हो बैठे। यद्यपि इस युद्ध में मुसलमानों की जीत हुई पर चम्पतराय ने उनका पीछा न छोड़ा। जब जब उन्हें अवसर मिला वे कुछ न कुछ हानि मुसलमानों को पहुँचाते रहे। सन् १६३३ में तो चम्पतराय एक किले में घिर गए पर अपने बुद्धिबल और वीरता से वहाँ से निकल भागे और पहले की भांति चारों ओर उत्पात मचाते रहे। अन्त में एक समय मुसलमानों के साथ युद्ध करते हुए अपने देश वालों को अपने विरुद्ध पाकर उन्होंने आत्महत्या की। इनके पीछे छत्रसाल ने अपने पिता की नीति ग्रहण की और वे

बहुत दिनों तक लड़ते रहे। अन्त में इनसे और औरंगजेब से मेल होगया और इन्हें फिर बुंदेलखण्ड का राज्य मिला। छत्रसाल का जन्म १६३४ के लगभग हुआ था। इन्हीं की आज्ञा से लाल कवि ने छत्रप्रकाश ग्रन्थ लिखा। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि छत्रसाल सन् १६५८ में उस लड़ाई में मारा गया जो दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच में हुई थी पर छत्रप्रकाश से यह विदित होता है कि चम्पतराय और छत्रसाल दोनों उस लड़ाई में औरंगजेब की ओर से लड़े थे और उसके पीछे तक जीते रहे। औरंगजेब ने कृतघ्नता करके चम्पतिराय को पुनः कष्ट देना आरम्भ किया था और अन्त में छत्रसाल और औरंगजेब से मेल होगया जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है—इसलिये छत्रसाल की मृत्यु १६५८ में नहीं हुई वरन उसके कई वर्षों पीछे हुई। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि लाल कवि ने विष्णुविलास नाम का एक ग्रन्थ नायका भेद का लिखा है परन्तु वह अब तक मेरे देखने में कहीं नहीं आया। गार्सिन डी टासी का अनुमान था कि छत्रप्रकाश बुंदेलखंड के इतिहास का अंश मात्र है पर पुस्तक देखने से यह नहीं जान पड़ता। यह एक स्वतंत्र ग्रन्थ है यद्यपि इसमें सन्देह है कि यह कभी लिख कर पूरा किया गया, क्योंकि जितना अंश इसका मिलता है और जो यहां प्रकाशित किया गया है उससे ग्रंथ की समाप्ति नहीं प्रमाणित होती। छत्रप्रकाश का अंग्रेज़ी अनुवाद क्यापटेन पागसन ने किया है। छत्रप्रकाश को पहले पहल मेजर प्राइस ने सन् १८२९ में कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालिज से छाप कर प्रकाशित किया था परन्तु अब वह प्रति अप्राप्त है, इसलिये काशी नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से यह पुनः छापकर प्रकाशित किया गया है।

इसकी भूमिका विस्तार से नहीं लिखी गई है पर जितनी बातें जानने योग्य थीं सबका उल्लेख इसमें संक्षेप रूप से कर दिया गया है। जिन्हें बुंदेल खंड का विस्तृत इतिहास जानना हो वे इस विषय की अन्य पुस्कें देखें।

लाहौरी टोला
काशी ५-८-१९०३, } श्यामसुन्दरदास

अध्याय-सूची।

छत्रप्रकाश।

—:○:—

पहला अध्याय

दोहा।

एकरदन सिंधुरबदन, दुर-बुधि तिमिर-दिनेश।
लंबोदर असरन सरन, जै जै सिद्धि गनेश॥ १॥

छन्द।

सिद्धिगनेश बुद्धि बर पाऊँ। कर जुग जोरि तोहि सिर नाऊँ॥
तूं अघ के अघओघन खंडै। अधिक अनेकन बिघन बिहंडै॥
प्रथम क सुर नर मुनि पूजा। और कौन गनपति सम दूजा॥
भौभंजन सेसऊ गुन गावैं। मूसऊबाहन मोदक पावैं॥
उच्च कुंभ सिंदूर चढावैं। रवि उदयाचल छविहिं बढ़ावैं॥
अंकुस लियें दरद कौ दारैं[1]। विकट कटक संकट के कारैं॥

दोहा।

काटैं संकट के कटक, प्रथम तिहारी गाथ।
मोहि भरोसौ है सही, दै बानी गननाथ॥ २॥

छन्द।

जै जै जै आनंदित बानी। तुही सत्य चैतन्य बखानी॥
तुही आदि ब्रह्मा की रानी। वेद पुरानमयी तूं जानी॥

दोहा।

तूं विद्या तूं बुद्धि है, तुही अविद्या नाम।
तूं बांधै सब जगत कौ, तूं छोरैं[2] परिनाम॥ ३॥

१—दारैं = भय दिखावे, भयभीत करे। २—छोरैं = खोले, स्वतंत्र करे।

छन्द ।

तेरी कृपा लाल जो पावै । ताै कवि रीति बुद्धि विलसावै ॥
कविता रीति कठिन रे भाई । वाहिन समुद पहिर[1] नहिं जाई ॥
बड़ो बंस बरनौ जो चाहो । कैसे सुमतिसिंधु अवगाहाै ॥
चहूं ओर चंचल चितु धावै । विमल बुद्धि ठहरान न पावै ॥
बांधो विषै सिंधु की डोरें । फिर फिर लोभ लहर में बोरें ॥
जो उर विमल बुद्धि ठहराई । ताै आनंद सिंधु लहराई ॥
उठी अनंद सिंधु की लहरें । जस मुकता ऊपर ह्वै छहरें ॥
छहरि छहरि छिति मंडल छायो । सुनि सुनि वीर हियौ हुलसायौ ॥

दोहा ।

दान दया घमसान में, जाके हिये उछाह ।
सोही वीर बखानिये, ज्यों छत्ता[2] छितिनाह ॥ ४ ॥

छन्द ।

भूमिनाह को वंस बखानौं । सबही आदि भान को जानौं ॥
एक भान सब जग को तारै । जहां भानु से देसि उज्यारै ॥
सुर नर मुनि दिन अंजलि बांधे । करत प्रनाम भगति को कांधे ॥
एकचक्र रथ पै चढ़ि धावै । सकल गगन मंडल फिरि आवै ॥
साठि हजार असुर नित[3] मारै । धरम करम दिन प्रति विस्तारै ॥
कमल क्यों न मुसक्याइ निहारै । लच्छि देत कर सहस पसारै ॥
करनि बरष जल जगत जिवावै । चोर कहूं संचार न पावै ॥
काल बांधि निजु गति सो राख्यो । एक जीभ जस जात न भाष्यो ॥

१—पहिर = वास्तव में पैर—उत्तीर्ण होना, पैरना, तरना ।

२—छत्ता = महाराज छत्रशाल का प्यार का घरेऊ नाम ।

३—कहा जाता कि जलाञ्जलि पाने से सूर्य्यदेव साठ सहस्र दैत्यों का नित्य विनाश करते हैं ।

दोहा ।

भाष्यौ जात न जासु जस, वेसै उदित दिनेस ।
ताके भयो महा वली, मनु उद्‌ंड नरेस ॥ ५ ॥

छन्द ।

मनु अनेक मानस उपजाये । याते मानव मनुज कहाये ॥
बरनौं ताकौ बंस कहाँ लौं । जगत विदित भरलोक जहाँ लौं ॥
तिन में छिति छत्री छवि छाये । चारिहुँ जुगन होत जे आये ॥
भूमि भार भुजदंडनि थंभे । पूरन करैं जु काज अरंभे ॥
गाइ वेद द्विज के रखवारे । जुद्ध जीत के देत नगारे[1] ॥
परम प्रवीन प्रजन कौ पालैं । भीर परैं न हलायें हालैं ॥
दान हेत संपति कौ जोरैं । जस हित परलि खग्ग गहि तोरैं ॥
बाह छांह सरनागत राखैं । पुन्य पथ चलिबौ अभिलाषैं ॥

दोहा ।

प्रगट भयौ तिहि वंस में, रामचंद्र अवतार ।
सेतु बांधि कै जिन कियौ, दसमुख कुल सघार ॥ ६ ॥

छन्द ।

रामचंद्र के पुत्र सुहाये । कुस लव भये जगत जे गाये[2] ॥
कुस कुल कलस भये छवि छाये । अवधि पुरी नृप घने गनाये ॥
तिन में दानजुझ सिरताजा । हरिब्रह्म कुलधंसन राजा ॥
हरिब्रह्म कुलतिलक प्रवीनै । महीपाल जस आहिर कीनै ॥
महीपाल उदित सुत पाये । नृप-कुल-मनि भुवपाल कहाये ॥
तिनके कमल चंद जग जानै । सूरन के सिरमौर बखानै ॥
तिनके चित्रपाल मरदानै । बुद्धिपाल जिन सुत उर आनै ॥
नंद विहंगराज तिन जाये । अवधि पुरी नृप-सात बनाये ॥

१—नगारे = डंका । २—गाये = प्रख्यात हुए ।

दोहा ।

विहंगेस नृप के भये, कासिराज सिरताज ।
अवधि पुरी तें उमड़ि जिन, कीनौ कासी राज ॥ ७ ॥

छन्द ।

कासिराज नृप मनि छवि छाये । कासी वैठ सुजस वगराये ॥
तिनके कुल जेते नृप आये । काशीश्वर ते सबै कहाये ॥
गहिरदेव नंदन तिन पाये । भुव पर प्रगट सुजस वगराये[1] ॥
तिनके वंस भये नृप जेते । गहिरवार कहियत सब तेते ॥
गहिरदेव के पुत्र वखानौ । विमलचंद जग जाहिर जानौ ॥
राजा नाहुचंद तिन जाये । जिन दौरन[2] दिगपाल हलाये ॥
गोपचंद तिनके सुत ऐसे । करन दधीच धरमधुर जैसे ॥
तिनके गोविंदचंद गरूरे । दान जूझ वलि विक्रम पूरे ॥

दोहा ।

टिहनपाल तिन के भये, परम-धरम-धुर-धीर ।
विंध्यराज तिन उर धरे, जे गुन में गंभीर ॥ ८ ॥

छन्द ।

विंध्यराज नृप सुत उपजाये । सोनिकदेव देव से गाये ॥
ताकौ पुत्र प्रगट जग मांही । वीभलदेव धरम की छांही ॥
अर्जुनवर्म पुत्र तिन पाये । जुद्ध मध्य अर्जुन ठहराये ॥
तिनके वीरभद्र नृप जानौ । छत्र धरमधुर धरन सयानौ ॥
वीरभद्र नृप के सुत सूरे । भये पांच वल विक्रम पूरे ॥
चारि पुत्र पटरानी जाये । लहुरी[3] रानी पंचम पाये ॥
चारि पुत्र के नाम न जानौं । पंचम नृप कौ वंस वखानौं ॥
वीरभद्र नृप सुजस वगारे । पुहुमि पालि सुरलोक सिधारे ॥

१—वगराये = फैलाये ।   २—दौरन = आक्रमण ।
३—लहुरी = छोटी ।

दोहा।

बीरभद्र सुरलोक कौ, गये सुजस जग माड़ि[1]।
पुहमी पंचमसिंह कौ, बाल बहिक्रम छाडि ॥ ९ ॥

छन्द।

पंचम बाल बहिक्रम जान्यौ। लोभ चहूँ बंधुन उर आन्यो ॥
पचम की पुहमी उन लीनी। बाँटि चार हीसा[2] करि लीन्ही ॥
बंधुन दिये दुःख इमि भारे। गृह तजि पंचमसिंह सिधारे ॥
छाड़त गेह बड़ी दुचताई[3]। कित जैये को होइ सहाई ॥
यह संसार कठिन रे भाई। सबल उमड़ि निर्बल को खाई ॥
छनिक राज संपति के काजै। बंधुन मारत बंधु न लाजै ॥
जीवन नेनकु पाप अधिकारे। धन जोबन सुख तुच्छ निहारे ॥
निघटत आपु न जानत बधे। माया के बंधन सब बंधे ॥

दोहा।

माया के दिढ़ बध सौं, बंध्यौ सकल सँसार।
बूड़त लोभ समुद्र में, कैसे पावे पार ॥ १० ॥

छन्द।

पार लोभ सागर को नाहीं। भ्रमत सबै माया भ्रम माहीं ॥
सो माया चैतन्य बखानी। आनन्दमयी ब्रह्म की रानी ॥
उपजावत ब्रह्मांड अलेखैं। काल ब्रह्म खेलत जिन देखैं ॥
जोगनींद ह्वैकै तिहि भोये। दुगधउदधि नारायन सोये ॥
उहि ब्रह्मा भयभीत उबारे। प्रगट माहिँ मधुकैटभ मारे ॥
दलजुत महिषासुर संघारे। देवन के सब काज सँवारे ॥
धूमनैन उद्धरनि भवानी। चंडमुंड खंडन जग जानी ॥
रक्तबीज खप्पर भर खाये। रन में सुंभ निसुंभ ढहाये ॥

१—माड़ि = स्थापन करके अर्थ में आता है।
२—हीसा यह अर्बी शब्द हिस्सा का अपभ्रष्ट है = भाग।
३—दुचताई—दुचिताई होना चाहिए = चिंता, मतिभ्रम।

दोहा ।

वहै योगनिद्रा भई, नंदगोप घर जाइ ।
होनी कहिकै कंस सो, बसी विंध्य पर आइ ॥ ११ ॥

छन्द ।

विंध्यवासिनी सुनियत नामै । देत सकल मन वांछित कामै ॥
ताकै सरन जाइ व्रत लीजै । मन वंछित फल पूरन कीजै ॥
एहि विचार पंचम उर जान्यौ । मन क्रम वचन भगतिरस सान्यौ ॥
विमल गंगजल मंजन कीन्हो । दरस विंध्यवासिनि कौ लीन्हो ॥
तीनौं ताप देह तैं छूटे । परम भक्तिरस के सुख लूटे ॥
हरपित गात रोम उठि आये । वंछित फल मन तन जन धाये ॥
छलकि[1] नीर नैननि भरि आये । दुरित दुःख तिन संग बहाये ॥
करुनारस छाई जगमाई । भक्ति हेत उर अंतर आई ॥

दोहा ।

मृदु मूरति जगमाइ की, रही ध्यान ठहराइ ।
एक पाइ पंचम खड़े, भूख प्यास विसराई ॥ १२ ॥

छन्द ।

भूख प्यास पंचम कौ भूली । त्रिकुटी लगी समाधि अतूली ॥
सात अ्रोस इहि रीति वितीते । पंचम इन्द्रिन के गुन जीते ॥
सुनी गगन मंडल धुनि[2] ऐसी । लहिहो भूमि आपनी वैसी ॥
सुनि पंचम नृप उत्तर दीनौ । भुवहित हौं न परिश्रम कीन्हो ॥
उलटि गगन धुनि गगन समानी । कछु प्रसन्नता पंचम मानी ॥
बहुर सात वासर त्यौं बीते । लागे होन मनोरथ रीते[3] ॥
तब पंचम नृप करवर[4] काढ्यौ । निज सिर देत भगतिरस बाढ्यौ ॥
काटन कंठ लग्यै हटि ज्यौंही । उठि कर गह्यौ भवानी त्यौंही ॥

१—छलकि = उमड़ करि । २—धुनि = ध्वनि ।

३—रीते = शून्य, खाली । ४—करवर = करवाल, खड्ग, कृपाण, तलवार ।

दोहा।

त्योंही करुनारस भरी, गहे भवानी हाथ।
जै जै करि वरषे सुमन, सुरनि सहित सुरनाथ ॥ १३ ॥

छन्द।

जै जै धुनि नभ मंडल मंडी। कर करवार छुड़ावति चंडी ॥
जब करवर झुक झोरि[1] छुड़ायौ। कछुक घाउ पंचम सिर आयौ ॥
तातें रुधिर बुंद इक छूट्यौ। मनहुँ गगन तें तारा टूट्यौ ॥
छिति पर परयौ छलिक छवि जाग्यौ। जननि हियौ करुणारस पाग्यौ ॥
सीस दुलाइ बुंद वह देख्यौ। साहस अतुल भक्त कौ लेख्यौ ॥
करुनारस जल थल सरसायौ। सिर ससिकला अमृत बरसायौ ॥
बरस्यौ अमृत बूँद पर ज्योंही। उपज्यो कुँवर तहाँ ते त्योंही ॥
उमग्यो हियौ कुमार निहारें। छुटी पयोधर ते पय धारें ॥

दोहा।

छुटी पयोधर धार तें, कुँवर कियौ पय पान।
विंध्यवासिनी उमगि उर, लगी देन बरदान ॥ १४ ॥

छन्द।

लगी, देन बरदान भवानी। फुरैं[2] समर में सदा कृपानी ॥
बढ़ै बंस जग माह अन्यारौ। छत्र धर्मधुर कौ रखवारौ ॥
तुव कुल राज अखंडित रैहै। जो सताइहै सो मिटि जैहै ॥
दरपुस्तनि[3] है नृप भारी। दान कृपान मरद[4] मनधारी ॥
प्रथमहि राज आपनौ पावौ। पाछुंच भोगमढ़ार कहावौ ॥
यह कहि हाथ माथ पर राखे। पुहमी प्रगट बुंदेला भाखे ॥
पाइन परि पंचम बर लीन्हौ। मन बंछित जननी फल दीन्हौ ॥

१—झुक झोरि = झकझोरि, झटका देकर। २—फुरे = फलीभूत हो।
३—दरपुस्तनि = शाखान्तरों में, पीढ़ी पीढ़ी।
४—मर्द = [illegible]

प्रगट्यौ बुंदेला बरदाई। भयौ समर कौ उमडि सहाई॥
अतुल जुद्ध बंधुनि सो बीत्यौ। पंचम राज आपनो जीत्यौ॥
पंचम यदपि पुत्र बहु पाये। पै कुलतिलक बुंदेला गाये॥

इति श्री लाल कवि विरचिते छत्रप्रकाशे
बुंदेलाजन्मवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

दूसरा अध्याय

दोहा।

बरदाइक बुंदेल जब, भयो प्रगट रनधीर।
गहिरवार पचम असी, काशीश्वर नृप बीर ॥ १ ॥

छन्द।

वीर विंध्य की देवी पूजी। किहि न बीर की कीरति कूजी ॥
बीर जीत पूरब दिसि लीन्हों। बीर दौर पच्छिम कौ कीन्हौ ॥
सत्तर खान वीर सौ हारे। अठ उमराउ बहत्तर मारे ॥
बीर करे अपने मन भाये। सबल सत्रुदल सेन खपाये ॥
बीर समर भारी[1] करवाले। जीती कारौ पीरी ढाले ॥
वीर कठिन कालिंजर[2] लीन्हौ। बीर काल्पी[3] थानौ दीन्हौ ॥

१—भारी = चलाई, प्रहार किया।

२—कालिंजर—बुंदेलखंड के बाँदा नामक प्रान्त के समीप यह स्थान है। कालिंजर प्राचीन काल से एक अति प्रसिद्ध तीर्थस्थान गिना जाता है, इसकी गणना नव ऊखलों में है। यहां का दुर्ग इतिहास में परम प्रसिद्ध रहा है और यहीं चंदेल वंश के मूलपुरुष महाराज चन्द्रब्रह्म की पूज्या माता हेमवतीजी ने काशी से आ कर निवास किया था।

३—काल्पी—यह नगर बुंदेलखंड का द्वार करके प्रसिद्ध है और यमुना के तट पर बसा है। यह कहा जाता है कि वेदव्यास भगवान् कृष्णद्वैपायन की माता सत्यवती यहीं रहती थीं और यहीं भगवान् वेदव्यास का जन्म हुआ था। भारतीय इतिहास में यह नगर भी कालिंजर के समान प्रसिद्ध रहा है और वर्तमान काल में भी बुंदेलखंड की प्रसिद्ध मंडियों में से है। पद्मावति काव्य के रचयिता मलिक-मुहम्मद जायसी के विद्यागुरु शेख बुढ़न यहीं के निवासी थे और उनकी समाधि अद्यापि यहाँ बनी है। कविवर कमलापति मिश्र यहीं के निवासी थे उनके वंशज मालवीय मिश्र अद्यापि यहाँ हैं। राजकवि पद्माकर जी भी समय समय पर यहीं रहा करते थे। सम्राट् अकबर के परमप्रिय चतुर मंत्री महाराज बीरबलजी भी यहीं जन्मे थे। इनके राजप्रासादों के भग्नावशेष अब तक रंगमहल आदि नामों से यहां पुकारे जाते हैं परन्तु अब वे सब प्रासाद नितान्त ध्वंस होकर खँडहर रूप में हमें दृष्टिगोचर होते हैं।

सोष्यों वीर सत्रु कैं पानी। करी महौनी[1] में रजधानी॥
ऐसो वीर बुंदेला गायो। परभुव लोहाधार कहायो॥

दोहा।

वीर बुंदेला के भये, करन भूप बलवंत।
दान जूझ को करन सो, भुवनदलन दलवंत॥ २॥

छन्द।

तिनके अर्जुनपाल बखानै। सहनपाल तिनके सुत जानै॥
बुधि वल गढ़ कुठार[2] तिन लीनो। अमल[3] जतहरा[4] में पुनि कीनो॥
तिन सुत सहज इन्द्र से पाये। सहजइन्द्र जग मांह कहाये॥
तिन के भये पुत्र मन भाये। नौनिकदेव देव से गाये॥
पृथु सम पृथीराज तिन जाये। तिनके रामसिंह छवि छाये॥

१—महौनी—इसका शुद्ध नाम मुहांनी है। जालौन प्रान्त के कोंच परगने में यह स्थान मऊ मुहांनी के नाम से पुकारा जाता है और बुंदेल वंश की आदि राजधानी है। जनख्याति में अद्यापि यह स्थान "वड़ीगढ़ी" करके प्रसिद्ध है और अब कुटिल काल के दंड से प्रहारित हो यह प्राचीन राजधानी एक साधारण ग्राम के रूप में वर्त्तमान है।

२—गढ़कुठार—वास्तव में गढ़कुंडार है। यह स्थान ओरछे अथवा ओड़छे के समीप है। बुंदेलों के अधिकार में आने से प्रथम इसमें खंगारों का राज्य था। खंगार बुंदेलखंड में बहुतायत से रहते हैं और पतित जातियों में इनकी गणना है। यह किसी काल में बड़ी प्रबल जाति के लोग गिने जाते थे और बड़े उद्भट वीर होते थे। इनकी आदि राजधानी गढ़कुंडार में थी। वर्त्तमानकाल में ये बहुधा चौकीदारी, साईसी व किसानी का काम करते हैं और उपद्रवी भी समझे जाते हैं।

३—अमल = अधिकार।

४—जतहरा—यह स्थान टीकमगढ़ (ओड़छा) राज्यान्तरगत जी० आई० पी० रेलवे के मऊ रानीपुर स्टेशन के निकट है और ऐतिहासिक स्थान है। यहां असी बूटी बहुत पैदा होती है।

तिनके रामचन्द्र सुत ऐसे । जनक जजाति[1] प्रियव्रत जैसे ॥
ताको पुत्र जुधरस भीनो[2] । भयो मेदिनीमल्ल प्रवीनो ॥
तिनके अर्जुनदेव गरूरे । मल्लखान तिन के सुत सूरे ॥

दोहा ।

मल्लखान कौ नंद भो, रुद्रप्रताप अतूल ।
नगर ओड़छौ जिन रच्यो, खोद खलनि कौ मूल ॥ ३ ॥

छंद ।

पुत्र प्रतापरुद्र उपजाये । प्रथम भारतीचन्द कहाये ॥
दूजे मधुकरसाहि बखाने । उदयाजीत जगत जग जाने ॥
कीरतिसाहि कीर्त्ति जग छाई । लीन्है भूपतिसाहि भलाई ॥
अमनदास उदित जसु लीन्हो । चदनदास चंद्र सम कीन्हो ॥
दुर्गादास दुवन* दल भंजे । घनस्याम सज्जन मन रंजे ॥
प्रागदास परवीन प्रतापी । भैरोदास मजाही[3] थापी ॥
खांडेराय खुसाल सदाई । ये जगविदित बारहो भाई ॥
दान जूझ बल विक्रम पूरे । समर-धीर गंभीर गरूरे ॥

दोहा ।

रुद्रप्रताप नरिंद के, विदित बारहो नंद ।
भये ओड़छे नगर में, बड़े भारतीचंद ॥ ४ ॥

१—जजाति = ययाति राजा ।   २—भीनो = सना हुआ, भरा हुआ ।

*यह शब्द या तो दुष्टन या दुश्मन का अपभ्रंश है या लेख-दोष से "यवन" का दुवन हो गया है ।

३—मजाही—यह फ़ार्सी शब्द जमशाही का संक्षिप्त रूप है जो जम और शाही दो शब्दों के योग से बना है । जम शाहईरान का प्रबल सम्राट था जिसका नाम जमशीद प्रसिद्ध था । उसी का संक्षिप्त नाम जम है । शाही का अर्थ पद है अर्थात् जमशीद का सा पद अर्थात् प्रतिष्ठित पद या साम्राज्य ।

छन्द

जेठे पुत्र ओंछड़े राखे । करे काज मन के अभिलाषे ॥
थम्भे भुजन भूमि भर भारी । नृप कुठार[1] को करी तयारी ॥
खेलत चले शिकार सलोनी । मेटी मिटै कौन सो होनी ॥
जोजन एक शहर तें आये । नदी उतर वन सघन मझाये ॥
तहां बाघ इक गाइ पछारी । सो करुना[2] करि तुरत पुकारी ॥
कानन परत दीन वह बानी । पहुंच्यो नृप कर कढ़ी कृपानी ॥
सिर धरि छत्र धर्म्म को बानो[3] । हांक्यो[4] बाघ उठ्यो विरझानो[5] ॥
गरजत दुवो[6] परस्पर जूटे । संगहि प्रान दुहुन के छूटे ॥

दोहा ।

रुद्रप्रताप नरिंद तनु, तज्यो गाइ के काज ।
परम उच्च आसन दियो, सुरनि सहित सुरराज ॥ ५ ॥

छन्द ।

सुरन सहित सुरराज सिहानै । पुन्य प्रतापरुद्र अधिकानै ॥
करि अभिषेकु ओड़छे छाये । भूप भारतीचंद्र कहाये ॥
पुन्य पाल जग जसु बगरायो[7] । इक हरि ही को सीस नवायो ॥
तेइस बरस राज नृप कीनो । धरनि छांड़ि सुरपुर सुख लीनो ॥
उपज्यो नहीं पुत्र मन भायो । मधुकरसाहि राज तब पायो ॥
उदयाजीत आदि दै भाई । सबै भूप को भये सहाई ॥
प्रजा पाल पुर पुन्य बढ़ायें । दान जूझ जिनके गुन गायें ॥
अरतिस बरस राज नृप कीन्हों । निस दिन रह्यो भगतिरस भीनो ॥

दोहा ।

जाके उदयाजीत से, भाई सदा सहाइ ।
जस प्रताप ता नृपति को, कहो कौन अधिकाइ ॥ ६ ॥

१—कुठार = गढ़कुंडार । २—करुणा = आर्तनाद । ३—बानो = भेष ।
४—हांक्यो = ललकारा । ५—विरझानो = क्रोधित होकर । ६—दुवो = दोनो ।
७—बगरायो = फैलाया ।

छन्द ।

उदयाजीत उदित नर देवा । जिन उदयाचल कियो महेवा[1] ॥

१—महेवा = यह स्थान बुंदेलखंड के छत्रपुर राज्यान्तरगत है और नौगाव छावनी से चार मील पर पूर्व की ओर मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके चारों ओर कोट बँधा है। बुंदेलवंश की पूर्वीय शाखा की यही आदि राजधानी । इसके कोट के भीतर सीताफल (शरीफा) के वृक्षों का अगम्य वन है और धुबेलाताल के उत्तर तट पर बुंदेलकुल केशरी प्रातस्मरणीय महाराज छत्रसाल के राज्यप्रासाद बने हुए हैं। चिरकालीन होने से ये राजमंदिर अति जीर्ण हो गये थे परंतु छत्रपुराधीश श्रीमान् परम सुयोग्य महाराज विश्वनाथ-सिंह जू देव महोदय न उनका जीर्णोद्धार करा दिया है। इस राजप्रासाद की अटारी में प्रातःकाल के समय धुबेलाताल का दृश्य अत्यंत मनोहर होता है। सीतल समीर का संचार, पक्षियों का कलरव, निर्मल जल पर बालार्क का प्रकाश, कमलवन का विकाश चित्त पर एक ऐसा प्रभाव डालता है जो वर्णन नहीं हो सकता, केवल देखने ही पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से अनुपम राज्यप्रासादों के ध्वंस इसी कोट के भीतर पड़े हैं। धुबेलाताल के पश्चिम तट पर महाराज छत्रसाल की परमप्रिय महारानी कमलापति का समाधि मंदिर है जिसका गोल शिखर सोने से निर्मित दिनभर चमचमाता रहता है। यह समाधिमंदिर अपने ढंग का अनूठा ही मंदिर है। इसी तड़ाग के पूर्व तट पर महाराज छत्रसाल जी का समाधि मंदिर है जिसका कुछ भाग अपूर्ण रह गया है। उसके निकट ही एक और छोटा सा स्थान है जहां पर महाराज छत्रसाल की सेज है। महेवा अब उजाड़ दशा में है। यहां वृक्षों के नीचे ठौर ठौर पर बारहवीं शताब्दी की बहुत सी जैनमूर्तियों के खंडों के ढेर हैं और कहीं कहीं बौद्ध मूर्तियों के भी खंड मिलते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि चंदेलवंशीय महाराजों के समय में भी यह स्थान कोई प्रतिष्ठित स्थान रहा है। यहां से एक मील उत्तर—पूर्व की ओर चल कर महाराज छत्रसालजी के कनिष्ठ-आत्मज, महाराज जगतराजजी का जिनके वंश में अद्यापि चरखारी आदि राज्य हैं, सुरीर्घ विस्तृत जगतसागर नामक तड़ाग है। यह तड़ाग वास्तव में पर्वतों की तलहटी की एक विस्तृत झील है। इसके तट पर भी बारहवीं शताब्दी की बहुत से जैनतीर्थं-करों की प्रतिमाएं जिनकी चरण चौकियों पर प्राचीन काल के लेख हैं रक्खी हैं और एक विशालगढ़ी के भग्नावशेष हैं। यहीं पर "बुंदेला बाबा की बैठक" नाम का एक विहार सा पड़ा है जो हमें किसी बौद्ध विहार का अवशेष जान पड़ता है। इसी तड़ाग से वर्तमान काल में एक नहर निकाली गई है जो एक बड़े भूमि भाग को सींचती है।

जुद्ध मध्य उद्धत अरि मारे। दे दे दान दरिद्र विदारे॥
ता सुत प्रेमचन्द मरदानौ। पूरन चन्दा के सम मानौ॥
जहां समर मारू सुर बाजै। तहां अरुन आनन छवि छाजै॥
कैयक[1] अरिदल सिंधु विलोड़ै[2]। घाइ घनै घट ही में ओड़ै॥
लीलतु फिरै[3] लोह की लपटैं। अगवै[4] कौन सिंह की झपटैं॥
मुगल पठान जुद्ध में जीते। भरे कालिका खप्पर रीते[5]॥
साहिसेन[6] झकझोर हलायो। साहिझार को विरद बुलायो॥

दोहा।

साहिझार विरदैत मनि, प्रेमचन्द के नन्द।
पुहमी में परगट भये, तीनौ आनँदकन्द ॥७॥

छन्द।

प्रेमचन्द के नन्द बखानै। कुंवरसेन जग जाहिर जानै॥
जिन सिमिरहा[6] अलंकृत कीनौ। करि करि दान जूझ जसु लीन्हो॥
दूजे मानसाहि मरदानै[7]। दौरनि दपटि दुवन[8] जिन भानै॥
दान कृपान बुद्धि बल चांडे। बैठि साहिपुर[9] जिन जस मांडे॥
और भागवनराइ रँगीले। सत्रुन साल समर सरसीले॥
कियो महेवा जिन रजधानी। कीरति विदित जगत में जानी॥

१—कैयक = कितने ही। २—विलोड़ै = मथे। ३—लीलत फिरैं = खाते फिरते हैं। "लीलत फिरैं लोह की लपटैं" से अभिप्राय है कि वह समरभूमि देख करि उत्साहित होते हैं और शस्त्रप्रहार को सम्हालते हैं। ४ अगवै—आगे बढ़कर लेवे, अभिप्राय सम्हालने से है। ५—रीते = खाली। ६—साहिसेन झकझोर हलायो। साहिझार को विरद बुलायो।—से अभिप्राय है कि उन्होंने बादशाह की सेना को झकझोर डाला और उसे रणभूमि से विचलित कर दिया जिसके कारण उन्हें यह विशद यश प्राप्त हुआ कि वह "साहिझार" के उपनाम से पुकारे जाने लगे।

६—सिमिरहा—स्थान विशेष। ७—मरदाने = वीर। ८—दुवन—दुश्मन का रूपान्तर है। ९—साहिपुर—स्थान विशेष।

पै तीनौ भाई छबि छाजै। ब्रह्मा विष्णु रुद्र से राजै ॥
तीनौ अगिन तेज उर आनौ। तीनौ नैन रुद्र के जानौ ॥

दोहा।

कुलमंडन परसिद्ध अति, भयो भागवतराइ।
ताके पूरन पुन्य में, लगे चारि फल आइ ॥ ८ ॥

छन्द।

ताके पुन्य चारि फल लागे। सरगराइ अरु चन्द सभागे ॥
सुभट सुजानराइ सुखदाई। सब कौं चम्पतिराइ सहाई ॥
चारिउ भैया उदभट जानौ। चारिउ भुजा विष्णु की मानौ ॥
चारिउ चरन पुन्य छबि छायौ। चारिउ फलन देन जनु आयौ ॥
हिंदवान सुरगज उर आनौं। ताके चारयो दंत बखानौं ॥
चारौ वेद धर्म जिन राखी। चारयो समुद जीति अभिलाषी ॥
अन्तःकरन चारि हुलसाये। चारिउ चक्र सुजस बगराये ॥
हरि के आयुध चारि गनाये। ते जनु छिति रक्षन कौ आये ॥

दोहा।

जदपि आयुध विष्णु के, चारयौ छाव उद्दाम।
पै दानव दल दलन कौं, गदा चक्र सौं काम ॥ ९ ॥

छन्द।

जदपि गदा की बड़ी बड़ाई। पै कछु और चक्र की धाई[1] ॥
गदा समान सुजान बखानौ। चम्पतिराइ चक्र उर आनौ ॥
गनै कौन चम्पति की जीतैं। गनपति गनै तऊ जुग बीतैं ॥
साहिजहाँ उमड्यौ घन घोरा। चम्पति झंझापौन[2] झकोरा[3] ॥
साहि कटकु झकझोर झुलायौ। गिर्‍यौ[4] बुंदेलखंड उगिलायौ[5] ॥

१—धाई = ढंग, बारी, ज़ोर, शक्ति। २—झंझापौन = बवंडर।
३—झकोरा = झोंका खाया हुआ, निगला हुआ। ४—गिर्‍यौ = निगला हुआ।
५—उगिलायो—आतंक दिखा कर छीन लिया, छुड़ा लिया, फेर लिया।

चम्पति करौं साह सों पेड़ैं। पैठि न सक्यो मुगल दल मेड़ैं[1] ॥
सूवा जिते साहि के चांडे[2]। चम्पतिराइ घेरि सव डांडे ॥
वुधि वल चम्पति भयो सहाई। आलमगीर[3] दिली[4] तव पाई ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे वुंदेलवंशवर्णनं नाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

१—मेड़ैं = मेड़ पर, निकट। २—चांडे = वलवान।
३—आलमगीर—औरंगजेव। ४—दिली = दिहली।

तीसरा अध्याय

दोहा ।

चंपतिराइ नरिन्द के, प्रगटे पांच कुमार ।
मंडे कुल बरम्हंड[1] में, जिनके जस विस्तार ॥ १ ॥

छंद ।

पांच पुत्र चंपति के जानौ । प्रथम सारवाहन उर आनौ ॥
अंगदराइ रतन मन मानै । छत्रसाल गोपाल बखानै ॥
तिन में छत्रसाल छवि लीनो । निज बल भूमि भायतो कीनो ॥
तो गुन छत्रसाल के गैये । कैयक सहस जीभ जो पैये ॥
रतन अंगद अंगद गुन भारे । कीने जग में सुजस उज्यारे ॥
जाकी तेग अरस[2] में झूले । बाजतु साद हनु सी फूलै
लीनो कैयक विकट लराई । अरि की चमू अनेक हराई ॥
दुवन जीत दच्छिन के लीने । दिल्लीपति के कारज कीने ॥

दोहा ।

कीने काज दिलीस के, लीने विजै अनेक ।
अंगद चंपतिराइ के, धरी धर्म की टेक ॥ २ ॥

छंद ।

रतनसाहि निरमल गुन पूरे । परम समर्थ समर अति सूरे ॥
आखेटक के जिते ठिकाने । जल थल अन्तरिक्ष के जाने ॥

---

१ बरम्हंड से ब्रह्मांड का अभिप्राय है ।

२ अरस—फ़ारसी अर्श = आकाश ।

प्रगट महेवा में रन कीनों। अरि की फौज फारि जनु लीनों॥
अंगद रन ता दिन बढ़ि जाने। गुनन बड़े छत्रसाल बखाने॥
तिन तें लघु गोपाल गनाये। सीलवंत सन्तन मन भाये॥
जबहिं समर मंह सैल[1] उछाले। हिरदै देखि काल को हाले॥
सब भैयन की कथा बखानै। छत्रसाल तें जुदी न जानै॥
छत्रसाल की कथा सुहाई। समै समै तिन में सब आई॥

दोहा।

जदपि नदी पानिप भरी, अपने अपने ठांउ।
पै गंगा में मिलत हीं, गंगा ही को नांउ॥ ३॥

छंद।

गंगा त्रिपथगामिनी जैसी। छत्रसाल की कीरति तैसी॥
सब सुर नर नागन की बानी। गावत बिमल पवित्र बखानी॥
गावत पार न पावहिं कोई। अरब खरब आनन किन होई॥
जैसे उड़ै विहंग तहां लों। देखत गगन बिसाल जहां लों॥
गुन अनन्त मुख एक हमारे। चपल चित्त थोरी मति धारे॥
चाहत है एते पर तैसी। सतकवि मति की पदवी जैसी॥
अगम पंथ को बुधि बिलसाई। हैहै जग इहि भांति हँसाई॥
ज्यों बामन ऊंचे फल चाहै। चरननि उचकि उठावै बांहै॥

दोहा।

उचकें हू पहुंचे नहीं, बांहैं उच्च उठाइ।
लोग हँसी के रस भरे, देखत कौतुक आइ॥ ४॥

छंद।

जो कौतुक उर धरि जग लोई। सुनिहैं सरस कथा सब कोई॥
सरस कथा सुनि हिय हुलसावैं। सब को छत्रसाल गुन भावैं॥
सब जग में जेती मति जाकै। उर उछाह तेते गुन ताकै॥

---

१ सैल = सांग, लोहे की मोटी नोकदार सलाका श्रौर बीच में त्रिशूल।

अपनी मति माफिक सब गावै। गुन कौ पार न कोऊ पावै॥
जौ पै पार गुननि कौ नाहीं। ज्यों सहसानन त्यों हम आहीं॥
छत्रसाल के चरित उज्यारे। मेटत कुल कलिकाल अँध्यारे॥
कुलमण्डन छत्रसाल बुँदेला। आपु गुरू सिगरो जग चेला॥
छत्रसाल चंपति के ऐसे। बरने कश्यप के रवि जैसे॥

दोहा।

कश्यप कौ रवि गाइये, कै दशरथ को राम।
कै चंपति कौ चक्कवै[1], छत्रसाल छविधाम॥ ५॥

छंद।

छत्रसाल के गुनगन गाऊँ। पूर्व जन्म की कथा सुनाऊँ॥
एक समय हजरत[2] फरमायो। बाकी खान बली चढ़ि आयो॥
समर खेलु चंपति सौं माच्यो। बाजत मारु[3] रीझि हर नाच्यो॥
छुटि छुटि भिरे दुवौ दल बाँके। लोथनि[4] परे[5] गिरिन के नाके॥
चंपतिराइ कलह कौ काँधे। बैठे बिकट बिरद कौ बाँधे॥
जेठे पुत्र सुभट छवि छाये। नाम सारवाहन जे गाये॥
जान जुद्ध अमनैक[6] अढाये। सैलहार ता समय पठाये॥
बाँकी खाँ कौ कटक उमंड्यौ। बँधे घाट कौ मारग छंड्यौ॥

दोहा।

घाट छाँडि औघट[6] धरयो, कुँवर सुने जिहि ठौर।
बाकी खाँ के कटक की, भई तहा कौ दौर[7]॥ ६॥

छंद।

सैलहार पर फौजैं धाई। केयक सहस अचानक आई॥
कुँवर सारवाहन छबि छाये। खेलन सहज ताल मैं आये॥

१—चक्कवै = चक्रवर्ती। २—हजरत = शाहजहाँ से अभिप्राय है।
३—मारु = मारुबाजा, रणबाद्य। ३—लोथनि = लाशों से।
४—परे = भर गये। ५—अमनैक = हठी, हठीला।
६—औघट = दुर्गम मार्ग, कुघाट। ७—दौर = आक्रमण।

तबहीं बरष चौदही लागी। बुद्धि बाल खेलन में पागी ॥
खोलि हथ्यार तीर में राखे। जल के अतुल खेल अभिलाखे ॥
एकन कों धरि एक ढकेलै। सलिल उछाल परस्पर मेलै ॥
एकै भजै पहर के काछै[1]। एकै लगै लपक करि पाछै ॥
निकट जानि तन बूड़ि बचावै। छल सों जल में छुवन न पावै ॥
चरन चपेट चलावत चूकै। तिन को देत सबै मिलि कूकै ॥

दोहा।

या विध अति आनँद भरे, कुँवर करैं जलकेल।
वाकी खां उचका पर्यो, उदभट कटक सकेल ॥ ७ ॥

छंद।

फौज अचानक निकट हँकारी। खलभल आइ खेल में पारी ॥
कुँवर कढ़े जल तें सर भीने[2]। आइ हथ्यार तीर में लीने ॥
हांके मुगल ताल की जोरी। भजे बिडरि बालक चहुँ ओरी ॥
कुँवर सारवाहन बल बाढ़े। तमकि तीर तरकस तें काढ़े ॥
काढ़े तीर बीर जब ऊख्यों। सर समूह सत्रुन पर छूट्यो ॥
बखतरपोस[3] हला[4] करि धाये। कुँवर अडोल हलै न हलाये ॥
अरुन रंग आनन छवि लीनो। तानि कमान कुण्डलित कीनो ॥
छूटे बान बज्र से बांके। फूटे सुभट निकट जे हांके ॥

दोहा।

झिली[5] फौज प्रतिभट गिरे, खाइ घाउ पर घाउ।
कुँवर दौरि परवत चढ्यौ, बढ्यौ जुद्ध को चाउ ॥ ८ ॥

१—काछे = काछनी, लंगोट, जांघिया।

२—भीने = भीगे हुए।

३—बखतरपोश—कवचधारी।

४—हला = हल्ला, शोर।

५—झिली = आक्रमण किया।

छंद।

समिटि फौज आई रन भूमे। घाइल घने परे जहँ धूमे॥
मुगल पठान मान विन देखे। विक्रम अतुल कुँवर के लेखे॥
याकी खां देख्यो दल भाग्यो। प्रगट कुँवर चंपति कौ जान्यो॥
बोल्यो तमकि कटकु[1] सब धावै। पकरौ कुँवर जान नहिं पावै॥
बखतरिया[2] ढाले दै आगे। हय तजि पिले[3] वीररस पागे॥
प्रतिभट पिले निकट जब आये। कुँवर अडोल बान बरसाये॥
इक इक बान दुद्वे भट फूटे। झुकि झुकि तऊ चहूँ दिस जूटे॥
कुँवर एक सहसन धरि धाये। ज्यों बैरिन अभिमन्यु दबाये॥

दोहा।

रुक्यो कुँवर अभिमन्यु ज्यों, महारथिन के बीच।
सार[4] झारि रिपु रुधिर की, बिरचि मचाई कीच॥ ९॥

छन्द।

माची कीच सार[4] जब बाज्यो। कुँवर अरुन आनन छवि छाज्यो॥
खग्ग झारि एकन कौ काटै। एकन हरषि हांक दै डाटै[5]॥
धाइ धाइ न अघाइ[6] हठीलो। उमग्यो भिरतु समर सरसीलो॥
कौतुक लखत भान रथ रोपे। बिडरयौ[7] कटकु कुँवर के कोपे॥
बिडरतु कटकु बीर जे बांके। मार हथ्यार हरषि हठि हांके॥
कुँवर मार[8] में सनमुख पैठ्यो। सूरज भेदि बिमाननि बैठ्यो॥

१—कटकु = कटक। २—बखतरिया = कवचधारी।

३—पिले = घुस पड़े, टूट पड़े, घसे।

४—सार = यह शब्द सार से बना है जिसके अर्थ तत्त्व के हैं। यहां लोहे के सार, फौलाद से जिससे शस्त्र बनते हैं अभिप्राय है और शस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

५—डाटै = ललकारै। ६—अघाइ = तृप्त होवे।

७—बिडरयो = भागा। ८—मार = युद्ध।

तेगन लगि तन तनक न बांच्यो। रन में रुद्र सीस लै नाच्यौ ॥
सुरन पुहुप बरषा बरषाई। जैमाला हूरन[1] पहिराई ॥

दोहा।

सजी आरती सुरवधुनि, उमग्यो अमर समाजु।
कुँवर सारवाहन लियौ, वीरलोक को राजु ॥ १० ॥

छन्द।

वीरलोक आनँद अति छाये। समाचार चंपति पैँ आये ॥
सुन्यौ कुँवर रन सज्या सोयौ। सोक बढ़े माता अति रोयौ ॥
तब माता कौ सपनौं दीनौ। समाधान नीकी विधि कीनौ ॥
मोहि वैर म्लेच्छ सौं लीवे। औरौ काज अपूरब कीवे ॥
तातैँ फिरि अवतारहिँ लैहौं। ह्वै फिरि प्रगट तुम्हें सुख दैहौं ॥
और माइ की कूख नवीनी। सो मैं आइ अलंकृत कीनी ॥
यह सुनि कै माता सुख पायौ। सपनौ अपनो प्रगट सुनायौ ॥
भई प्रतीत कछुक दिन बीते। सांचे भये सुपन चित चीते[2] ॥

दोहा।

चित चीते सांचे भये, सुपन माइ के चारु।
प्रगट्यौ चंपतिराई के, छत्रसाल अवतारु ॥ ११ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशाल नृपतेः
पूर्वजन्मकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

१—हूर = अप्सरा। २—चीते = चेते हुए, अभीष्ट।

चौथा अध्याय ।

छन्द ।

छत्रसाल जनम्यौ जब भाई। धुनि गंभीर रुदन मैं पाई॥
घूँघरवारि धनी लटूरी[1]। देती आनन कौ छवि पूरी॥
मनौ भ्रमर की पाँति सुहाई। अमृत पियन उडपति पैं आई॥
ऊँच्यो भाल विशाल विराजै। कनक पट्ट कैसी छवि छाजै॥
लसतु, अष्टमीचंद किधौं है। बख्त[2] भूप कौ तख्त मनौ है॥
नैन, विसाल असित सित राते। कमलदलन पर अलि जनु माते॥
भुजा विसाल जानु लौं आये। भुजभर मानहुँ लेत उठाये॥
उन्नत नखनि लसत अरुनाई। वक्ष कपाटनि की छवि छाई॥

दोहा ।

चक्रवनि[3] के चिह्न सब, अंगन मगन राखि।
छत्र धर्म जब औतर्‌यो, सामुद्रिक[4] दै साखि[5]॥ १॥

छन्द ।

जनम्यौ पुत्र उठी यह बानी। धन्य घरी सबही यह मानी॥
दुंदुभि बजे लोक सुखदानी। आठौ दिसा प्रसन्न दिखानी॥

१—लटूरी = लटें, अलकें।
२—बख्त = फ़ारसी शब्द बख़्त = भाग्य।
३—चक्रवतिन = चक्रवर्तियों।
४—सामुद्रिक = वह विद्या है जिसके द्वारा शरीर पर के बाह्य चिह्नों से किसी पुरुष का भविष्य जाना जाता है।
५—साखि = साक्षी।

जातकर्म कीन्हें सुख मूले। अमर पितर नर उर अति फूले॥
उमग भरे नर नारी गावैं। पिता तुरग नग कोष लुटावैं॥
सतकवि वदन नची वर बानी। भिक्षुक भौन लच्छमी रानी॥
किरति नची जगत मन भाई। विमल जौन्हसी[1] छवि छुटकाई॥
लिख्यो छठी में सत्य सचाई। दान जूझ बल बूझ बड़ाई॥
मन करतूति करम के ऊँचे। जिन सम तखततपी न पहूँचे॥

दोहा।

ईस नखत अनरूप अरु, अरथवंत परिनाम।
जनमपत्र तातैं लिख्यौ, है छत्रसाल यह नाम॥ २॥

छन्द।

प्रगट पासनी[2] में छवि छाई। भुवभर सहित कृपान उठाई॥
ता दिन कविन कवित्त बनाये। दिये दान तिनकों मन भाये॥
घुटुनुन चलत घूंघुरू बाजे। सिंजित सुनत हंस हिय लाजे॥
गहि पलका की पाटी डोले। किलिकि किलिकि दसननि दुति खोले॥
बिहँसत उठत भोर ही जागे। निरखत को न हिये अनुरागे॥
खेलत लेत खिलौना आछे। धावत किलिकि छांह के पाछे॥
रुचि सौं तकत तुरग जे नीके। बिहँस लेत मुजरा[3] सबही के॥
दिन दिन बढ़ै बढ़ाइ अनंदा। जैसे सुकलपक्ष को चंदा॥

दोहा।

खेलन बोलन चलन में, सब कों देत अनंद।
बालापन तैं बढ़ि चली, दिन दिन बुद्धि बुलंद[4]॥ ३॥

१—जौन्ह = चन्द्रमा। २—पासनी = अन्नप्राशन।
३—मुजरा = अभिवादन। ४—बुलंद—फार्सी शब्द बलंद = उच्च, उत्कट।

छन्द।

बढ़ी बुलंद बुद्धि कछु ऐसी। या जुग मांह नाहिनै जैसी॥
जबहीं बरष सातई लागी। अदभुत बुद्धि भगतिरस पागी॥
राजत पुर जगविदित महेवा। तहां होत रघुबर की सेवा॥
राजत रामचन्द्र रस भीने। सुन्दर धनुष बान को लीने॥
त्योंही लछमन रूप सुहाये। धनुषबान लीने छबि छाये॥
सीता सरस रूप तनु धारे। भूषन बसन सिँगार सिँगारे॥
बालमुकुंद तहा अति सोहै। घुटुनुन चलत चित्त को मोहै॥
माखन की लोंदा[1] कर माहीं। मुकुट सीस छबि कही न जाहीं॥

दोहा।

सिंहासन ऊपर सबै, सोहत अदभुत रूप।
भगति धरै दरसन करै, पंचम चंपति भूप॥ ४॥

छंद।

तहं उभओर आरती साजै। झालर[2] झांझ संख बर बाजै॥
बालक वृद्ध तरुन तंह आवैं। नर नारी सब दरसन पावैं॥
छत्रसाल दरसन को जाहीं। बाल सुभाइ धरै मन माहीं॥
अनिमिष[3] रूप अनूप निहारैं। चेतन जानि चित्त निरधारैं॥
इनिके संग खेलिये भाई। तौ यह बात भली बनिआई॥
अपनो धनुष देहु जी मांगि। बरिकु खेल कीजै इन आगि॥
जौलौं सब दरसन को आये। तौलौं बोलन नाहिं बुलाये॥
टरि जैहैं[4] जब सबै इहां तें। तब ये भली कहेंगे बातें॥

दोहा।

इत उन ये चितवत नहीं, मंद मंद मुसकात।
सीता सों चाहत कह्यौ, कछू रसीली बात॥ ५॥

१—लोंदा = गोला। २—झालर = घंटा, घरयार।
३—अनिमिष = इकटक, पलक झुकाये बिना। ४—टरि जैहैं = हट जावेंगे।

छंद ।

मैा अनिमिष दिन द्वैक निहारे । तब पंडा[1] वूझे करि न्यारे ॥
ऐ ठाकुर वोलत क्यों नाही । है धैां जीव नाहिँ इन मांहीँ ॥
तब पंडन ये वचन सुनाये । ये त्रिभुवनपति हैं छवि छाये ॥
बालक वुद्धि कुंवर तुम मांही । ये ठाकुर कहुं बोलत आंही ॥
यह सुनिकै अचिरज चित वाढ़े । भये आइ दरसन कैा ठाढ़े ॥
ये विचार चित मेँ ठहरानै । इनके व्योंत[2] सबै हम जानै ॥
नजर वचाइ सवनि की लैहैँ । तब ये सीता ओर चितैहैँ ॥
तातेँ अब हों पलक न लाऊं । ये चितवैँ तब हँसों हँसाऊँ ॥

दोहा ।

यह विचार छत्रसाल चित , रहैं चितै अनिमेष ।
आंखिन तेँ भरि भरि तहां , आंसू वगरि[3] अलेख ॥ ६ ॥

छंद ।

भरि भरि आंसू ढरि ढरि[4] आवैं । छत्रसाल नहिं पलक लगावै ॥
देखत दसा सबै मिलि ऐसी । यह यों भई कुंवर कों कैसी ॥
उमग्यो प्रेमसिंधु उर मांही । कौतुक सबै विलोकत आंही ॥
विहसत रामचंद्र मन मोहे । तकै[5] न सीता तन तिरछोहे ॥
तब मन मेँ यह वात विचारी । ऐ सकुचे मन में धनुधारी ॥
अब जैा बालगुविंदहिं पाऊं । जैा खेलैं तो इन्हैं खिलाऊं ॥
माखन खात इन्हैं लखि लैहैां । मैारो मांगि धाइ सो दैहैां ॥
जो ये नचन कैसहू आवैं । लटकत मुकट अतुल छवि छावैं ॥

दोहा ।

यह छवि वालगुविन्द की , हिये रही ठहराइ ।
माया के उपजे तहां , गये प्रपंच विलाइ ॥ ७ ॥

१—पंडा = पुजारी । २—व्योंत = ढंग, काट छांट ।
३—वगरि = फैलाकर । ४—ढरिढरि = लुढ़क लुढ़क कर । ५—तकना = देखना ।

छंद ।

सब प्रपंच माया के छूटे । बंधन बिदित त्रिगुन के टूटे ॥
आनँदसिंधु लहरि बढ़ि आई । प्रेम उमगि कछु कही न जाई ॥
ज्यों ज्यों उमगि प्रेम चित राच्यौ । त्यों त्यों बालगुबिंदा नाच्यौ ॥
डोला सीस मुकट छबि छावे । लटकि लटकि आसन पर आवे ॥
पगनर तार पगन पर पारे । छत्रसाल अनिमेष निहारे ॥
जे सिगरे दरसन कौं आये । तिन मन में अचिरज ठहराये ॥
नाचत बालगुबिंदे देषे । अनहोनी के लक्षन लेखे ॥
पंडा अति संभ्रम उर पागे । तुरतहिं तब पैंढावन[1] लागे ॥

दोहा ।

यदपि बालगुबिंद जू, राखे हैं पौढाइ ।
नाचे तदपि घरीक लौं, सपुट पगन बजाइ ॥ ८ ॥

छंद ।

संपुट बजे सुनै सब कोई । सबकी बुद्धि अचभै मोई ॥
छत्रसाल उर प्रीति बढ़ाई । इच्छा पूरी होन न पाई ॥
पंडा तुरन कहां तें आये । घरिकु गुबिंद न नाचन पाये ॥
ढिग बुलाइ अपने हीं लेतो । घर तें मांगि मिठाई देतो ॥
ये सुख पाइ मिठाई खाते । मेरे ढिग तें कहूं न जाते ॥
पढन आनि बिघन यह कीनों । घरियकु नाच न देखन दीनों ॥
इहि बिधि अतुल मनोरथ बाढे । निरखत रहे घरिक[2] लौं ठाढ़े ॥
प्रेम प्रतीति प्रीति उर पागे । नाचे छुटक भगत के आगे ॥

दोहा ।

चेतन तन नाचे हुते, ब्रजबनितन के संग ।
छत्रसाल के प्रेम तें, नचे अचेतन अंग ॥ ९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रसालबालचरित्र
बालगोविंदनृत्यबर्णनं नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

१—पौढ़ावन = सुलाने । २—घरिक = कुछ काल तक, अथवा एक घड़ी तक ।

पाँचवाँ अध्याय।

छंद।

एक जीभ हौं कहा गनाऊँ। कछू कथा संक्षेप सुनाऊँ॥
एक समै दिल्लीपति कोप्यौ। पग न[1] जुझार सिंह नै रोप्यौ॥
अरब खरब लौं हुते खजानै। सो न जानिये कहां बिलानै॥
साठि हजार सुभट दल फूट्यौ। कोऊ कहूं न मारिउ छूट्यो॥
साहिजहान देश सब लीनो। कियो बुँदेलखंड बल हीनो॥

दोहा।

हीनो[2] देखि बुँदेल बल, दीन प्रजन के काज।
चंपतराइ सुजान मिलि, कियो मंत्र तिहिँ राज॥ १॥

छंद।

कछू कालगति जानि न जाई। सब तैँ कठिन कालगति गाई॥
रीती[3] भरे भरी ढरकावै। जो मनु करै तो फेर भरावै॥
कीजै कहा नृपति नहिं बूझै। काल ख्याल काहू नहि सूझै॥
साठि हजार सुभट लै भागे। काहू के न जगाये जागे॥

१—अर्थात् रणभूमि में पग रोपने का जुझारसिंह ने साहस न किया और शाहजहाँ की सेवा स्वीकार करके बुंदेलखंड और बुंदेलवंश की स्वाधीनता का नाश कर दिया।

२—हीनो = निकृष्ट, दुर्बल, दीन। ३—रीती = शून्य, खाली।

फिरैं मुलक में मुगल गहेले। सिंहन की सु धरी[1] गज खेले॥
जाकौ वैरी करै बचाई। सो काहेकौ जनम्यौ माई॥
अब उठि के यह मंत्र विचारो। मुल्कु उजार लस्र संहारो॥
शान गनैना पौरुष हारे। सो जीते जो पहिले मारे॥

दोहा।

यहै मंत्र ठहराइ कै, उमड़े दोऊ वीर।
दोनों मुल्कु उजारि कै, ऐसे अति रनधीर॥ २॥

छंद।

लाये[2] मुलक उठाये थाने। सुनि सुनि साहि बहुत मुरझाने॥
नौसेरी सूबा पहिरायौ। पौठल गौर सहाइक आयौ॥
सुनि बाहस उमराइ उमडे। थाने छोड़ मोड़ठे मंडे॥
खिरभ्यौ[3] चंपतिराइ बुंदेला। फौजन पर कीन्हो बगमेला[4]॥
जबै कमान कुंडलित कीन्ही। कठिन मार तीरनि की दीन्ही॥
तीछन तीर वज्र से छूटे। बख्तरपोस पान से फूटे॥

१—यहां कवि का अभीष्ट यह है कि "वीर भूमि शिरोमणि बुंदेलखंड की वीरप्रसवनी भूमि में घृणित और अपावन मुगल आकर आनंद से विचरने लगे, हाय इस कायर जुझारसिंघ की कायरता से इस वीर भूमि की यह दशा होगई कि मृगराज के विहार कानन में उसके भक्ष गज, मृगराज के न होने से, आनन्दमय विचरने लगे।

२—लाये = जला दिये।

३ खिरभ्यौ = सम्मुख हुआ, उलझा। ४ बगमेला किया—अर्थात् भीषण रूप से आक्रमण किया। मेल देने के अर्थ छोड़ देने, डाल देने अथवा मिला देने के हैं और बगमेल से अभिप्राय यह है कि घोड़ों की बागों को नितान्त ढीला करके घोड़ों को सरपट छोड़ कर शाही सेना पर टूट पड़ा।

फौज फारि चंपति रन जीत्यो। अरि पर प्रलै काल सम बीत्यो॥
मोर गोर की फौज हराई। मुगल सँहारि करी मन भाई॥

दोहा।

मारयो टिल सहिबाजखां[1], दियो ओड़छो[2] धारि[3]।
फते फतेखां सों लई, बाकी खान सँहारि॥ ३॥

छन्द।

मारि लूट सब फौज हराई। सूबा दिल में दहसत खाई॥
चहूँ ओर तें सूबा घेरो। दिसनि अलात चक्र सो फेरो॥

---

१ सहिबाजखां, शुद्ध शब्द शहबाजखां है। यह शाहजहां की सेना का नायक था। इसने बाकीखां फतहखां बैराम आदि सेनानायकों के साथ बुंदेलखंड पर आक्रमण किया था।

२ ओड़छा, ओड़छा अथवा ओरछा, वर्तमान टीकमगढ़ राज्य की प्राचीन राजधानी है। यह स्थान झांसी से पूर्व छः मील के अंतर पर बेतवा तट पर बसा है। इसी ओरछाधीश वीरकेशरी महाराज वीरसिंहदेव ने प्रबल सम्राट अकबर का दर्प दमन करने को उसके प्रिय मंत्री अबुलफ़ज़ल का शिरोच्छेदन आंतरी की घाटी में किया था। कविकुल गुरु केशवदास मिश्र इसी ओरछे में जन्मे थे। ओरछा यद्यपि राजधानी न रहने से छविहीन हो रहा है तथापि नौचौकिया फलबाग, रघुनाथ जी के मंदिर, चतुर्भुजजी के मंदिर, ओरछे के दुर्गम दुर्ग, और अन्यान्य राज्य-प्रासादों के दृश्य से उसका ऐतिहासिक महत्व अद्यापि जीवित है।

३—धारि दियो = जला दिया।

जरी सिरोंज[1] भेलसा[2] भाग्यौ। धर[3] उज्जेन[4] थरथरा[5] लाग्या॥
द्दांतै धमकि[6] धमौनी[7] मारी। गोपाचल[8] में खलभल पारी॥
सकल मुलक नहिं जात गनाये। चामिल[9] तैं रेवा लौं लाये॥

१—सिरोंज मध्यभारत का एक नगर है।

२—भेलसा, यह नगर ग्वालियर राज्य का एक सूबा है और भारतवर्ष का एक अति प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। कहा जाता है कि कविवर भवभूति यहीं जन्मे थे। मुसलमानों ने इस नगर को ध्वंस कर दिया था। बौद्धकाल में यह नगर बड़ी उन्नति पर था, यहां पर अब भी महाराज अशोक के समय के बहुत से स्थानों के खंडहर पड़े हैं और प्रसिद्ध साँची के स्तूप भी इसी के समीप हैं। यहां प्राचीन-काल में एक अनूपम मंदिर भगवान भुवन-भास्कर का था और सोमनाथजी के मंदिर के समान श्रीसम्पन्न था। कहा जाता है कि दुराचारी शहाबुद्दीनगोरी ने उसे तोड़ा था। "भाल" सूर्य का नाम है और उसी भाल से यह भेलसा बना है। प्राचीन विदिशा भी यही नगर राजधानी था, इसी के निकट प्राचीन "बैसनगर" नामक नगर के खंडहर पड़े हैं।

३—धर = वर्तमान धार अथवा धारानगरी।

४—उज्जैन, यह नगर जगत प्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्य की राजधानी था। वर्तमान काल में महाराज ग्वालियर के मालवे नामक सूबे की राजधानी है। हमें इसके विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं क्योंकि जो लोग, महाराज विक्रमादित्य और कविकुलगौरव कालिदास के नाम से परिचित हैं वे उज्जैन से पूर्णतया परिचित हैं और जो इनके नामों और चरित्रों से परिचित नहीं हैं हमारी समझ में वे इसके पात्र ही नहीं हैं कि उन्हें उज्जैन (प्राचीन अवंती) से परिचय कराया जाय।

५—थरथरा लगना = कँपकँपी लगना, थर्राना। ६—धमकि = धावा करके। ७—धमौनी = शुद्ध नाम धामौनी है, यह नगर सागर के निकट मध्यभारत में है। ८—गोपाचल—ग्वालियर का प्राचीन नाम है। ९—चामिल = चम्बल नदी।

पजरे[१] सहर साहि के बाँके। धूम धूम में दिनकर ढाके॥
सब उमराइन चौथ चुकाई। ओड़ै[२] कौ चंपति की घाई[३]॥
लिखी खबर वाकिन[४] ठिकाई[५]। पातसाह कौ बांच सुनाई॥

दोहा।

चंपति के परताप तैं, पानिप गयौ ससाइ।
पौसेरी भरि रहि गयौ, नौसेरी उमराइ[६]॥ ४॥

छन्द।

सुनत साहि फिरि भेजी फौजैं। उमडी दरिया कैं सी मौजैं[७]॥
खानजहाँ सूवा चढ़ि आयौ। त्यौंही सैदमहम्मद[८] धायौ॥
वली बहादुरखान हँकायौ। अरु अवदुल्लहखाँ पग धायौ॥
और संग उमराइ घनेरे। आये उमडि काल के पेरे॥
डंका आइ देस में कीनो। मुगल पठान जुद्ध-रस भीनो॥

१—पजरे = निकट के, समीपस्थ। २—ओड़ना = सम्हालना।

३ घाई—धावा, प्रहार। ४—वाकिन = गुप्त समाचार देनेवाले, पर्चे-नवीस। यवन बादशाहों के समय में एक प्रकार के दूत प्रत्येक सूबेदार के साथ में तथा युद्ध के समय में सेना के साथ में गुप्त रूप में रहते थे। इन्हें अखबार नवीस कहते थे। राज्य दर्बार में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा होती थी। इन्हीं लोगों को हिन्दू राजसभाओं में "वाकिन" अर्थात् वाक्य-लेखक कहते थे।

५ ठिकठाई = ठीक ठीक। ६—"पौसेरी भर रहि गयो नौसेरी उमराव" अर्थात् वह (शाही सर्दार) प्रतिष्ठित नायक जिसका नाम नौसेरी उमराव था महा-राज चंपतराय के प्रताप से भयभीत होकर ऐसा सूख गया कि नौसेरी के ठौर पौसेरी भर रह गया अर्थात् अब वह अपने पूर्व रूप, बल पौरुष में इतना घट गया है कि नौ सेर के बदले पाव भर हो गया है। ७ मौजैं = तरंगें, लहरैं।

८—सैदमहम्मद = सैयद मुहम्मद।

छाइ छाइ रविमंडल लीन्हों। नैासेरीखां कौं बल दीन्हौं[1] ॥
बल कौं पाइ मुगल दल गाजे। पिले बजाइ जुद्ध के बाजे ॥
बड़ी फौज लखि चंपति फूले। श्रीपति सगुन भये अनुकूले ॥

दोहा।

सगुन भये अनुकूल सब, फूले चंपतिराइ।
अति अद्भुत विक्रम रच्यो, कासौं बरनी जाइ ॥ ५ ॥

छन्द।

कबहुँ प्रगटि जुद्ध में हाँकै। मुगलन मारि पुहुमि तल ढाँकै ॥
बानन बरषि गयदनि फेरे। तुरकनि तमकि तेग तर तैरे ॥
कबहुँ जुरै फौज सौं आछै। लेइ लगाइ चालु दै पाछै ॥
थाके ठौर ठौर रन मडे। हाहा[2] करे डाडु लै छंडे ॥
कबहुँ उमडि अचानक आवै। घन से उमड लोह बरषावै ॥
कबहुँ हाँकि हरौलनि[3] कूटै। कबहुँ चापि चदालनि लूटै ॥
कबहुँ देस दौरि कै लावै। रसद कहूँ की कढ़न न पावै ॥
चौकी कहे कहाँ है जैहौं। जित देखौं तित चंपति हैहौं ॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चौकी उठौ, दौकि दौकि उमराइ।
फाके लसकर में परे, थाके सबै उपाइ ॥ ६ ॥

छन्द।

अब उपाइ सूबनि के थाके। सुनि सुनि साहि सबनि कौ ताके ॥
अब कीजै कैसा मनसूबा। हैं हैरान सीगरे सूबा ॥
तब मंत्रिन मिलि मत्र बिचारयो। चंपति उर नहिँ ये सब हारयो ॥
जो अनेक जुद्धन मैं जीते। सो फल पावै जो चित चीतै ॥

१—बल दीन्हौ = सहायता पहुँचाई। २—हा हा करना—विनती करना, अर्थात् सब उँगलियों के अग्रभाग को मुख के सम्मुख ले जाकर हा हा शब्द कहना महान दीनता का सूचक है। ३—हरौल—फारसी हरावल = सेना का अग्रभाग।

तासौं भूल विरोध न कीजै। जौ कीजै तौ तन धन छीजै॥
चंपति के चित की हम जानैं। औरन बैठ न पावै थानैं॥
राज ओड़छे कौ सुनि लीजै। प्रबल पहारसिंह को दीजै॥

दोहा।

पायो राज पहार नृप, चली चाह सब ठाइ।
गई भूमि भुजदंड बल, फेरी चंपतिराइ॥ ७॥

छन्द।

गई भूमि चंपति फिरि फेरी। मेटी फिकिर दाहिनी डेरी॥
नगर ओड़छे बजी बधाई। भई देस के मन की भाई॥
मैड[1] बुंदेलखंड की राखी। रही मैड अपनो अभिलाषी॥
नृपति पहारसिंह सुख पायो। चंपतिराइ मिलन कौ आयो॥
तब नृप कलस पाँवड़े कीने। आदर करि आगेसर लीने॥
भुजा पसारि मिले छवि छाये। उमगि अंगननि[2] मंगल गाये॥
मुकताहलन अतुल भुज पूजे। चंपति के सबही जस कूजे॥
धन चंपति फिरि भूमि बहोरी। भुजन पातसाही झकझोरी॥

दोहा।

प्रलय पयोधि उमंड में, ज्यौं गोकुल जदुराइ।
त्यौं बूड़त बुंदेल-कुल, राख्यौ चंपति राइ॥ ८॥

छन्द।

राज पहारसिंह को राख्यौ। उन उर दोष धर्‌यौ गुन नाख्यौ[3]॥
सब जग चंपति के जस गावे। सुनि सुनि अनख[4] भूप उर आवे॥
बढ़ी ईरषा उर में ऐसी। कथा भीम दुरजोधन के सी॥
उर मे छई[5] कपट कुटिलाई। करन लगे अपनी मनभाई॥

१—मैड़ = प्रतिष्ठा, बात। २—अंगननि = स्त्रियों ने। ३—नाख्यौ = नाश्यो, मेट दिया। ४—अनख = डाह, ईर्षा। ५—छई = फैली।

नृप मन में यह मंत्र विचार्यो । इनि चंपति अरि कौ दल मार्यो ॥
इनकौ मन तबही ते बाढ्यो । त्यौंहीं सुजसु जगत मुख काढ्यो ॥
अब जौ लौं इनके जस फैले । तबलौं बदन हमारे मैले ॥
अब जौ कहूँ फिसाद उठावै । तौ हम पै दिल्लीस रुठावै ॥

दोहा ।

तातैं जौ चढ़ि मारियै, तौ अपजसु बिस्तारु ।
न्यौति गुपित[1] कछु[2] दीजियै, यहै मंत्र है सारु ॥ ९ ॥

छन्द ।

सार मंत्र ऐसो ठहरायो । पाप पहारसिंह उर आयो ॥
बिसर गई जो करी निकाई । उगल्यौ गरल दूध की धाईं[3] ॥
एक समै न्यौते सब भाई । आदर सों ज्यौंनार बनाई ॥
उमग भरे सब बन्धु बुलाये । चंपतिराइ सहित सब आये ॥
जथा उचित हित सौं बैठारे । परसन लगे बिसद पनवारे[4] ॥
तहाँ भूप जे कुल के माने । ते छिन में काहू नहिँ जाने ॥
पनवारो चंपति को आनौ । देखि सुवा सारो[5] किररानौ[6] ॥
लोचन मूँदि चकोर डेराने । जानि गये जे चतुर सयाने ॥

दोहा ।

जाननहारे जानिगो, भोजन के आरंभ ।
भिंम बुंदेला कौं भयौ, प्रगट भूप कौ दंभ ॥ १० ॥

छन्द ।

भिंम दंभ भूपति को जान्यो । अपनो प्रान त्याग उर आन्यो ॥
चंपति कौ पनवारो लीनौं । अपनो बदल चंपतिहि दीनौं ॥
भोजन करि डेरन कौं आये । गुपित मंत्र काहू न जनाये ॥

१—गुपित = गुप्तरूप से । २—कछु दीजिये = कोई विष खिला देना चाहिये । ३—धाईं = ठौर, बदले । ४—पनवारे = पत्तलें । ५—सारो = मैना । ६—किररानो = चिड़चिड़ाने लगा, खिरखिराने लगा ।

लगी भिंम कों अतुल दिनाई[1] । तुरत हि मीच समै विन आई ॥
भिंम लोक आनँद में पाया । बन्धु हेतु निज प्रान गँवायो ॥
गुपित हती नृप की कुटिलाई । प्रगट भिंम की मीच बनाई ॥
कोऊ करौ किती चतुराई । पाप रीत नहि छिपै छिपाई ॥
जो विधि रची होत है सोई । जस अपजसै लेहु किनि कोई ॥

दोहा ।

यह उपाइ निरफल भयो, नृप पहिराई[2] चोर ।
चटक चपट पट में चढ़ै, दये वीर पर वोर ॥ ११ ॥

छंद ।

नृपति पहार चोर पहिराये । चंपति के मारन कों धाये ॥
जवही रैन अँधेरी आई । चले करन तसकर मन भाई ॥
स्याम रंग कुलही[3] सिर दीन्हे । स्याम रंग कछनी कछ लीन्हे ॥
वाढ़ि धरै वगुदा[4] कटि बाँधे । स्याम कमान स्याम सर साँधे ॥
होत न आहट भो पग धारे । बिन घंटन ज्यौं गज मतवारे ॥
स्याम[5] रंग तन मांह समाने । चोकीदारन जात न जाने ॥
चोर पैठि महलनि मैं आये । तहां ब्योंत है बने बनाये ॥
ग्रोर भोन में दीपक दीन्हों । निज घर को चंपति घर कीन्हो[6] ॥

१—दिनाई = एक प्रकार का विष होता है, जो शेर अथवा तेंदू की मूँछ के बाल, विच्छू के डंक, सांप के मुँह में भर दिए गए चावल, अथवा मेढक से बनाया जाता है। उस विष को खिला देने से खानेहारा कभी तो अति शीघ्र परन्तु अधिकतर कुछ काल में घुल घुल कर मर जाता है। यह विष किसी ग्रोषध से अच्छा नहीं होता ग्रोर कुछ दिनों में अपना घातक गुण करता है, इस कारण इसे दिनाई कहते हैं।

२—पहिराई = पहरा देनेवाले ।   ३—कुलही = टोपी ।

४—वगुदा (वगुरदा)—एक प्रकार का शस्त्र है जो पेशक़ब्ज की भांति बना होता है।

५—"श्यामरंग तन मांह समाने" अर्थात् काले वस्त्रों में छिपे हुए ।

६—घर कीन्हों = बुझा दिया ।

दोहा।

धीर दीप परगास में, लख्यो छाँह ते चोर।
तानि कनपटी में हन्यौ, कह्यो थान उहि ठौर ॥ १२ ॥

छंद।

गिरयो चोर चंपति को मारयौ। धीरनि लियो उठाइ निहारयौ ॥
चले चोर सब लोग जगाये। सोरसार करि दूर भगाये ॥
सदा प्रबुद्ध बुद्ध है जाकी। तासौं कैसे चलै कजाकी[1] ॥
यह सुनिकै चंपति की माता। दानविधान ज्ञान गुन ज्ञाता ॥
निकट आपने पुत्र बुलाये। सुखद मंत्र के बचन सुनाये ॥
तुम कीन्हौ नृप को हित पैंडे। अब नृप परयौ तुम्हारे पैंडे[2] ॥
तातें अब यह मत्र बिचारो। दिल्लीपति मिलियो अखत्यारो ॥
मिलै दिलीस बहुत सुख पैहै। मनमान्यौ मनसब[3] कर दैहै ॥

दोहा।

ऐसे मत्र बिचारि कै, पठयो दिली उकील[4]।
सुनत साहि उमग्यो हियो, कब देखौं यह डील[5] ॥ १३ ॥

छंद।

सुनत साहि चंपति चित चाहे। देखन के उर लगे उमाहे ॥
पहुँच्यौ चंपतिराइ बुँदेला। मानौ साहि धन्य यह बेला ॥
दै मनसब कंधार पठाये। दारा की तावीन लगाये ॥
गढ़ कंधार[6] जाइ कै घेरयौ। मुलकनि हुकुम साहि कौ फेरयौ ॥
जब उमराइ घेरि गढ़ लागे। चंपतिराइ जुद्ध रस पागे ॥

१—कजाकी—शुद्ध कज़ाक़ी है = कपट, छल, चालाकी।
२—पैंड़े परना = पीछे पड़ना। ३—मनसब = पद, अधिकार।
४—उकील—इसका शुद्ध रूप वकील है = दूत।
५—डील = महानुभाव, प्रतिष्ठित पुरुष।
६—कंधार = शुद्ध शब्द कंदहार है।

गढ़ के निकट मोरचा[1] रोपे । सब उमराइन के जस लोपे ॥
ढकिल करी[2] सबतें अधिकाई । ओड़ी[3] गुरु गोलिन की घाई ॥
डारे हलनि हलाइ गढ़ोई[4] । अरि के हिय की हिम्मत खोई ॥

दोहा ।

दारा गढ़ खंधार की, पाई फतै अचूक ।
चंपति की हिम्मत लखे, उठी हिये में हूक ॥ १४ ॥

छंद ।

चंपति की हिम्मत उर आनै । रीझ ठौर दारा अनखानै[5] ॥
फतै पाई दिल्ली फिरि आये । मुजरा करि के साहि मिलाये ॥
सिंह पहार अनपु उर आनै । ठान प्रपंचनि के उर ठानै ॥
चारी करै आप चहुं फेरा । खोज[6] डारि चंपति के डेरा ॥
खोज पाइ जग इन्हैं लगावै । निरनै[7] देत अनुप उर आवै ॥
इहि विधि डोर भेद के डारै । चतुरन हूँ नहि परत निहारै ॥
कपट प्रपंच जु ह्वै करि आवै । झूठ ठौरि ते सांच बतावै ॥
लिखै चितेरयो[8] ज्यौं जल वीची । सम कागद सें ऊँची नीची ॥

दोहा ।

दुहू ओर अन्तर परयो, क्रम ही क्रम यह रीति ।
हिये अनपु[9] उनके बढ्यो, इनके थरी प्रतीति ॥ १५ ॥

१—मोरचा रोपना = सैन्य भाग को आक्रमण कराने के लिये टिकाना ।
२—ढकलि करी = प्रचंड रूप से धावा किया । ३—ओड़ी = सहन की ।
४—गढ़ोई = गढ़ के लोग । ५—अनखानै = क्रोधित हुए ।
६—खोज = चिह्न । ७—निरनै = समाधान ।
८—चितेरयो = चित्रकार । ९—अनपु = झुंझलाहट ।

छंद।

हुँ मोरें अन्तर जब जान्यौ। पिसुन[1] प्रवेस तवै उर आन्यो॥
भूप कह्यो दारा सौं ऐसे। सुनौ भाग चंपति कौ जैसे॥
तीन लाख की कौंच[2] सुहाई। दई साहि इनको मन भाई॥
हाल जमा नौ लाख गनाई। बिना तफावत अबलौं खाई॥
तातैं कौंच हमैं जौ दीजै। तौ नौ लाख रुपैया लीजै॥
यह सुनि कै दारा सुख पायो। पहिलौ अनपु हिये चढ़ि आयो॥
जहाँ न गुन की बूझ बड़ाई। चुगली सुनै चित्त दै साई॥
रीझ ठौर प्रभु खीझ जनावै। तहाँ कौन गुन गुनी चलावै॥

दोहा।

रीझ फूलि खडन करै, डारि खीझ के डौर।
ऐसो स्वामी सेइये, तातै दुःख न और॥ १६॥

छंद।

दारासाहि लोभ उर आन्यौ। सेवा को सिगरो फल मान्यौ॥
चंपति को यह बात सुनाई। तू जागीर तीगुनी पाई॥

१—पिसुन = चुगली चुगुलखोर।

२—कौंच = जालौन प्रान्तान्तर्गत दक्षिण भाग में एक नगर विशेष है और कौंच नामक तहसील का प्रधान नगर है। चँदेल वंश के इतिहास में प्रख्यात सिरसागढ़ नामक स्थान इसी तहसील के अंतर्गत पहूज नदी के तट पर है। जब महाराज पृथ्वीराज सिरसा गढ़ पर सेना संधान कर आए थे तब इसी कौंच नामक स्थान में उनकी सेना का डेरा पड़ा था। चौंड़ाताल तथा कुछ और बैठकें इत्यादि अब भी उस समय की स्मारक यहाँ देख पड़ती हैं। इसी के निकट पड़ा नामक पहाड़ी है। उसके निकट भी कुछ प्राचीन चिह्न पड़े हैं। इसी के "अकोढ़ी" नामक एक ग्राम के निकट रणस्तंभ रोपा गया था जहाँ पृथ्वीराज और चंदेलों का अंतिम युद्ध हुआ था। मुग़ल साम्राज्य में भी कौंच एक प्रसिद्ध सूबा था और यहीं पर तहसील के निकट मीरखाँ पिंडारी और अंग्रेज़ी सेना का एक विकट युद्ध हुआ था। यह नगर आज कल भी व्यापार की एक प्रसिद्ध मंडी है।

कौंच पहारसिंह मनभाई । देता हौं मेरे मन आई ॥
तीन हुकुम दारा जो वोले । चंपतिराइ वचन त्यों खोले ॥
कौंच जाइ चंडालनि दीजे । वृथा हमारो छोर न छीजे ॥
यह सुनि कै दारा अनखान्यो । अरुन रंग आनन में आन्यो ॥
चंपतिराइ समर उर टान्यो । दिग्गज से दोऊ ऐड़ान्यो[1] ॥
दिगपालन को दहसत वाढ़ी । मजलिस रही चित्र ज्यों काढ़ी ॥

दोहा ।

दिगपालन दहसत वढ़ी, कठिन देखि वह काल ।
तुरत आनि आड़ा[2] भयो, हाड़ा श्री छत्रशाल ॥ १७ ॥

छंद ।

हाड़ा चंपति के ढिग आयो । दारा को न भयो मन भायो ॥
दारा अन्दर को पग धारे । चंपति के इत वजे नगारे ॥
डंका प्रगट विसर[3] के वाजे । चंपतिराइ देश में गाजे ॥
छोड़ि पातसाहन की सेवा । कियो अलंकृत आइ महेवा ॥
पुत्र कलत्र मित्र सब भेटे । दिल के दुःख सबन के मेटे ॥
चहूँ चक्र फौजैं फरमाई । अरि की वदन जोति मैलाई ॥
धनिकनि गढ़ि धरि रहे लुकाई । सूवन सों हठि चौथ चुकाई ॥
दै हयवृन्द कविन्दन गाजे । निरमल सुजस जगत छवि छाजे ॥

दोहा ।

फैले चंपतिराइ के, जग में सुजस विलंद ।
उदै भये तिहुँ लोक जनु, कैयक कोटिन चन्द ॥ १८ ॥

छंद ।

तिहूँ लोक चंपति जसु जाग्यो । सुनि सुनि को न हिये अनुराग्यो ॥
नृपति पहार करी जे घातें । ते प्रगटी कहिवे की वातें ॥
जग में करो जे न कृतु माने । नीकी करी लटी[4] उर आने ॥

१—ऐड़ान्यो = ऐंठे । २—आड़ा होना = वीच वचाव करना ।
३—विसर = कूच । ४—लटी = खोटी, बुरी ।

तिनके थल ज बने बनाये। नृपति पहारसिंह तैं पाये ॥
सदा न जग में जीवै कोई। जस अपजस कहिवे कौं होई ॥
जग जबतें अपजस जस छावैं। क्रम तें अध ऊरधि गति पावैं ॥
खोदे कुआ पधारे खाले। महल उठावै ऊंचे घाले ॥
इहि विधि कर्मन की गति गाई। वेद पुरानन सुनी सुनाई ॥

दोहा।

जैसी मति उपजै हिये, तैसो मनु ठहराइ।
होनहार जैसो कछू, तसो मिलै सहाइ ॥ १९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाश वीरबधपहारसिंह
प्रपंचवर्णन नाम पञ्चमोऽध्याय ॥ ५ ॥

छठां अध्याय ।

छन्द ।

एक और अब सुनौ कहानी । होनहार गति जात न जानी ॥
साहिजहां दिल्लीपति गायौ । जाकौ हुकुम चहूँ दिस छायौ ॥
चारि पुत्र ताके मरदाने[1] । दारासाह साहि मनमाने[2] ॥
और मुरादसाह अरु सूजा[3] । औरँगसाह समान न दूजा ॥
बीतिस बरष साह रस भीने । भोग पातसाही के कीने ॥
जदै अवस्था उतरन लागी । पुत्र प्रीति मन मैं अनुरागी ॥
साहिजहां यह चित्त बिचारी । दारा कौं दीन्ही सिरदारी ॥
दारा अपनौ हुकुम चलायौ । सब भाइन कौं हियौ हलायौ ॥

दोहा ।

हुकुमनु के हिल्लोल कौ, भई और की और ।
उमडि साहजादिन किये, तखत लैन के डौर[4] ॥ २ ॥

छन्द ।

ब्यौंत बिमल बुद्धिन के डारे । तखत लैन के चित्त बिचारे ॥
साह मुराद हियौ हुलसायौ । गज सिक्का चलिबौ फरमायौ ॥
औरँगसाह चाहि सुनि लीनी । बिलसाई बर बुद्धि प्रबीनी ॥
इच्छा प्रगट तखत की छाँडी । प्रीति मुरादसाह सौं माँडी ॥
चित दै हित के लिखे लिखाये । अति प्रबीन उमराइ पठाये ॥
कह्यौ मुरादसाह सौं पैलौ । सरस बिचार मंत्र है ऐलौ ॥
बिन ही दिल्ली तखत लै बैसे[5] । आन[6] चलै गज सिक्का कैसे ॥
पेल[7] तखत पर बैठे जाई । दिल्ली पातसाह सो होई ॥

१—मरदानै = वीर । २—मनमानै = प्रिय था । ३—सूजा = शुद्ध नाम शुजाअ है । ४—डौर = डौल, ढंग । ५—बैसे = बैठे । ६—आन = [illegible] । ७—पेल = घुसकर, बरजोरी ।

दोहा ।

हमैं न इच्छा तखत की, यह जानौ सब कोइ ।
चलौ तुम्हैं लै देहिंगे, होनी होई सु होइ ॥ २ ॥

छन्द ।

औरँगसाह मंत्र तब कीनौ । साह मुराद हियैं धरि लीनौ ॥
हिद ठहराय यहै ठहरायौ । याही प्रीति कुरान उठायो ॥
दक्षिन तें उमडे दोउ भाई । ठिले दीह दल पहुमि हलाई ॥
पूरब नें सूबा दल साजे । प्रगट जुद्ध के धौंसा बाजे ॥
दारा घाट धौलपुर[१] बांध्यो । रोपि[२] अराबे[३] कलहै कांध्यो ॥
सूबन के दिल दहसत ऐसी । अबधौं दई करत है कैसी ॥
हलचल मची चहूँ दिस ऐसी । खलभल प्रलै काल की जैसी ॥
प्रगटी चाह सोंदरा[४] ढरक्यौ । चंपति कौ दच्छिन भुज फरक्यौ ॥

दोहा ।

फरक्यौ चंपतिराइ कौ, दच्छिन भुज अनुकूल ।
बड़ी फौज उमड़ी सुनी, भई जुद्ध की फूल[५] ॥ ३ ॥

छन्द ।

बड़ी फूल चंपति सुख पायौ । औरँग उमड़ि अवंती आयौ ॥
सिंह मुकुंद हतौ तंह हाड़ा । दल कौं भयो पेंड़ घर आड़ा ॥
उमग्यौ औरँग कौ दल गाढौ । हाडा भयौ समर में ठाढौ ॥
बिकट सार समसेरन माची । बाजत मारु कालिका नाची ॥
हाड़ा हरपि विमानन बैठ्यौ । तब औरंग अवंती पैठ्यौ ॥
औरँगसाह तखत कौं उमड्यो । दारा जहाँ मेघ सौ घुमड्यो ॥
सुनो खबर दारा अति कोप्यौ । चामिल घाट अरावौ रोप्यौ ॥
फिकिर बढ़ी सब कै दिल ऐसी । अबधौं दई होति है कैसी ॥

१—धौरपुर = धौलपुर । २—रोपि = स्थापित करके, सम्मुख जमाकर । ३—अराबे = तोपखाने, तोपें । ४—सोंदरा = सिंधौरा, बारूद भरने की कुप्पी । ५—फूल = उत्साह, उमंग ।

दोहा ।

कैसी धौं अब होति है, कीजे कौन विचार ।
उड़ैं अरावे में सबै, भयो सुभट संहार ॥ ४ ॥

छन्द ।

तब औरंग सबनि तन ताके । बल बैासाउ[1] सबन के थाके ॥
चकृत चित्त चारहुँ दिस दौरे । कछु न बुद्धि काहू की औरे[2] ॥
तब औरंग मतो यह कीनो । बिमल चित्त में चंपति दीनो ॥
हित सैां लिखि फरमान पठायो । चंपतिराइ सुनत सुख पायो ॥
उमग भरे दल साजि उमंडे । नरवर[3] ढिग नैारँग जहँ मंडे ॥
तँह अलगारन[4] धाइ पहूँचे । देखे दल के झंडा ऊँचे ॥
चहूँ दिसि सोर कटक में छायो । चंपतिराइ बुंदेला आयो ॥
सुनि औरँग उर उमंग बढ़ाई । मनो फते दिल्ली की पाई ॥

दोहा ।

आनन औरँगसाह कैा, चढ़ौ चैागुनो चाव ।
ल्यावो चंपतिराइ कैं, हमसैां मिलैं सिताब[5] ॥ ५ ॥

छन्द ।

धावन एक सहस जन धाये । चंपति कैं हित वचन सुनाये ॥
नैारँगसाह तुम्हें चित चाहें । सबै तुम्हारे भाग सराहें ॥
तातैं अब वड़ बिलम[6] न कीजे । चलि दिल्लीस कैां दरसन दीजे ॥
तोलगि नैारँगसाह पठायो । तुरत बहादुरखाँ चलि आयो ॥
कह्यौ आइ चंपति सैां भाई । तुम इतनी क्यैां बिलम लगाई ॥
अब यह समै बिलम कैा नाहीं । भई तिहारे चित की चाहीं ॥

१—बैासाउ = व्यवसाय, पैारुष । २—बुद्धि औरना = समझ में आना ।
३—नरवर—गवालियर राज्यान्तर्गत नगर विशेष—राजा नल की प्राचीन राजधानी ।
४—अलगारन = कूच पर कूचकरते हुए, शीघ्रता से, ।
५—सिताब—फार्सी शुद्ध शिताब = शीघ्रता से । ६—बिलम = विलंब, अबेर, देरी ।

अब यह हाजिर है असवारी। चढ़ौ पालकी करौं तयारी॥
चढ़ि पालकी पयानो कीन्हौ। दरस प्रसन्न साह कौ लीन्हौ॥

दोहा।

मुजरा करि ऊभौ[1] भयौ, पंचम चंपतिराइ।
लखि आँखिन औरंग की, आनन्द झलक्यौ आइ॥ ६॥

छन्द।

औरँग अति आदर सौं बोले। मिलतहिँ बचन मंत्र के खोले॥
दारा उमड़ि जुद्ध कौं आयौ। कटक अडोल धौरपुर छायौ॥
बिकट अरावौ सनमुख दीनौ। चामिल घाट बाँधि उन लीनौ॥
छुटै समुद्र सुपै चहुँधा के। उड़े मेरु मंदर से बाँके॥
जौ समसेरन होइ लराई। खोड़ै सुभट सुभट की घाई॥
उमगे सूर साह के बाजै। ठेलै कौन प्रलै की गाजै॥
चामिल पार कौन बिधि हूजै। जासे मन की इच्छा पूजै॥
गाढ़ भयौ समयौ यह ऐसौ। चंपतिराइ कीजियै कैसौ॥

दोहा।

कैसौ अब कीजै कहौ, पंचम चंपतिराइ।
अब आदर औरंग कौ, बढ़्यौ चौगुनौ चाइ॥ ७॥

छन्द।

बोल्यौ चम्पतिराइ बुंदेला। और घाट है कीजै हेला[2]॥
जौ दारा उत आड़ौ आवै। तौ रन हमसौं जितै न पावै॥
सुनि औरँग अचरज उर आन्यौ। और घाट चम्पति तुम जान्यौ॥
चम्पति कही घाट हम जानैं। तखन काज तुम करौ पयानैं॥
सुनि औरंग तखन रस भीनैं। चौदह लाख खरच कौ दीनैं॥
कीनौ कूच राति उठि जागी। चम्पति भयौ सबन के आगी॥

1—ऊभौ भयौ = प्रदीप्यमान हुआ।

1—हेला = उतारा, फ़ौज को घसा कर पाप नदी को पार करना।

उमड़ि चले दारा के सोहैं[1] । चढ़ी उदंड जुद्धरस भौहैं ॥
चामिल उतरि सुभट गन गाजे । पार जाइ संधाने[2] बाजे ॥

दोहा ।

चम्पति मुख औरंग के, भली चढ़ाई ओप ।
नातर उड़ि जाते सबै, छुटे तोप पर तोप ॥८॥

छन्द ।

चामिल पार भई सब फौजें । तब नौरंग मन मानी मौजें ॥
दारासाह खबर यह पाई । चामिल पार फौज सब आई ॥
आगे चम्पतिराइ बुंदेला । ह्वै हरौल[3] कीन्हो बगमेला ॥
चामिल पार भये सब आछे । तजे अडोल[4] अरावे पाछे ॥
दारा के दिल दहसत बाढ़ी । चूमन लगे सबनि की डाढ़ी ॥
को भुजदंड समर में टोके । उमड्यौ प्रलै सिंधु को रोके ॥
छत्रसाल हाड़ा तंह आयो । अरुन रंग आनन छवि छायो ॥
भयो हरौल बजाइ नगारो । सार धार को पेरन हारो ॥

दोहा ।

ह्वै हरौल हाड़ा चल्यो, पेरनि साहसमुद्र ।
दारा अरु औरँग भड़े, मनो त्रिपुर अरु रुद्र ॥ ९ ॥

छन्द ।

दारा अरु औरंग उमंडे । मनो प्रलैघन घोर घमंडे ॥
बजे जुद्ध में निविड़ नगारे । दुहु दिसि बजे अरावे भारे ॥
गुरु गंभीर घोर धुनि छाई । फटि ब्रह्मांड परै जनि भाई ॥
त्यों बोले उमराउनि हल्ला । जम के भये कटीले कल्ला ॥
हय गय रथ पैदल रन जूटे । घाइन सहित कवच धर फूटे ॥

१—सोहैं = सम्मुख, मुक़ाबिले में ।
२—संधाने बाजे = बाजे सम्हाले और बजाने प्रारंभ किए ।
३—हरौल—शुद्ध हरावल = सेना का अग्र भाग, सेनाग्रणी नायक ।
४—अडोल = जो हल चल न सके, अचल ।

चंपति की जब बजी बढ़ाई । मसहारिन[1] की मेटी भूखै ॥
दारासाह विजत रन छाज्यौ । जबत[2] पातसाही कौ माज्यौ ॥
हाड़ा सार[3] धार में पैठ्यौ । सूरज भेद बिमाननि बैठ्यौ ॥

दोहा ।

सूरन कौं सुरपुर मिल्यौ , चंद्रचूड़ कौ हार ।
तखत मिल्यौ औरंग कौं , चंपति कौं जस चाह ॥ १० ॥

छंद ।

चंपतिराइ सुजस जग गायौ । ह्वै हरौल दारा बिचलायौ ॥
हरवल ह्वै दारा कौ बांकौ । बेटा बली बहादुरखां कौ ॥
जुद्ध बुंदेलनि सौं जब साच्यौ । हय हथियार छाड़ि भगि माच्यौ ॥
गाई फतै भयौ मनभायौ । औरंग उमड़ि आगरे आयौ ॥
दारा पकरि पठाननि लीन्हौ । साह मुराद कैद में कीन्हौ ॥
धरनी लोक दुहुनि तैं छूट्यौ । नौरंगसाह तखत सुख लूट्यौ ॥
बैठ तखत बजे सधानै । चंपतिराइ साह मनमानै ॥
नौरंगसाह कृपा करि भारी । मनसब[4] दीन्हौ दुसहहजारी[5] ॥

१—मसहारिन = मांसाहारी जन्तु, यथा गृद्ध शृगाल आदि ।

२—जबत = आज्ञा, नियम । ३—सार = लोह ।

४—मनसब = पद । ५—दुसहहजारी—द्वादसहहजारी—यह बादशाही समय में एक पद था जिसका पानेवाला बारह हजार घुड़सवार सेना का नायक होता था । सेना पदधारी हज़ारी पचहज़ारी दस हज़ारी आदि नामों से अपने अपने पद के अनुकूल लिखे जाते थे और इन्हीं पदों के उपयुक्त उनकी जागीरें होती थीं ।

दोहा ।

पेरछ[1] अरु सहिजादपुर, कौंच कनार[2] समूल ।
मिली बड़ी जागीर सब, धरि[3] जमुना कौ कूल ॥ ११ ॥

छंद ।

मिली बड़ी जागीर सुहाई । जरैं[4] समीप[5] भतीजे भाई ॥
मुसकी तुरग लूट जो आनौ । खोज बहादुरखाँ सो जानौ ॥
कहि पठई चंपति कौं भाई । घर की लूट तिहारे आई ॥
दल मैं लुस्यो भतीजो तेरौ । सो सब साज प्रीति मैं फेरौ ॥
वह करवाल ढाल अरु घोरा । दीजौ राखि आपनो तोरा ॥
चंपति कौं यह बात सुनाई । बैठे ऐंड़ प्रीति सों पाई ॥
तब चंपति ऊपर यह दीनौ । करि घमसान तुरग हम लीनौ ॥
ताकी अब चरचा न चलावो । घर ही यह मन कौ समुझावो ॥

दोहा ।

सुनत बहादुरखाँ बली, उत्तर दियो न और ।
अनखु हिये मैं धरि रह्यो, डारि बुद्धि के डोर ॥ १२ ॥

१—ऐरछ—यह नगर बेलातट झांसी जिले के अंतर्गत है । यह बड़ा पुराना ऐतिहासिक नगर है । कहा जाता है कि नृसिंह अवतार यहीं हुआ है और हिरण्यकश्यप की यहीं राजधानी थी । ईंटें यहां बहुत बड़ी बड़ी प्राचीन काल की भूमि के भीतर भरी पड़ी हैं । यहां ईंटे नहीं बनतीं, उन्हीं से सब काम चलता है । प्रसिद्ध किंवदंती है । "एरछ ईंट न होय" । यहां एक टूटा हुआ दुर्ग अद्यापि पड़ा है । मुग़ल साम्राज्य में यह एक प्रसिद्ध सूबा था ।

२—कनार—सूबे कनार यमुना तट का प्रान्त इटावे से लेकर बांदे तक कहाता था और इस सूबे की राजधानी कालपी थी । इस विषय का पता मुग़ल बादशाहों के फ़र्मानों से जो लगता है ।

३—धरि = पकड़े हुए, गहे हुए । ४—जरना = ईर्षा करना ।

५—समीप = समीपी, संबंधी ।

छंद ।

तौ लगि सोर कटकु में छायौ । पूरब तें सूबा[1] चढ़ि धायौ ॥
गंगा उतरि प्रयाग पछेल्यौ । औरँगसाह सुनत दल पेल्यौ ॥
हुकुम बहादुरखाँ कौ कीन्हौ । उनि सुखमानि सीसधरि लीन्हौ ॥
उमड़ि फौज पूरब कौ धाई । हयखुर गरद गगन में छाई
और हुकुम चंपति पै आयौ । बैठे कहा साह फरमायौ ॥
गैरहाजिरी लिखि है कोई । मन सब घटै तगीरी[2] होई ॥
आलमगीर आप फरमायौ । हुकुम न मानै सो दुख पायौ ॥
उद्दित बचन उकील[3] सुनायो । चपति हिये अनख बढ़ि आयौ ॥

दोहा । 3254

अनखु बढ्यौ मनसब तज्यौ , सेवा कछु न सोहाइ ।
उदा है चपति चल्यौ , आग आगरैं लाइ ॥ १३ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाश औरंगजेब प्रपंच चंपतिराइ विक्रम मुकुंदहाडा-बध-दारासाह पराजय छत्रसालहाड़ा बध-वर्णनं नाम षष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥

१—सूबा—से अभिप्राय शुजा से है । वह बंगाल और आसाम का सूबेदार था। इससे औरंगजेब से खजुहे के समीप जो फतहपुर के जिले में है लड़ाई हुई थी ।

२—तगीरी शुद्ध अर्बी शब्द तगयीरी تغیری है जिसका अर्थ तबदीली का है ।   ३—उकील—शुद्ध रूप वकील—यहाँ अर्थ हैं शाहीदूत, शाही समाचार लाने हारा ।

सातवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ देस में आये । चंड प्रताप चहूँ दिस छाये ॥
फौज पेलि भाँड़ेर[1] उजारी । भुमियावट[2] उर में अखत्यारी ॥
पेरछ आइ कोट में बैठे । सूबन के उर में डर पैठे ॥
पहुंची खबर साह कों ऐसी । चंपतिराइ करी उत जैसी ॥
सो औरंग चित्त धर लीनी । पहिल फिकिर सूजा की कीनी ॥
नौरंगसाह साज दल धायो । जूझ जीत सूजा विचलायौ[3] ॥
दावादार रह्यो नहि कोई । बैठ्यो तखत साहिबी [illegible] ॥

दोहा ।

गज सिक्का औरँग कौ , चल्यौ हुकुम लै संग ॥
देसनि देसनि कों चले , सूबा तेज अभंग ॥ १ ॥

छन्द ।

सूबा ह्वै सुभकरन सिधायो । हित सों पातसाह पहिरायो ॥
सँग बाइस उमराउ पठाये । लै मुहीम चंपति पै आये ॥
जोरि फौज सुभकरन बुँदेला । पेरछ पर कीन्हौ बगमेला ॥
बाजत सुने जूझ के डंका । उमड़ि चल्यौ चंपति रनबंका ॥
माची मार दुहूँ दिस भारी । रचनहार कों मुसकिल पारी ॥

१—भाँडेर = दतिया राज्यान्तर्गत नगर विशेष है। यहीं चितौड़ाधीश बापा रावल का पोपण हुआ था ।

२—भुमियावट = घरेऊ रीत पर अपने भूमिस्वत्व पर अधिकार करना ।

३—विचलायौ = भगा दिया ।

चले हाथ चंपति के ऐसे। छूटे बान धनंजय कैसे॥
उतकट भट बखतर धर मारे। कूटे हय गय पक्खरवारे[1]॥
सूखे कढ़े रुधिर नहिं छोवैं। लागत प्रान परन के पीवैं॥

दोहा।

ठिल्यौ कटक सुभकरन कौ, ठिल्यौ खवास अडोल।
रनउमंग में उमड़ि कै, नच्यौ तुरंग अमोल॥ २॥

छन्द।

तबहिँ बान चंपति कौ छूट्यो। हठुवा लग्यो पुठी है फूट्यो॥
गिरो तुरंग खवास हँकार्‌यो। सो कासिमखाँ बरछी मार्‌यो॥
उगरसाह तंह मार मचाई। साहि गढ़े अति घोप चढ़ाई॥
चंपतिराइ विजै तँह लीनी। मुँह मुरकाइ[2] अरिन कौ दीनी॥
विकट कटक झुकझोरि झुलायौ। हाँति उमड़ि घरौनी[3] धायौ॥
निकट रायगिरि तें तहँ आयो। तहाँ खोज धंका दल छायो॥
जानि कटक उमराइ करेरौ। दीनौ राति उमंडि दरेरौ॥
सुभट बान गोलिन सौं फूटे। अरि के विकट मोरचा छूटे॥

दोहा।

पैठे उदभट कटक में, कपटे विकट पठान।
घाइन घालत[4] चाय सौं, करि चंपति की आन॥ ३॥

छन्द।

तहाँ मार माचो अति भारी। चंपतिराइ तेग झुकि झारी॥
उमड़ि वैरि कौं चलदल कीन्हो। कटक युद्ध कौं पैदल लीन्हो॥
समर धीर वैरिन पग रोपे। जो न जिहाज पीठ धरि कोपे॥
धपैत अस्त्र कवच धर फूटे। मयामेघ मानौ भर जूटे॥

१—पक्खर = पाखर, हाथी घोड़ों का कवच।
२—मुरकाना = फेर देना, भगा देना। ३—घरौनी = स्थान विशेष।
४—घालना = मारना, चलाना।

तहाँ चैादहा मेघ सिधारयो । सुनि सरदार समान हकारयो ॥
कहै चैादहा मुजरा मेरो । हैां मारैां सरदार अनेरो ॥
चंपत लख्यौ वचन सुनि प्यारो । भैाचक आनि कियैा उजियारो ॥
छुट्यौ वान वैरी कैा भूल्यो । छाती लग्यौ कढ़्यौ अति रूल्यो ॥

दोहा ।

पंचम चंपतिराइ के , लग्यौ वान कैा घाइ ।
अधिक युद्ध के रस भयो , वढ़्यौ चैागुनैा चाइ ॥ ४ ॥

छन्द ।

हला वोलि वैरी महि आयो । चंपतिराइ युद्धरस छायो ॥
रन चंपति की नची कृपानी । धरी भीम जनु कीचक घानी ॥
फैाज फारि चंपति जसु लीन्हैा । अमृत हरत ज्यैाँ सुपरन कीन्हो ॥
कटकु खोज वंका कैा कूट्यो । चंपतिराइ विजै सुख लूट्यो ॥
जीति पाइ अनघोरी[1] आये । चाल दई सुभकरन सिधाये ॥
तँह सिकार खेलन अभिलाषी । देवीसिंह नृपति की राखी ॥
आइ अजीतराइ तहँ रोके । वर भुजदंड समर मैं ठोके ॥
रहो अजीतराइ के पैंड़े । पैठि सक्यौ सुभकरन न मैंड़े[2] ॥

दोहा ।

राजा देवीसिंह कैां , डेरैा दीनैा देस ।
उमड़्यौ चंपतिराइ पै , श्री सुभकरन नरेस ॥ ५ ॥

छन्द ।

सुनि सुभकरन जुद्धरस भीनैा । मंत्र सुजानराइ सैां कीनो ॥
लरत भिरत वहु काल वितीते । घने जुद्ध सूवन सैां जीते ॥
पैंड़ पातसाहिन सैां कीनो । गई भुमि दंधुन लै दीनो ॥
कठिन ठैार मसलहत वताई । नैारँगसाह दिली तव पाई ॥

१—अनघोरी = चुपचाप, अचानक । २—मैंडे = सीमा ।

दारा दल जीते मुहरा तैं। बड़ी कोन अब हम कौं घातै ॥
घाइल भये हमारे भाई। घोर अवस्था सी कछु आई ॥
पै सुभकरन मिलै दल साजै। बंधु विरोध करत हम लाजै ॥
जो कीजै अब उमड़ि लराई। जीते हू जग मैं न बड़ाई ॥

दोहा।

गोतघाड[1] तैं आजु लौं, हमैं बचायौ ईस।
अब सलाह इन सौं करै, कछू न ह्वैहै खीस[2] ॥ ६ ॥

छन्द।

ज्यौं मन आनि लगाई घातैं। होई सलाह कटक बिन जातैं ॥
सुनि सुभकरन घनौ सुख पायौ। मन मिलाइ मिलिबौ ठहरायौ ॥
त्यौं चंपति कहि कुशल सुहातौ। लिखी सुजानराइ कौं पाती ॥
मुरछौ[3] घाइ देह बल आयौ। खेल सिकार तुरग दौरायौ ॥
बाँचत चिठी जान यह लीनी। चंपतिराइ सलाह न कीनी ॥
मिलिबे काज बोल हम बोल्यौ। हित सौं हियौ सुभकरन खोल्यौ ॥
बोल बोलि जौ मिलन न जैये। तौ झूठे जग मैं ठहरैये ॥
तातैं बनै मिलै निरधारैं। चंपति हमैं न झूठे पारैं ॥

दोहा।

मिलिबौ राइ सुजान कौं, हियें रह्यो ठहराइ।
तुरत अमर्थोरी ले चले, घर कौं चंपतिराइ ॥ ७ ॥

छन्द।

घर कौ चंपतिराइ सिधाये। दल लै दुवन दलीपुर आये ॥
तंह छत्रसाल भगतिरस भीने। उमगि पिता के दरसन कीने ॥
पहुँचि बेदपुर मैं छवि छाये। मिलै सुजानराइ सन भाये ॥

१—गोतघाड = बंधु-विरोध; घरौ हत्या। २—खीस = हानि।
३—मुरछौ = घाव भर आया।

दोऊ वीर मंत्र कौं बैठे। दिगपालनि के उर भय पैठे ॥
तहाँ सुजानराइ जो बोले। वचन सलाह करन के खोले ॥
ते चंपति के चित्त न लागे। उद्दित जुद्ध बुद्धि रस पागे ॥
जब हम बिरस[1] साह सौं कीनौ। तब इन बचन कह्यौ रिस भीनौ ॥
हम न साह कौं मनसब छैहैं। भुमियावट में सामिल रैहैं ॥

दोहा।

जब हम भुमियावट करी, तब इन करी मुहीम ॥
हमै जीति पै औंड़छौ, चाहत है सब सीम ॥ ८ ॥

छन्द।

चंपतिराइ सलाह न मानी। राइ सुजान वहै ठिक ठानी ॥
मन वच कर्म संधिरस राचे। मिले न चंपति जब हो साचे ॥
तहँ सुभकरन साजि दल धाये। समर ठानि चंपति पै आये ॥
फौजै उमड़ि निकट जब आई। तब कीन्ही चंपति मनभाई ॥
दल पर बान बज्र से बरषे। कौतुक लखें देवता हरषे ॥
हलनि हलाइ फौज बँध फोरै। घनझुंडा[2] ज्यौं पवन झकोरै ॥
खलभल परी दुवन दल भानै। कित धौं गयो कौन नहिं जानै ॥
जब न ब्यौंत कछु चले चलाये। तब सुभकरन हजूर बुलाये ॥

दोहा।

सँग लै राइ सुजान कौं, मुजरा कीन्हौ जाइ।
देखि साह सुभकरन को, अनतहि दियो पठाइ ॥ ९ ॥

छन्द।

त्यौंही साह कियो मनसूबा। दक्षिण को भेजो करि सूबा ॥
नामदारखां नाम बखानो। दिल्लीपति के अति मन मानो ॥
रतनसाह तिन संग पठाये। चंपति रहे देस में छाये ॥
लिखी नवाबसाह कौं ऐसी। चाहे करन बड़ाई जैसी ॥

१—बिरस = बिगाड़, विरोध। २—घनझुंडा = दल, बादल।

रतनसाह [illegible]पति कौ [illegible] जायौ । मिल्यौ मोहि सेवा में आयौ ॥
ऊतर सा[illegible] न दूजौ दीन्हौ । बांचत लिखौ कैद करि लीन्हौ ॥

दोहा ।

दिल्लीपति की [illegible] कौ , जबही सुन्यौ जुवाब ।
रतनसाह कौ तुरतही , विदा कियौ जु नवाब ॥ १० ॥

छन्द ।

राइ सुजान करी जे घातैं । तै न भईं सब मन की बातैं ॥
है वदाल ह्वांतै उठि आये । ए विचार मन में ठहराये ॥
जहां न आदर बूझ बड़ाई । जहां न प्रापति[1] बंधु न भाई ॥
जहां न कोऊ गुन कौ पूजै । तहां न पल भर रहिये दूजै ॥
सेवा पातसाह की छाड़ी । फेरि सलाह पौंड़छै माड़ी ॥
तब विनई हीरादे रानी । हम सेवा नृप की उर आनी ॥
कछु न कपट आनौ हम माहीं । निहचै चंपति में हम नाहीं ॥
तब रानी जुग फूट्यौ जान्यौ । उर विश्वास करियौ टिक ठान्यौ ॥

दोहा ।

त्यौंही राइ सुजान सौं , हितुन कही समुझाइ ।
तुम अपनी रच्छा करौ , रचियतु इहां उपाइ ॥ ११ ॥

छन्द ।

यह सुनि राइ सुजान सिधाये । तज पौंड़छौ [illegible]पुर आये ॥
अँगदराइ रतन गुन भारे । छत्रसाल [illegible] के तारे ॥
तीनौं कुँवर महेवा छाये । समाचार फौजन के आये ॥
तिनमैं छत्रसाल परवीने । खेलत आखेटक रस भीने ॥
देखहि बरष ग्यारहौं लागौ । प्रगट साल सोरह कौ दागौ ॥
अंगदराइ मंत्र तँह कीन्हौ । ढिग बुलाइ छत्रसालहि लीन्हौ ॥

१—प्रापति = प्राप्ति ।

हित सों कहे वचन निरधारे। मामनि[1] के तुम जाउ छतारे[2] ॥
श्रौर मंत्र मत उर में आनो। हुकुम मानि तुम करो पयानो ॥

दोहा।

ज्यौं खरदूखन के समैं, धरे धनुष तूनीर।
अज्ञा श्री रघुनाथ की, मानी लछमन वीर ॥ १२ ॥

छन्द।

जो छत्रसाल तहां पगु धारे। जहाँ सुने मामा अनियारे ॥
समाचार चंपति सब लीन्हे। डेरा जाइ वेरछा कीन्हे ॥
हीरादे[3] फौजे फरमाई। डंका देत जतारह आई ॥
तहँ तें दो फौजें करि धाये। दुहु दिसि दोऊ वीर दवाये ॥
श्रौचक फौज वेदपुर आई। भीर[4] सुजान न जोरन पाई ॥
तीन सुभट सँग लीन्हे वैठे। प्रतिभट उमड़ि जाइ कर पैठे ॥
इत सुजान की छुटी वँदूखें। फूटी वर वैरिन की कूखें ॥
भिल भिल फौज ठिलाठिल धावे। चहुँदिस छोर छुवन नहि पावे ॥

दोहा।

दारू[5] गोली के घटे, तीरन माची मार
छूछे[6] भये तुनीर सब, परयो फौज को भार ॥ १३ ॥

छन्द।

परयो भार मारू सुर बाजें। तीनैां सुभट समर सुभ छाजें ॥
उमड़ि मनोला हरी जसोधी। दल में तेग तड़ित सी कैाधी ॥
मार करे रनसिन्धु विलोरे[7]। तेगनि तमकि ताल सो तोरे ॥
लरयौ उलटि रन पंडित पांडे। झुक झपेटि खंडे अरि चांडे ॥
रुचि सों सार स्रात ज्यौं मेवा। घाइन के धरि कंजा नेवा ॥
पाइ दुहुँ के परे न पाछे। पैरे सार धार में आछे[8] ॥

१—मामनि = मामाश्रों के यहाँ। २—छतारे = छत्रशाल का प्यार का नाम।
३—हीरा दे = हीरादेवी। ४—भीर = फौज। ५—दारु = बारूद।
६—छूछे = रिक्त, खाली। ७—विलोरे = हिलावे। ८—श्राछे = भले।

स्वामि हेत तिल तिल तन टूटे । भानु हेत सुरपुर सुख लूटे ॥
फौजैं पिली दकन नहि जानी । सुरपुर कौं उमगीं ठकुरानी ॥

दोहा ।

सब ठकुरानिन उमगि कै, कीन्हौ अगिन प्रवेस ॥
देखत साहस थकि रह्यौ, देविन सहित दिनेस ॥ १४ ॥

छन्द ।

लख्यौ सुजानराइ दिक ठायौ । सबही कौ विक्रम मन भायौ ॥
यह संसार तुच्छ करि जानौ । राखौ रजपूती कौ बानौ ॥
तन कौ कियौ न लोभ न जी कौ । धरयौ लिलाट राज कौ टीकौ ॥
सब के संग अमरपुर लीनौ । काढ़ि कटार पेट मैं दीनौ ॥
मरयौ सुजानराइ कै आयौ । लरयौ ग्रहन आनन छवि छायौ ॥
मोड़ी अरि अखनि की घाई । जूझौ मनै मार कै माई ॥
समिटि फौज छातै फिरि आई । जहां खबरि चंपति की पाई ॥
चंपति जहां जुद्धरस भीने । रोगन[1] आनि सिथिल करि लीनै ॥

दोहा ।

बल धरि धाये खल सबै, खबर ज्यान[2] की पाइ ।
नातर कौ बचतो कहां, बिचरैं चंपति राइ ॥ १५ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे शुभकरन पराजय-
धंकावधवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

१—रोगन आनि सिथिल करि लीनै = महाराज चंपतराय रोगों से ग्रसित थे और श्रान्त तथा शिथिल होकर निर्बल हो रहे थे । २—ज्यान = निर्धनता ।

आठवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ सुनै दल धाये । छाड़ि ओरछा अंत सिधाये ॥
तीन रोज बीते जटवारे[1] । फौजै फिरे खोज निरधारे ॥
तब चंपति यह मंत्र विचारयौ । सहरा[2] कौं जैबौ निरधारयौ ॥
सहरा भूप इन्द्रमनि भाषै । हते साह नाली में राखै ॥
जब हजूर चंपति पग धारे । तहाँ कैद में भये निहारे ॥
चंपति अरज साह सौं कीन्ही । कैद छुड़ाइ भूप कौ दीन्ही
छुट्यौ इन्द्रमनि देसहिँ आयौ । फेरि राज सहरा कौ पायौ ॥
करी हती इहि भांति निकाई । तातैं मति सहरा कौ धाई ॥

दोहा ।

सहरा कौ सूधे भये, चंपति सिथिल सरीर ।
घात ताक पाछे परी, बैरिन की भट भीर ॥ १ ॥

छंद ।

टिले दलेल दौवा दल पाछे । सोरह सहस सुभट सँग आछे ॥
चंपति संग भीर कछु नाहीं । सँग असवार पचीसक आहीं ॥
सहरा कौं सूधे पग धारे । दिन दिन बढ़ै रोग अति भारे ॥
दौर[3] कोस सोरह की कीनी । उतरि बरिक घोरन दम दीनी ॥
तुरँगनि रातिबु[4] दैन विचारै । तौं लगि अरि कौ सुन्यौ नगारौ ॥
नजर परी बैरिन की गोलै[5] । चंपति बैठे तरकस खोलै ॥

१—जटवारा = नगर विशेष ।　　२—सहरा = नगर विशेष ।
३—दौर = धावा ।　४—रातिब = दाना, चारा ।　५—गोलै = झुंड ।

चढ़यौ तुरी तरकस कटि मांही । ब्यौंत[1] बान घालिन[2] कौ नांही ॥
तंह आड़ौ[3] इक बैाघट[4] आयौ । दब करि चंपतिराइ नकायौ ॥

दोहा ।

बैाघट के नाकत तहां, तन कौ लगी न बार ।
घारि पुतरी भारिकै, उतरि परयो इहि पार ॥ २ ॥

छंद ।

पीछै तहां इन्द्रमनि राजा । बैाघट धस्यौ तुरंगम ताजा ॥
गिरि इन्द्रमनि दिन तै थोरौ । साधत बन्यो न बैाघट घोरौ ॥
मिली फौज बैरिन की बांकी । काढ़ि कृपान इन्द्रमनि हांकी ॥
टूक टूक तन सन्मुख टूट्यो । बीरलोक कौ आनँद लूट्यो ॥
जब लगि जूझ इन्द्रमनि कीन्हो । चंपति गांउ दैार करि लीन्हो ॥
सहरा सहर खबर यह ठाई । साहिबसिंह धधेरै पाई ॥
चंपतिराइ चले इत आये । नाते प्रगट प्रीति के पाये ॥
ऐसे समै कहा मनु धावै । हितू बिना को काकै आवै ॥

दोहा ।

तातै इहां बुलाइ कै, चंपति कैा निरधारि ।
यह विचारि पठये तहां, ते है सै असवारि ॥ ३ ॥

छंद ।

तँह दौवा[5] सिबराम सिधारयो । बड़ गुपाल बारी निरधारयो ॥

१—ब्यौंत = अवसर । मौका ।   २—घालिन = चलाने का ।

३—आड़ौ = बीच में ।   ४—बैाघट = कुघाट, नाला ।

५—दौवा = बुंदेलखंड के राजाओं में यह प्रथा है कि राजा को बाल्यावस्था में जिस धाय ने दूध पिलाया है उसका पुत्र जो राजा के समान वय का होता है उस राजा का दौवा अर्थात् धाय-पुत्र कहाता है । राज्य दर्बार में जाति का विचार न करके इस दौवा का विशेष सम्मान होता है । इसके लिये वेतन, तथा जागीर लगा दी जाती है। ये धायें बहुधा अहीर खवास और राजपूत आदि जातियों की स्त्रियां होती हैं । राजा अपनी धाय के पति को कक्का कह करि संबोधन करते हैं। दौवा को राजा अपने सहोदर की भांति मानते हैं ।

करिहि कूंच तिहि गावैं आये। चंपतिराइ जहां सुन पाये ॥
औचक सुनी फौज जब आई। चंपतिराइ कमान चढ़ाई ॥
उठि कै हिम्मत हिये बढ़ाई। सेंके[1] विना कमान चढ़ाई ॥
उतरे ताहि बहुत दिन वीते। फिरी कमान मनोरथ रीते ॥
छत्रसाल तंह वैठे आगे। उर उत्साह जुद्ध के जागे ॥
त्यौंही छत्रसाल की माता। जग में एक पुन्य की त्राता ॥
कढ़यौ कटार हाथ में लीन्हौ। हुलसि पतिव्रत में मनु दीन्हौ ॥

दोहा।

तहां धंधेरे[2] गांऊ के, जुरे[3] फौज सौं जाइ।
अति अडोल बातैं कहीं, सब कौ प्रगट सुनाइ ॥ ४ ॥

छंद।

को हो तुम आवत मन वाढ़े। चंपति।को हम तजैं न काढ़े ॥
जोहर पहिल हमारे ह्वै है। और छांह तब इनकी छैहै ॥
सुनि सरदार फौज के वोले। इते रोस काहे कौ खोले ॥
हम उर नाहिं कपट छल छाये। चंपति चलै लैन हम आये ॥
हम इनकौं सहरा लै जैहैं। दुशमन कहूँ खोज नहिँ पैहैं ॥
यह विधि सीतल वात सुनाई। सुनत प्रतीति सबनि कौं आई ॥
तहां उतरि उन डेरा कीन्हा। सब के चित्त सुचित करि दीन्हा ॥
सहरापुर कछु दिना गमाये[4]। ह्वांते सीता वरहिँ सुहाये ॥

दोहा।

देवालो रघुनाथ को, हतो निकट तिहि राउ।
दरसन को चंपति गये, धरे भगति को भाउ ॥ ५ ॥

१—सेंकना = आग दिखा कर गरम करना।

२—धंधेरे = राजपूतों की एक जाति। बुंदेलखंड में धंधेरे, परमार, बुंदेले ये तीन प्रकार के राजपूत परस्पर संबंध और वेटी व्यवहार करते हैं।

३—जुरे = भिड़े, सम्मुख हुए।   ४—गमाये = व्यतीत किये।

छंद।

देखे उद्दित रूप सुहाये। सीता राम लखन छवि छाये॥
अरि की फौज रोस रुख पागी। उमडि तुरतु सहरा सौं लागी॥
सोचु विचार भयो अति भारी। कछु ठहराउ नहीं निरधारी॥
एकै कहै कूच करि जैयै। मोरन गांउ बचाई हैयै॥
करी इंद्रमनि सौं हम नीकी। कहा जान करि ह्वैहै फीकी॥
एकै कहै खबर सुनि लीजै। इनको नहीं भरोसो कीजै॥
ह्वाँते फौज साजि कै धाये। हम सौं कहै लैन हम आये॥
गयो मुहीम इंद्रमनि राजा। सूनो सहर सुनो सिरताजा॥

दोहा।

बन्यो आइ मरिबो इहां, घर घरमाच्यो धैह।
रिपु सौं राइ सुजान कौं, लैन न पायो बैह॥ ६॥

छंद।

लै उसास सिगरे जो बोले। सुनि छत्रसाल बचन तब बोले॥
इहां बनै मरिबो तो नीको। जंह रघुनाथ सरन सबही को॥
चंपति ब्योंत बुद्धि के कीन्हे। सुनि विचार सबहो के लीन्हे॥
सब को मूल देह निरधारयो। असुर मारि भुवभार उतारयो॥
रिपिन देह आनंद सों लीन्हो। तपु करिबिन चंचलबस कीन्हो॥
जनक जजाति देह धरि आये। जग्य दान करि स्वर्ग सिधाये॥
सूरन सतिन देह जे पाये। करि करतूति सुजस बगराये॥

दोहा।

ताते अँग मैं देह को, रच्छा कीजै आदि।
सब साधन यातैं सधैं, और बात सब बादि॥ ७॥

छंद।

हम हो देह धरयो जग माही। करतूती कीन्ही चित चाही।
एक बात जु रही है कीवे। धैर सुजानराइ को लीबैं।

जदपि अनित्य देह यह गाई। समयै छूटि एक दिन जाई॥
जौ कहूँ सदरार में छूटै। तौ छत्री सुरपुर सुख लूटै॥
तातैं तनक देह बल आवै। तौ कीजे जोई मन भावै॥
कैहूँ रोग देह तै छूटै। राखौ बांधि समुद्र जौ फूटै॥
कितिक औंछड़े में दल आही। जुरत जुद्ध जमलोकहि जाही
जौ कहूँ नेकु बुद्धि बल पाऊँ। तौ दिल्ली झकझोरि झुलाऊँ॥

दोहा।

जौ मुकाम क्यौंहूं बनै, तौ कीजै उपचार।
असवारी कौं बल बढ़ै, झारौं झुक झुक सार॥ ८॥

छन्द।

जौलौं सहरा भई लराई। फतै दलेल दोवा तहँ पाई॥
साहिबराइ विताव रहोऊ। गढ़ में रहे सकिल[1] कै दोऊ॥
साहस चित्त दुहुन का छूट्यौ। गुपित पाप चंपति कौ ऊट्यौ॥
तव पाती लिखि गुपित पठाई। दौवा अरु वारी कौ आई॥
तुम विस्वास चँपति कौ कीजौ। जीवदान हमकौं तुम दीजौ॥
चाहत हौं न अरिन की वाही। हमकौं कठिन परी गढ़ माही॥
पहिल फतै हमही पह लीजे। पातसाह सौं मुजरा कीजै॥

दोहा।

जवलौं चंपतिराइ कौं, जियत सुनै सव कोइ।
तवलौं अरि की फौज की, दौरै हम पर होइ॥ ९॥

छंद।

सुनी चिठी दौवा अरु वारी। नीचन नीचो बुद्धि विचारी॥
कहीं जुरयौ फौजन को नाकौ। मोरनगांव चलौ वह वाकौ॥
इत मुकाम चंपति कौं भावै। सहरावारौ कूच करावै॥

१—सकिल कै रहे = भाग कर जा घुसे।

कूच मुकाम बनै नहिं होई। जैसी होनहार सो होई ॥
तहँ इक बुद्धि चित्त में आनी। लालकुंवरि परतिच्छ भवानी ॥
दै दै धन पंडा सब साधे। सुमिरन करि रघुबर अवराधे ॥
पति के रहिबे की ठिक पारी। इतै कूच की करी तयारी ॥
सुनि चंपति अति ही सुख पायौ। गुपित मंत्र काहू न जनायौ ॥

दोहा।

छत्रसाल कीन्हाे बिदा, तुरत राज तिहि ठाँउ।
हमही आवत तुम चलैा, ज्ञानसाह के गांउ ॥ १० ॥

छन्द।

छत्रसाल उठि रात सिधारे। ज्ञानसाह के गांउ पधारे ॥
गये बहिन के मिलन जहां ही। आदर भाव प्रीति कछु नाही ॥
बड़ दुख होइ इकतरैा आवै। तीन उपास न बल तन तावै ॥
बहिन देखि कछु बात न बूझी। मिली न आइ कहाधौं सूझी ॥
ह्वै उदास फिरि आये डेरा। भई रसोई कहां कुबेरा[१] ॥
तैालगि ज्ञानसाह घर आये। समाचार सब सुनै सुनाये ॥
तब डेरा दै जिनस पठाई। भई रसोई रात गमाई ॥
समैा परै सब करै रुखाई। बहिन कैान को काकैा भाई ॥

दोहा।

छत्रसाल कैां करि बिदा, चंपति भये तयार।
सँग दे सैा ठाढ़े भये, सहरा के असवार ॥ ११ ॥

छंद।

चंपतिराइ बुद्धि यह कीनी। ठकुराइनि कैां आज्ञा दीनी ॥
मोरनगांउ चलैा उत धारी। चलैं तहां कैा घाट हमारी ॥
पीछे एक घाट पर कोई। नस सिख तै पट चोढ़े सोई ॥

१—कुबेर = असिकाल, अबेर।

सँग लीजे सहरा के वारी। दो से घोरे फिरे हथ्यारी ॥
फौज टारि मोरन लै जैयो। प्रभु कों छल सों इहां छपैयो॥

दोहा।

एक माइके को तहां, सेवक हतो हजूर[1]।
ताहि वुलायो जानि कै, याते परै न भूर[2]॥ १२॥

छन्द।

कही वात तासों ठकुरानी। तैं प्रतीति को है हम जानी॥
ताते तोकों मंत्र सुनायो। प्रभु के चित्त व्यों त यह आयो॥
तू चलि पौढ़ि खाट पर आछै। हौहूँ चलत संगही पाछै॥
यह सुनि कै वह भरी न हामी[3]। झुक झहरानी नोनहरामी[4]॥
पाइन परी जदपि ठकुरानी। स्वामिभगति उर तऊ न आनी॥
जव अति सोर करत वह जान्यो। तव कीनो वाही को मानो॥

दोहा।

कूच करे चंपति चले, होनी हिये विचार।
जितते मद्दति चाहिये, तित तें धाई धार॥ १३॥

छन्द।

चली फौज सँग सहरा वारी। संग दो सै असवार हथ्यारी[5]॥
ताके घात पाप उर आनै। चंपति तिन्हैं सहाइक जानै॥
सात कोस जौ लों चलि आये। भये दगैलन[6] के मन भाये॥
आपुस माझ इशारत[5] कीनी। कर उलछार सें हथी[7] लीनी॥
मारे सुभट दुइक उन संगी। चंपति पै उमड़े दुर जंगी॥

१—हजूर = उपस्थित था। २—भूर = चूक, भूल।
३—हामी न भरी = स्वीकार न किया। ४—नोनहरामी = कृतघ्न।
५—हथ्यारी = शस्त्रधारी। ६—दगैलन = दगावाज़ों, विश्वासघातियों।
५—इशारत = इंगित, इशारा। ७—सें,हथी = वर्छी, कटार।

रोगन चंपतिराइ दबाये। कछु उपाय चले न चलाये॥
ऐसो समौ लख्यौ ठकुरानी। पतिव्रत माँझ चलायो पानी॥
चुटकि तुरग पति के ढिग जाही। धरी बाग इक दौर सिपाही॥

दोहा।

बाग छुवन पाई नहीं, चढ़यौ मरन कौ चाउ।
कटरा काढ़यौ पेट में, दये घाउ पर घाउ॥ १४॥

छन्द।

दै दै घाउ मरी ठकुरानी। चंपतिराइ दगा तब जानी॥
यह संसार तुच्छ निरधारयौ। मारि कटारिन उदर विदारयौ॥
चले विमान बैठि सँग दोऊ। जै बोलत सुरपुर सब कोऊ॥
धनि चंपति तुम राख्यो पानी[1]। धनि धनि कालकुँवरि[2] ठकुरानी॥
धनि चंपति जिन खल दल खंडे। धनि चंपति निज कुल जिन मंडे॥
धनि चंपति निरबल जिन थापे। धनि चंपति जिन सबल उथापे॥
धनि चंपति सज्जनमन भाये। धनि चंपति जग जस बगराये॥
धनि चंपति की कठिन कृपानी। धनि चंपति की रुचिर कहानी॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते चंपतिप्रनाशो नाम अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

१—पानी रखना = प्रतिष्ठा स्थापित करना, बात रखना, शान रखना।
२—कालकुँवरि = छत्रसाल की माता का नाम था।

नवाँ अध्याय।

दोहा।

धनि चंपति के औतरौ, पंचम श्री छत्रसाल।
जिनकी आज्ञा सीस धरि, करी कहानी लाल॥ १॥

छंद।

वालापन तेँ वर बुधि लीनो। सकल हथ्यारन पै रुचि कीनो॥
तुपक[1] तीर अरु सकति[2] कृपानी[3]। छुरी गुर्ज[4] की रीतै जानी॥

१—तुपक = बंदूक। २—सकति = शक्ति, बर्छी।

३—कृपानी = कृपाण, तलवार।

४—गुर्ज = शस्त्रविशेष। यह एक शस्त्र गदा के रूप का होता है और गदा के गोल भाग अर्थात् ऊपर के लट्टू में पतली पतली जंजीरें कुंडों में लगी होती हैं। इन जंजीरों के सिरे पर छोटे छोटे लट्टू लगे रहते हैं और इसे घुमा कर मारने से कई एक प्रहार साथ ही साथ होते हैं। एक ओर तो गदा की चोट और साथ ही साथ, उन लट्टुओं और जंजीरों की चोट पड़ती है। इस शस्त्र का
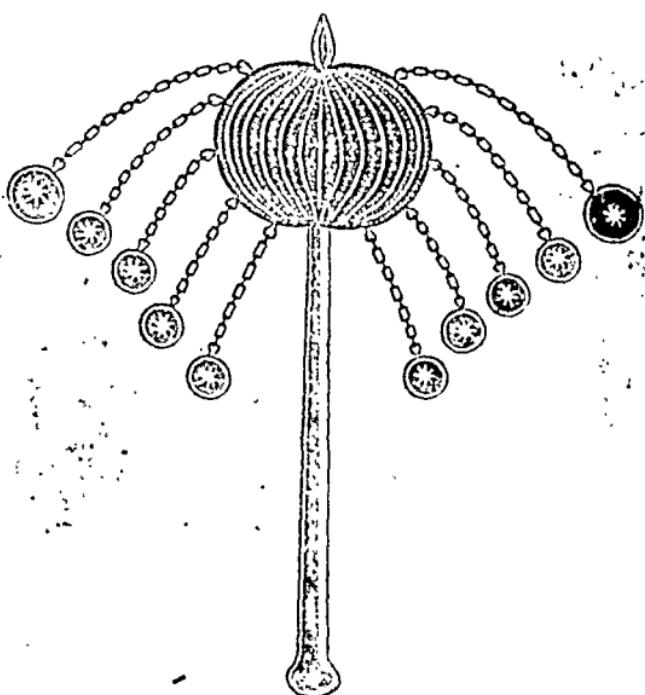
रूप इसी के अनुसार होता है।

बिद्या बाहुजुद्ध[1] 'की बड़ाई। तरु नर बिलगन में अधिकाई॥
असवारी में रंग मचावै। मन के संग तुरंग नचावै॥
चौगानन[2] खेलत छवि छावै। चैंटा[3] सब तै अधिक उड़ावै॥
लखन पुरुष लच्छन सब जानै। पच्छो पेलन सगुन बखानै॥
सतकवि कवित सुनत रस पागै। बिलसत मति अरथनि में आगै॥
सब सिकार की जानी घातैं[4]। रुचती दान जूझ की बातैं॥

दोहा।

पूरन पुन्य प्रताप तें, सकल कला अनयास।
बसी आइ छत्रसाल उर, दिन दिन बढ़ै प्रकास॥ २॥

छन्द।

बढ़ै प्रकास बुद्धि के ऐसे। बरनै चक्करवतिन[5] के जैसे॥
मात मात की इच्छा पूजी। कीरति बिदित कबिंदन कूजी॥
ग्यारह बरष बहिक्रम बीत्यौ। खेलत आखेटक श्रम जीत्यो॥
ऐसे समै बीर बिधि ठानी। होनहार गति जात न जानी॥
औरँगसाह तखतपति जाग्यौ। मेटन हिंदुधरम कौ लाग्यो॥
चंपति हिंदुधरम -रखवारो। दिल्लीदल कौ जीतनहारो॥
तासौं चलै कौन ,की पैडै.। परयो दिलीस बुद्धि बल पैड़ै॥
चंपति जदपि तखत छै दीनी। तऊ दिलीस उलटि छल कीनी॥

दोहा।

कीनी उलटि दिलीस छल, डारि बुद्धि के डौर।
सूबन कौ जितवार[6] पै, काहि पठाऊँ दौर॥ ३॥

१—बाहुजुद्ध = मल्लयुद्ध, कुश्ती।
२—चौगान = पोलो की भाँति का खेल। ३—चैंटा = गेंद।
४—घातैं = दांव। ५—चक्करवतिन = चक्रवर्तिन।
६—जितवार = विजयिता, जीतनहारा।

छन्द ।

सुवन को दल दपट दवावै । ता पर दौर कौन की आवै ॥
तब औरंग बुद्धि उर आनी । फरमाई हीरादे रानी ॥
ज्यों रन भीषम को जसु जागै । अर्जुन दियो सिखंडी आगै ॥
कीन्हीं कथा उमडि इन ऐसी । भीषम और सिखंडी कैसी ॥
जासों कुल दिल्लीदल हारयो । सो चंपति सुरलोक सिधारयो ॥
सार पहिर रवि मंडल फारयो । जीत्यो सुरग जीति दिसि चारयो ॥
गयो सूर सुरपति के लोके । फूटो समुद कौन अब रोके ॥
उमरे फिरत जुद्ध को गाढ़े । चहूँ ओर वैरी बल बाढ़े ॥

दोहा ।

चहूँ ओर वैरी वढ़े, छल बल ताकत घात ।
सूनो वन मृगराज को, दुरद[1] उखारत खात ॥ ४ ॥

छंद ।

ऐसी दसा होन जब लागी । चंपति चमू सोक सों पागी ॥
सहरा में छत्रसाल प्रवीने । उतै पिता की अग्या लीने ॥
सुनै पिता सुर लोक सिधारे । त्यों माता पतिव्रत पन पारे ॥
कानन परत चाह अनचाही । हिरदै सोक सिंधु वेथाही ॥
दुख की लहर लहर पर आई । हियो हिलोर दृगन पर छाई ॥
गये पिता कत छाड़ि अकेले । अब हम राज कौन के खेले ॥
माता बिन को लाड़ लड़ैहै । को उठि भोर कलेऊ[2] दैहै ॥
मात पिता दीन्हे सुख जैसे । ते बीते सब सपने कैसे ॥

दोहा ।

सुपन मनोरथ से भये, या जुग के व्यवहार ।
प्रगट पेखियत सांच से, वीतत लगै न वार ॥ ५ ॥

१—दुरद = हाथी । २—कलेऊ = प्रातः काल का भोजन ।

छंद।

बीते[1] प्रगट प्रियव्रत गाये। जिन रथलीक समुद्र बनाये॥
बीते पृथु जिन पुहुमि सिंगारी। पर्वत पांति धनुष सौं टारी॥
नल हरिचंद सत्त रखवारे। गये बीत जिन सुजस बगारे॥
बीते जनक विदेह सयाने। जिन सुख दुःख एक करि जाने॥
अर्जुन भीम प्रतिज्ञा जीती। अक्षौहिनी अठारह बीती॥
बीते जिते देह धरि आय। जग जस रहे धर्म तै छाये॥
ज्यों छत्रसाल बुद्धि उर आनी। तज्यो सोक हिम्मत ठिक ठानी॥
न्हाइ पिता कौं अजलि दीन्ही। कथन छत्र धरम धुर लीन्ही॥

दोहा।

छत्र धरम धुर ले उठ्यो, महावीर छत्रसाल।
रीति चढ़ेन की विपति में, धीरज धरत विसाल॥ ६॥

छंद।

धरि धीरज छत्र साल सिधारे। हांक सुनै अंगद अनियारे॥
चले छाड़ि सहरा कौ ऐसे। पंडव तज्यौ जतु गृह जैसे॥
हिम्मत मल दल दुख के मेटे। अंगद आइ देवगढ़[2] भेटे॥
कुसल पिता की बूझो ज्यौंही। दृगनि नीर भरि आये त्यौंही॥
समाचार बीते इत जैसे। अंगद जान लिये सब तैसे॥
धुंधे बाहुबल कछू न धीरे। चकित चित्त धारी दिसि हीरे॥

१—बीते = मृत हुए।

२—देवगढ़ = ललितपुर प्रांत के जाखौन नामक स्टेशन के निकट बेतवा तट पर अत्यंत प्राचीन स्थान है। यह भगवान पद्मनन की जन्मभूमि है। यहाँ का कोट सघन वन से ढँका है। यहाँ गुप्तवंशीय राजाओं के बनवाये मंदिर देखने योग्य हैं।

वैरी वढ़े करत मन भाये। वल वौसाउ चले न चलाये॥
जरतु हिया निज तेजनि ऐसे। विषधर वँध्यो मंत्रवस जैसे॥

दोहा।

ज्यौं विषधर मंत्रन वँध्यौ, त्यौं अंगद अनखाय।
लेत उसासैं क्रोधवस, चलत न वल व्यौसाय॥ ७॥

छंद।

त्यौं छत्रसाल धीरधर वोले। सरस विचार मंत्र के खोले॥
अंगद कैा यह वात सुनाई। राजनीति कछु जामें पाई॥
साहस तजि उर आलस मांड़े। भाग भरोसे उद्यम छांड़े॥
ताहि तजै जग संपति ऐसे। तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे॥
तातैं अव उद्यम उर आनै। दूर देस को करौ पयानै॥
भूपन कछुक माई के पाये। राखि देलवारे[1] हम आये॥
ते सव मांगि खरच कैा लीजे। दूर देस कहि उद्यम कीजे॥
यह विचार अंगद सुनि लीन्हों। तुरत विदा छत्रसालहि कीन्हों॥

दोहा।

भये देवगढ़ तें विदा, छत्रसाल सिरताज।
पहुँचि देलवारें कियैा, पूरन मन कैा काज॥ ८॥

छन्द।

त्यौंही लगन व्याह की आई। पहिलही तें है रही सगाई॥
[illegible] पवार कुलवार, कुरी के। उदित अगिनवंस के टीके॥
तिहि कुल देवकुंवरि छवि छाई। लै अवतार रुकमिनी आई॥
कुल पवित्र भूपित भो ऐसे। दीपक दीपसिखा तें जैसे॥
दूलह छत्रसाल तिह पाये। करि विवाह कीने मनभाये॥
रूप सील पतिव्रत सरसानी। भई भूप की जेठी रानी॥

१—देलवारा = स्थान विशेष।

ब्याहि बनी[1] छत्रसाल सिधारे। बिसद ब्योत उद्यम के डारे॥
प्रथम बुद्धि ऐसी उर आनी। भेंट भान प्रोहित सौं ठानी॥

दोहा।

भेंट करी इन भान सैां, अपनै प्रोहित जानि।
भान मिले जजमान कैां, राज गरब उर आनि॥ ९॥

छन्द।

प्रोहित रह्यो राज मद छाक्यो। नव छत्रसाल आपु तन ताक्यो॥
जिन चपति सूबा बिचलाये। तिनके पुत्र कहां हम आये॥
तातें ग्रैार ब्यौत चितु लीजे। बड़े ठौर कढ़ि उद्यम कीजे॥
त्योंही पातसाह फरमाये। नृपमनि जे जयसिंह कहाये॥
कूरम कुल उदित जग गाये। सूबा ह्वे दच्छिन तैं धाये॥
चढ़ो ओर कूरम की फौजै। चढ़ी मनैा दरियाउ की मौजै॥
तै बिलोक छत्रसाल सिहाने। प्रगट करन बिक्रम उर आने॥
मिले आइ जयसिंह नृपाले। उनि हित सैां चाहो छत्रसाले॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते जयसिंह-
समेलनं नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

१—बनी—वधू = दुलहिन।

दसवां अध्याय ।

दोहा ।

मिलि कै नृप जयसिंह सौं, अंगद लिये बुलाइ ।
मनसिब भयौ दुहूनि कौ, रहे संग सुख पाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

रहे संग कूरम के ऐसे । नृप विराट के पंडव जैसे ॥
यद्यपि मनसम मनसिब नाहीं । सब तें उमगि अधिक उर माहीं ॥
जहां जूझ के बज्जे नगारे । तहां उमगि उर लरें छतारे ॥
सनमुख धसै वीररस पागे । घाले घाउ सबहिं ते आगे ॥
अरुन रंग आनन छवि छावै । अरि के अस्त्र गुविंद बचावै ॥
जहां गढ़न सों होइ लराई । तहां करें सब तें अधिकाई ॥
करें मोरचा सब तें ऊँचे । जहां और के मन न पहूँचे ॥
गिरें गाज से तहँ मतवारे । राखि लेहिं तहँ राजन हारे ।

दोहा ।

या विध नृप जयसिंह के, रहे संग छत्रसाल ।
त्यों फरमान दिलीस कौ, आइ गयो ततकाल ॥ २ ॥

छन्द ।

त्यों फरमान साह कौ आयो । वली बहादुरखां फरमायो ॥
लिखी मुहीम देवगढ़ जैयै । विकट मवास[1] जेर कर ऐयै ॥
सुनि फरमान चढ़ाई भौंहैं । पिल्यौ नवाब देवगढ़ सौहैं ॥
नृप मद्दत छत्रसाल पठाये । कोका[2] की तावीन[3] लगाये ॥
कोका संग चले सुख पाये । ये विचार चित में ठहराये ॥

---

1 मवास = जागीर । 2 कोका = धायपुत्र को कहते हैं ।
3 तावीन = मातहती, सेवा, अनुचरता ।

जबहिं साह दच्छिन तें धाये। चंपतिराइ हजूर बुलाये ॥
मारँग कलह तखन हितु बाँध्या। दारा धाट धोलपुर बाँधो ॥
तहां हरौली[1] चंपति कीन्हौं। चामिल उतरि फतै छ दीन्हौं ॥

दोहा।

दुदस हजारी दै तहां, मनसिब दियौ दिलीस।
पैरछ कौंच कनार कुल, अरु पाई बकसीस ॥ ३ ॥

छन्द।

ये नवाब सब जानत आहीं। इनसौं कछु कहिबे की नाहीं ॥
इन चंपति सौं भाइप[2] मानी। बदली पाग जगत मैं जानी ॥
इनकौ संग भला है तातैं। करिहैं भली पुराने नातैं ॥
यह विचार काका सँग धाये। चाल दर कूच दबगढ़ आये ॥
निकट जाइ जब बजे नगारे। उमड़ उतहि देवगढ़वारे ॥
सत्तर सहस सुभट रन बांके। रोके आइ गिरिन के नाके ॥
लागी लागन अरानैं छूटैं। जे हरौल तिनके मन टूटैं ॥
हटत हरौल भयौ भय भारी। पैठ्या चंचल चुटक[3] छतारी ॥

दोहा।

सिंहनाद गल गर्जि कै, भज उठ्यो भट भीर।
छता बीररस उमग मैं, गनै न गोली तीर ॥ ४ ॥

छन्द।

गनै न गोली तीर छतारौ। देखत देव अचंभौ भारौ ॥
एक बीर सहसन पर धावै। हाथ वैर को उटन न पावै ॥
रुधिन मारि करी घनघानी। समर भूमि स्रोणित सौं सानी ॥
नची छता की ओर कृपानी। किलकी[4] उमगि कालिका रानी ॥
सँग के सुभट युद्ध मैं जूटे। भीर परे तिन सौं सँग छूटे ॥

---

१ हरौली = सनाबादबरन। २ भाइप = भाईपन।
३—चुटक = चपक, प्रबंध। ४—किलकी = हुंकारी।

फारत फौज छता अवलोक्यो। उदभट रुकै कौन को रोक्यो॥
उमगि भरै अरि के दल भानो। घाउ लगत तन तनक न जानो॥
घाइ खाइ छत्ता रन जीत्यो। अरि पद प्रलै काल सों बीत्यो॥

दोहा।

विरभानो चंपति बली, समर भयानक ठान।
भभरि भीर अरि की भगी, काल रुद्र उर आन॥ ५॥

छन्द।

वैरी भगे मानि भय भारी। परै बिडर[1] ज्यों बाघ बिडारी॥
बिडरत[2] अरि के कटक निहारे। तब नवाब के बजे नगारे॥
पाई फतै परे तह डेरा। तो लगि भई सांझ की बेरा॥
सब कौ मिले सबनि के, संगी। बिछुरो एक छता रनरंगी॥
रनमंडल[3] संगिन सब हेर्यो। चकित चित्त चारिहुँ दिसि फेर्यो॥
निस के पहर कलप से बीते। मिल्यौ न वीर मनोरथ रीते॥
बूझत खबर फिरै चहुं फेरी। ताकत दिसा दाहिनी डेरी॥
भूख प्यास की सुरत बिसारैं। जीते जुद्ध तऊ मन हारैं॥

दोहा।

मन हारै ढूँढत फिरै, कहां छतारे वीर।
मिलै आजु तो है भली, नातर तजों शरीर॥ ६॥

छन्द।

मति[4] सरीर तजिबे की कीन्ही। दीनदयाल बुद्धि उर दीन्ही॥
एक बेर फिरि फेरी दीजै। चलो चाह[5] लसगर की लीजै॥
चाह लेन लसगर को धाये। ऐकन तहँ ये बचन सुनाये॥
हम बीसक असवार हथ्यारी। संग फौज के करी तयारी॥
खेतु छाड़ि वैरी जब भागे। बहस बढ़ै हम पीछे लागे॥

१—बिडर = भगेड़। २—बिडरत = भागते हुए। ३—रनमंडल = रणभूमि।
४—मति = विचार। ५—चाह = खोज, समाचार।

गये दूर दल तें कढ़ि ज्यौंही। सूरज चल्यौ अस्त कौं त्यौंही ॥
तब बातैं मुरके सब भाई। सूरज सनमुख दिसा बताई ॥
तहाँ एक कौतुक हम देख्यौ। जाकौ अचिरज जात न लेख्यौ ॥

दोहा।

झीन कस्यौ इक दूर तें, देख्यौ तहाँ तुरंग।
ताके धरिवे को हिये सब कै बढ़ी उमंग ॥ ७ ॥

छंद।

बढ़ि उमंग धरिवे कौ धाय। जब नजीक[1] सेनक पर आये ॥
घाइल तहाँ तस्यौ रस भीने। कढ़ी कृपान हाथ में लीने ॥
ताकी छिनक मूरछा जागै। छिनक जोगनिद्रा सो लागै ॥
करै तुरी[2] ताकी रखवारी। ढिग न जान पावै मसहारी ॥
पूछ उठाइ चौंर[3] से ढारै[4]। जो ढिग आवै ताहि बिडारै ॥
चाहि धरन धाये बहुतेरे। पहुँचे निकट दाहिने डेरे ॥
जब तुरंग यह सनमुख धायौ। भज्यौ निडर सो जीवन आयौ ॥
यह सुनि सुभट छता के धाये। बिछुरे मनौ प्रान फिरि आये ॥

दोहा।

तौ लगि उदयाचल चढ्यो, सूरज सिंदुर रंग।
त्यौंही दौरी दूर लौं, सब की नजर अभंग ॥ ८ ॥

छंद।

सब की नजर दूर लौं दौरी। चीन्हा तुरी तबै सब पौरी ॥
देख्यौ तहाँ तुरी सिरझानौ। स्वामिधर्म कौ बाँधे बानौ ॥
इन तुरंग की करी बड़ाई। नौकरी तुमही सौं बनि आई ॥
राति अकेले चौकी दीन्ही। हमतें अधिक भक्ति तुम कीन्ही ॥
जब तुरंग इहि भाँति लड़ायौ[5]। सगो जान रोस बिसरायौ ॥

१—नजीक = नज़दीक, निकट। २—तुरी = घोड़ा। ३—चौंर = चँवर।
४—ढारै = हिलावै। ५—लँड़ायो = फुसलाया गया।

निकट जाइ प्रभु कों उन देख्यौ। जीवन जनम सुफल करि लेख्यौ ॥
मुजरा करि सबही सिर नायौ। चेतन देखि हिये सुख पायौ ॥
जल मँगाइ प्रभु कौ मुख धोयौ। फते सुनाइ समर श्रम खोयौ ॥

दोहा।

करी काइजा[1] तुरग की, सीच्यौ वदन बनाइ।
डेरा ल्याये खेत ते, प्रभु कौ पान खवाइ ॥ ९ ॥

छंद।

कोतल[2] भयौ तुरी संग आयौ। जगत विदित जाकौ जस गायौ ॥
बांधे घाइ कीर्त्ति जग जागी। दल में चाह चलन यह लागी ॥
सुनी नवाब चाह यह तैसी। आदि अंत तें बीती जैसी ॥
करी तुरी की बड़ी बड़ाई। ऐसौ करत भले जे भाई ॥
तातें ताकौ नाम नवीनौ। प्रगटि भले भाई कहि दीनौ ॥
जिन छत्रसाल करी घन घाई। तिनकी कछु चरचा न चलाई ॥
रीझन तैसी सब विसराई। बाँकनि अपनी फते लिखाई ॥
सुनत फतूह साह सुख पायौ। बढ़ि नवाब कौ मनसिब आयौ ॥

दोहा।

मनसिब बढ़्यौ नवाब कौ, दियौ साह सुख पाइ।
छत्रसाल के भुजन की, को न कमाई खाइ ॥ १० ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते देवगढ़जीति
वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

१—काइजा करना = घोड़े को लगाम चढ़ा कर उसका दूसरा छोर खींचकर उसकी पूँछ की जड़ में बांध देना।

२—कोतल घोड़ा वह कहाता है जिस पर जीन आदि तो कसी हो परंतु कोई सवार न हो और जो धीरे धीरे चलाया जाता है। इसे कोतल चलना कहते हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय।

छंद।

छत्रसाल पंचम रन कीन्हो। जैतपत्र कौ कहि लै दीन्हौ॥
आइ मिले सब विकट मवासी। चुक्यौ[1] अमल ज्यौं रैयत खासी॥
फिरि नवाब दच्छिन कौं धाये। छत्रसाल तिन संग सिधाये॥
जद्यपि विक्रम प्रगट जनायो। फल नवाब तैं कछू न पायो॥
तन मन भयौ अनख अधिकारौ। तुरकन तैं कब बन्यो हमारौ॥
पिता हमारे सूधा डाँडे। तुरकन पर अजमाये खाँडे॥
करी पातसाहन सौं पेंडै। पर्यौ रह्यौ मुगलन के पेंड़ै॥
पेड़[2] बुंदेलखंड की रापी। चंपति कीर्ति जगत मग्ध भापी॥

दोहा।

तिन चंपति के नंद हम, सीस नवावैं काहि।
हम भूले सेयौ वृथा, हितू जानिकै वाहि॥ १॥

छंद।

हितू जानि सेयौ अविवेकी। तातें कहौ होइ क्यौं नेकी॥
ताकौ हम ऐसौ फल पायौ। याके संग कसालौ[3] खायौ॥
हम तौ छत्रधर्म प्रतिपाल्यौ। रीझ न याकी माथौ हाल्यौ॥
मूरख के आगैं गुन गायौ। भैंसा बीन बजाइ रिझायौ॥
सुधा कमल थल माह लगायौ। ऊसर मैं पानी बरसायौ॥
खर के अंग सुगंध चढ़ायौ। बायस कौ घनसार[4] चुनायौ॥
बधिर कान मैं मंत्र सुनायौ। सूरदास कौं चित्र दिखायौ॥
कुलरा[5] करिवे कौं घन टेयै[6]। जो अविवेकी साहिब[7] सेयै॥

दोहा।

अविवेकी की सेइ कै, को न हियै पछिताइ।
बीजा बवै बबूर के, कहा दाख फल खाइ॥ २॥

१—चुक्यौ = पूरा प्राप्त हुआ। २—पेंड़ = मान। ३—कसालो = कष्ट
४—घनसार = कपूर। ५—कुलरा = कुल्हाड़ी। ६—टेयै = घिसियै।
७—साहिब = स्वामी।

छन्द ।

हिंदू तुरक दीन द्वै गाये । तिनसौं वैर सदा चलि आये ॥
लेख्यौ सुर असुरन कौं जैसो । केहरि करिन बखान्यो तैसो ॥
जबते साह तखत पर बैठे । तबते हिंदुन सौं उर पैठे ॥
महँगे कर तीरथनि लगाये । वेद देवाले निदर ढहाये ॥
घर घर बाँधि जंजिया लीने । अपने मन भाये सब कीने ॥
सब रजपूत सीस नित नावै । ऐंड़ करै नित पैदल धावै ॥
ऐंड़ एक सिवराज[1] निवाही । करै आपने चित की चाही ॥
आठ पातसाही झुकझोरै । सूबनि बांधि डाँड़[2] लै छोरै ॥

दोहा ।

ऐसे गुन सिवराज के, बसे चित्त में आइ ।
मिलिबोई मन में धर्यो, मनसिव तज्यौ बनाइ ॥ ३ ॥

छन्द ।

इतहि पातिसाही सब झूमै । उतहि सिवा के दल में घूमै ॥
इतकौ उतहि जान नहिँ पावै । जो निकसै सो सोस गँवावै ॥
दुहु दिसि होत खरी हुसियारी । चौकिन निस दिन होत तयारी ॥
तहाँ जान छत्रसाल विचार्यो । व्यौंत सिकार खेल कौ डार्यो ॥
तीछन अस्त्र मृगन पर बाहै । बन पहार दच्छिन के गाहै ॥
सुभट संग पटरानी लीन्ही । दुरगम गिरिन बसेरे कीन्हो ॥
भोर चलै सूरज दै बाये । दच्छिन दैहि अस्तगिरि आये ॥
निस में पीठि ध्रौर ध्रुव चाहै । बुधि बल सब कौ जात निबाहै ॥

दोहा ।

निसि में नक्षत्रनि चलै, दिन में भानु विचारि ।
लाग[3] दैहि सब साथ कौ, रोज मृगनि कौं मारि ॥ ४ ॥

---

[1]—सिवराज = शिवाजी ।   २—डाँड़ = दंड ।

[3]—लाग = भोजन की सामिग्री ।

छन्द।

घाटी नकी गिरिन की ठाढी। देखी तहाँ भीमरा[1] बाढ़ो॥
तरे बाँधि काठन के भेरा[2]। परे पार के[3] बन में डेरा॥
घन ही घन घाटी सब हेरि[4]। चौकी रही दाहिनी डेरी॥
कृष्णा चढ़ी देखकै त्योंही। उतरे पार भीमरा ज्योंही॥
उतरि पार सिवराज निहारे। सबकै भये अचभे भारे॥
तंह सिवराज सील अति बाढे। देखत भये दूर तै ठाढ़े॥
कुसल पूछि ढिग ही बैठारे। कैसे पहुँचे बीर छतारे॥
कही किसा[5] अपनी सब जैसी। चितु दै सुनी सिवा सब तैसी॥

दोहा।

सिवा किसा सुनिकै कही, तुम छत्रो सिरताज।
जीत आपनी भूम कौ, करौ देश कौ राज॥५॥

छन्द।

करौ देश कौ राज छतारे। हम तुमतैं कबहूं नहिं न्यारे॥
दौरि देस मुगलन के मारौ। दबटि दिली के दल संहारौ॥
तुरकन की परतीत न मानौ। तुम केहरि तुरकन गज जानौ॥
तुरकन में न विवेक विलोक्यो। मिलन[6] गये उनकौ उन रोक्यो॥
हमकौ भई सहाइ भवानी। भय नहिं मुगलन की मन मानी॥
छल बल निकसि देश में आये। अब हम पै उमराइ पठाये॥
हम तुरकनि पर कसी कृपानी। मारि करैंगे कीचक घानी॥
तुमहू जाइ देस दल जोरौ। तुरक मारि तरवारनि तोरौ॥

दोहा।

राखि हिये ब्रजनाथ कौ, हाथ लेउ करवार।
ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार॥६॥

१—भीमरा = भीमा नदी। २—भेरा = बेड़ा। ३—के = करके।
४—हेरी = देखी। ५—किसा = क़िस्सा = कथा, वृत्तान्त।
६—ज्ञात पड़ता है कि जब महाराज छत्रसाल शिवा जी से मिलने गये थे, यह वह समय था जब शिवा जी दिल्ली से औरंगज़ेब के षड्यंत्र से निकल कर दक्षिण पहुँच चुके थे।

छत्रनि की यह वृत्त बनाई। सदा तेग की खाइ कमाई॥
गाइ वेद विप्रन प्रतिपाले। घाउ एड़धारिन[1] पै घाले[2]॥
तेगधार में जो तन छूटै। तो रवि भेद मुकत सुख लूटै॥
जैतपत्र जो रन में पावै। तो पुहुमी के नाथ कहावै॥
तुम हो महावीर मरदाने। करिहो भूमि भोग हम जाने॥
जो इतही तुमकों हम राखें। तो सब सुजस हमारे भाखें॥
तातें जाइ मुगल दल मारो। सुनिये श्रवननि सुजस तिहारो॥
यह कहि तेग मँगाइ बँधाई। वीर वदन दूनी दुति आई॥

दोहा।

आदर सों कीन्हें बिदा, सिवा भूप सुख पाइ।
मिली मनो उर उमग में, भूमि भावती आइ॥७॥

छन्द।

मानहु भूमि भावती पाई। दृढ़ मसलहत[3] यहै ठहराई॥
साहस सिद्धि धरै मन माँहीं। फेरि भीमरा कृष्णा गाहीं[4]॥
दच्छिन में सूबनि को भेला। तहाँ सुने सुभकरन बुँदेला॥
जिन लोहे लहरात मझाये[5]। तीन खून तिन माफ कराये॥
तिनसों इन मिलिबो ठिक ठानो। हितू अनहितू चाहत जानो॥
इन अपनी जब खबर सुनाई। तब सुभसाहम[6] नो निधि पाई॥
मिले दौरि अति आदर कीनो। सबते सिरै बैठका दीनो॥
दिन दिन दिलजोई[7] करि राखै। हित सों बचन अमृत से भाखै।

दोहा।

कछुक द्योस सुभसाह के, पास रहे छत्रसाल।
जब उचाट देखे हिये, तब जान्यौ उन हाल॥८॥

१—एंड़धारिन = एँठवाले विरोधियों पर। २—घाले = चलाये।
३—मसलहत = मनसूबा, विचार। ४—गाही = पार की।
५—मझाये = पार किये। ६—सुभसाहम = शुभकरण।
७—दिलजोई = खातिर, ढाढ़स।

छन्द।

जानि हाल निज पास बुलाये। दिलजोई के बचन सुनाये॥
जो कहिये तो अरज लिखावे। जाके सुनत साह सुख पावे॥
चतुर उकील अरज लै जैहै। फेरि साह मनसिब लिखि दैहै॥
अरु जो हमै इहाँ सगु दीजै। तौ घर ही ठकुराइस[१] कीजै॥
यह सुनि छत्रसाल जो बोले। माहस सिंधि खजाना खोले॥
हम रुचि सौं मनसिब लै देखे। कछु दिन तुरक हितू करि लेखे॥
सेवा हू अपने पै नाही। हम न पतैहैं[२] इनकी छाही॥
जो घर ही ठकुराइस कीजै। तौ कैसे जग में जसु लीजै॥

दोहा।

ताते अब दिल्लीस के, दीरघ दलनि बिलोइ[३]।
अपनौ उद्दिम[४] ठानवी, होनी होइ सु होइ॥९॥

छन्द।

यह बिचार अपनो कहि दीन्हौ। सुनि सुभसाह अचंभौ कीन्हो॥
कलह पातसाहन सौं काँधै। ऐसौ मीर मीर को बाँधै॥
हिम्मत हिये धरी उन ऐसी। करिहैं यहै कहत है जैसी॥
ताते बिदा इन्हैं सब कीजै। इनको देखि प्रतिज्ञा लीजै॥
तौ लगि चाह चली ठिकठाई। सो राजन के घर घर आई॥
ठौर ठौर के गिरे दिवाले। सुनत हिये हिन्दुन के हाले॥
पातसाह फरमान पठायो। हुकुम फिदाईखाँ को आयो॥

दोहा।

नगर घोड़छे में सुनै, हिन्दू धरै गुमान।
ते तिन पत्थर पूजि कै, फैलावत कुफरान[५]॥१०॥

१—ठकुराइस = हुकूमत, प्रभुत्व। २—पतैहैं = विश्वास करेंगे।
३—बिलोइ = विचलित कर, हिला कर। ४—उद्दिम = पुरुषार्थ।
५—कुफरान = काफिरपन, अविश्वास।

छन्द ।

ऊँची धुजा देवालन राजे । घंटा संख झालरे बाजे ॥
छापे देत तिलक दै ठाढ़े । माला धरे रहत मन बाढ़े ॥
ऐसा हुकुम सरे[1] का नाही । क्यों पे करत चित्त की चाही ॥
जो कहुं कान संख धुनि आवै । मुसलमान तो भिस्त[2] न पावै ॥
सीसा औटि[3] कान जो नावै[4] । तो दोजख तें खुदा बचावै ॥
तातें ढाहि[5] देवाले दीजे । तिनके ठौर मसीदें[6] दीजे ॥
मुलना[7] तहाँ निवाज गुदारैं[8] । बाँग देहि नित सांझ सकारैं[9] ॥
न्याउ चुकावे फाजिल काजी । जाते रहे गुसाईं[10] राजी ॥

दोहा ।

सुनत कान फरमान यह, कही फिदाई खान ।
हुकुम चलाऊँ साह को, मेटि कुल्ल कुफरान ॥११॥

छन्द ।

ढाहि देवालय कुफर मिटाऊँ । पातसाह को हुकुम चलाऊँ ॥
जो कहुँ बीच बुँदेला आवै । तो हमसों वह फते न पावै ॥
जो मानी मन सूबनि मौजे । जोरन लगे ग्वालियर फौजे ॥
सहस अठारह तुरी पलानें[11] । धूमघाट पर धुज फहराने ॥
यह सुनि महावीर रस छायो । बान बाँधि धुरमंगद धायो ॥
पर्‌यो जाइ डेरन पर ऐसे । मत्त करिन पर केहरि जैसे ॥
सांगनि मारि फौज बिचलाई । पर फतूह धुरमंगद पाई ॥

१—सरे—शुद्ध रूप अर्बी—शरअ = मुसलमानी धर्म्मशास्त्र ।
२—भिस्त—शुद्ध रूप बिहिश्त = स्वर्ग । ३—औटि = पिघला कर ।
४—नावै = डाले । ५—ढाहि = गिरा । ६—मसीदें = मसजिदें ।
७—मुलना = मौलाना, मुल्ला । ८—गुदारैं = पढ़ें ।
९—सकारैं = प्रातःकाल । १०—गुसाईं = खुदा ।
११—पलानें = सजे ।

दोहा।

भज्यो फिदाईखाँ चली, रही कछू न सम्हार।
दिये पाग के पेच उहि, गोपाचल के पार ॥१२॥

छन्द।

खबर सुजानसिंह पर आई। जीते हु दल दहसत खाई ॥
अब की अनी गई टरि ऐसैं। यैर साह के बचियतु कैसैं ॥
अब जौ रोस साह उर आवै। तौ हम पै फौजें फरमावै ॥
यह उतपात उठ्यो रे भाई। भई जुझार सिंह की हाई ॥
तब तौ चंपति भयो सहाई। गिली[1] भूमि भुजबल उगिलाई ॥
चंपतिराई कहाँ अब पैयै। कैसे अपनौ बंस बचैयै ॥
साँस अघाई बुंदेला लीन्ही। फिरि फिरि चपति की सुधि कीन्ही ॥
ज्यौं यह फिकिर भूप उर आई। त्यौं हरकारन खबर सुनाई ॥

दोहा।

पंचम चंपतिराइ कौ, छत्रसाल बिरझाइ।
करन ढूँढ देसहिं चल्यो, मनसिब तज्यो बनाइ ॥ १३ ॥

छन्द।

जब यह खबर भूप सुनि पाई। चढ़ी उमगि अरु दहसत खाई ॥
जौ तुरकन पर कसी कृपानी। तौ कीनी मेरी मनमानी ॥
जौ मन में कछु दूज विचारै। तौ कृपान हमही पर भारै ॥
तातैं यनत प्रीति उर आनै। खोदि गाडियै बैर पुराने ॥
यह विचारि तँह पांच पठाये। जँह छत्रसाल सुनै ठिकठाये[2] ॥
पहुंचे जाई पवीर प्रवीनै। छत्रसाल सौ मुजरा कीने ॥
जथा उचित हित सौं बैठारे। बूझी कुसल कहाँ पगु धारे ॥
तब पांचन यह अरज सुनाई। फिरिर सुजानसिंह उर आई ॥

१—गिली = निगली हुई। २—ठिकठाये = ठहरे हुए थे।

दोहा।

पातसाह लागे करन, हिन्दुधर्म को नासु।
सुधि करि चंपतिराइ की, लई बुँदेला साँसु ॥ १४ ॥

छन्द।

त्योंही सुने अरंभ तिहारे। कह्यो भूप धन वीर छतारे ॥
ऐसी कछुक उमगि उर आई। निधि-अंजन[1] खोजत निधि पाई ॥
हमहिं तिहारे पास पठायो। कह्यो भूप यह वचन सुहायो ॥
जो कहुं वीर दृगनि भर देखों। अपने भये काज सब लेखों ॥
ताते भूपहिं देउ दिखाई। फेरि करो अपनी मनभाई ॥
मिटिहै फिकिर तिहारे मेटे। ऐसे सुजस और पर भेटे ॥
यह सुनि छत्रसाल तँह आये। नृपति सुजानसिंह जहँ छाये ॥
सुनत नृपति निज निकट बुलाये। मानो मनवंछित फल पाये ॥

दोहा।

मनवंछित फल से मिले, जब देखे छत्रसाल ॥
मिले उमगि उठि दुरहिं[2] ते, सिंह सुजान नृपाल ॥ १५ ॥

छन्द।

हित सों सिंह सुजान निहारे। बूझी कुसल निकट बैठारे ॥
कह्यो वंस के छत्र छतारे। तुम तैं ह्वैहैं काज हमारे ॥
जब तैं चंपति करयो पयानो। तब तैं परयो हीन[3] हिंदवानो[4] ॥
लग्यो होन तुरकन को जोरा। को राखे हिंदुन को तोरा[5] ॥
तुम चंपति के वंस उज्यारे। छत्र धरमधुर थंभनहारे ॥
तुम लीनी हिम्मत हिय ऐसी। आनि फेरिहो चंपति कैसी ॥

१—निधि-अंजन-ऐसा विश्वास है कि एक प्रकार का सिद्ध अंजन होता है जिसके लगाने से भूमि में गड़ी हुई संपत्ति प्रत्यक्ष देख पड़ने लगती है।

२—दुरहिं = द्वार पर से। ३—हीन = निर्बल।

४—हिंदवानो = हिन्दू जाति। ५—तुरा—शुद्ध रूप तुर्रा है = कलगी।

अब जौ तुम कटि कसौ कृपानी। तौ फिरि चढ़े हिन्दु मुख पानी॥
नृपति बचन चितु दै सुनि लीने। हँसि बोले छत्रसाल प्रबीने॥

दोहा।

महाराज हम हुकुम तें, बांधत हैं किरवाल।
तौलौं फिकिर न आइहै, जौलौं घट में प्रान॥ १६॥

छन्द।

जौलौं घट में प्रान हमारे। तौलौं कैसी फिकिर तिहारे॥
पै सब किसा आपु की जानो। कहैं कौन वो कथा पुरानी॥
जौ फिरि साह प्रपंच उठावै। तौ लरने घरही में आवै॥
तातैं सावधान हिय ह्वैकै। धरौ भार सो उठिहै लैकै॥
यह सुनि नृप नीचे दृग आने। फेर बचन बोले ठहराने॥
चंपतिराई तेग कर लीनी। ओप[1] बुँदेल बंस कौ दीनी॥
भुजन पातसाही झकझोरी। गई भूमि जुरि जुद्ध बहोरी॥
उदयाजीत बंस के जाये। हम पै सदा छोह करि आये॥

दोहा।

पंचम उदयाजीत के, कुल कौ यहै सुभाउ।
दलै दौरि दिल्लीस दल, जिमि दुरदम[2] बनराउ॥ १७॥

छन्द।

तिहि कुल छत्रसाल तुम आये। दई दिखाई नैन सिराये[3]॥
यौं दृग प्रेम हिये में लैकै। बैठे बीच बिसुंभर ह्वैकै॥
राखी तेग बिसुंभर आगे। कीन्ही सौंह सांच उर पागे॥
सब जिनके दिल में छल आवै। लोक कृतघ्नो के तिन पावै॥

१—ओप = कान्ति, चमक।   २—दुरदम = दुर्दमनीय, कठ०।

३—सिराये = शीतल हुए।

अब जो पाप हिये में लैहै। तिनको दंड विसुंभर दैहै॥
यह कहि प्रीति हिये उमगाई। दिये पान किरवान बधाई॥
दोऊ हाथ माथ पर राखे। पूरन करौ काज अभिलाखे॥
हिन्दुधरम जग जाइ चलावौ। दौरि दिलीदल हलनि हलावौ॥

दोहा।

अभै देंहु निज वंस कौ, फते लेहु फरमाह।
छत्रसाल तुम पै सदा, करै विसुंभर छांह॥ १८॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते नृपसुजानसिंह
मिलापो नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

बारहवाँ अध्याय।

छन्द।

यौं असीस नरपति जब दीन्हो। माथे मानि छतारे लीन्हो॥
यहाँते चले बिदा ह्वै ज्यौंही। उठ्यो फरक दच्छिन दृग त्यौंही॥
चलि नौरंगवादहि[1] आये। पैठन सहर सगुन सुभ पाये॥
देखे तहाँ बीर बलदाऊ। नज़र मिलत उठि मिले अगाऊ[2]॥
भेटे प्रीति परस्पर लीन्ही। भोजन थार एकही कीन्ही॥
मिलि बैठे तँह दोऊ भाई। राम कृष्ण कैसी छवि छाई॥
छत्रसाल पंचम त्यौं बोले। मंत्र विचार हिये के खोले॥
दाऊ सब मनसिब हम छांड्यौ। विग्रह हिये साह सौं मांड्यौ॥

दोहा।

तातें अब तुमहू चलौ, ह्वैहै भलो इलाज।
एक मंत्र ह्वैकै हितू, साधत हैं सब काज॥ १॥

छन्द।

राम कृष्ण भुवभार उतारे। राम लषन मिलि रावन मारे॥
चंपतिराइ सुजान सयाने। एक मंत्र ह्वै अरि दल भाने॥
त्यौं हम तुम मिलि दोऊ भाई। तुरकन पै कीजै घनघाई[3]॥
जुद्ध जीति बसुधा बस कीजै। दै दान जगत जस लीजै॥
यह सुनि बलिदियान[4] अनुरागे। लच्छन कहन बछिन के लागे॥
बिपत मांह हिम्मत ठिकठानै। यहती भये छमा उर आनै॥
बचन सुदेस[5] समलि मद्दि भाये। सुलस[6] जोरबे मैं रुचि [illegible]॥
जुद्दन जुरै अकेले सौ से। सहज सुभाइ बछिन के [illegible]॥

१—नौरंगाबाद = धांतरी के निकट नगर विशेष है। २—अगाऊ = आगे से।

३—घनघाई = प्रहार। घन भारी हथौड़े को कहते हैं। अभिप्राय यह है कि उन पर ऐसे ऐसे कठिन प्रहार करें जो घन की चोट के समान हों।

४—बलिदियान = बलदाऊ। ५—सुदेस = समुचित।

६—सुलस = एक प्रकार का लोहा। यहाँ शस्त्र से अभिप्राय है।

दोहा ।

ते सुभाव तुम में सबै, छत्रसाल कुलथंभ ।
करन विचारै और को, एते बड़े अरंभ[1] ॥ २ ॥

छन्द ।

एते बड़े अरंभ तिहारे । तुम ते हम ह्वै है क्यों न्यारे ॥
पै विचार मन में यह आनो । फेर अरंभ करो जे जानो ॥
मानस आप काज को दौरै । करता जो रचि राखी औरै ॥
तो सब काज वृथा ह्वै जाही । होती काके चित की चाही ॥
जानत कौन देहधर ऐसी । प्रापति हानि कौन को कैसी ॥
यह करता अपने कर राखी । सो जग में सबही को साखी ॥
ताकी कछु इसारत पैये । तो दृढ़ मंत्र यहै ठहरैयै ॥
बलि की कही छता सुनि लीनो । बोले बुद्धि बढ़ाइ प्रवीनो ॥

दोहा ।

चाहत जो करतार की, कछु इसारत साखि ।
तो द्वै चिठी उठाइये, प्रभु के आगे राखि ॥ ३ ॥

छन्द ।

कै समसेर साह सों बांधे । कै छाड़ो मनसिब हम कांधे ॥
जौन उठाइ चिठी प्रभु दैहैं । माथे मानि वहै हम लैहैं ॥
यह विचार कीनो अनुरागे । चिठी लिखाई धरि प्रभु आगे ॥
तब अजान[2] सो एक मँगाई । तेग बांधिवे की उठि आई ॥
तब प्रतीत बलदाऊ कीनी । माथे मानि चिठी वह लीनी ॥
कह्यो धन्य छितिछत्र छतारे । तुम कुलचंद हिंदुगन तारे ॥
अब हमसों रन रुपै[3] न कोऊ । चलिये एक चित्त मिलि दोऊ ॥
जो दृढ़ मंत्र हिये ठहराये । उतरि नर्मदा देसहिं आये ॥

१—अरंभ = आरंभ । २—अजान = अबोध बालक । ३—रुपै = ठहरेगा ।

दोहा।

संवत सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस।
लगत बरष बाईसई, उमड़ चल्यौ अवनीस ॥ ४ ॥

छन्द।

गहनौ[1] कठिन ठौर लै राख्यौ। दिल्लीदल जीतन अभिलाख्यौ ॥
कीनै सुभट खरच दै साजे। पांच तुरंग संग कौ साजे ॥
प्रथम भले भाई उर आनै। लच्छो मृगढीला मरदानै ॥
घोर भभूखा दामिन घोरी। जुरै न जोर पौन गति थोरी ॥
ये सब सुभट संग के जानौ। कुंवर नरायनदास बखानौ ॥
गोविंदराइ पँत पुरवारे। सुंदरमनि पमार अनियारे ॥
दलसिंगार राममनि दौवा। मेघराज परिहार अगौवा ॥
धुरमंगद बगसी[2] मरदानौ। खांगर[3] धरौ किसोरी जानौ ॥

दोहा।

प्रबल मिश्रदलसाह ज्यौं, त्यौं हरकृष्ण प्रसंस।
लच्छे राउत राममनि, मानसाह हरिबंस ॥ ५ ॥

छन्द।

मेघी अरु परदौन दयाले। फतु भाट बगसीमनि[4] पाले ॥
फोजे मियां समर अति सूरौ। लोहलराक सिरोमनि पूरौ ॥
पंचल टोमर खरगे वारी। मोदी पतै सबै हितकारी ॥
पांच सवार पचीस पियादे। विरचे विकट सहज में सादे ॥
चले विसहटी तै सजि साऊ। बगुदा गये जहां बलदाऊ ॥
बलदाऊ हम करी तैयारी। तुमहुं चलौ करौ असवारी ॥
त्यौं बल कही विजौरी जैयै। रतनसाह को संग चलैयै ॥
छत्रसाल त्यौं गये विजौरी[5]। भेटे रतनसाह भर कौरी[6] ॥

१—गहनौ—भाता के आभूषण। २—बगसी = ख़ुद रूप व्यक्ती है।
३—खांगर = खंगार (जाति विशेष)। ४—बगसीमनि पाले = बख़्शिशों का पला हुआ, दान से पला हुआ। ५—विजौरी = स्थान विशेष, बिजावर के निकट है।
६—कौरी = गोद, अंक।

दोहा ।

छत्रसाल बोले सुनौ, रतनसाह सिरमौर ।
भुमियाचट उर में धरौ, करौ देस कौ दौर ॥ ६ ॥

छंद ।

दौर देस दिल्ली के जारौ । तमकि तेग तुरकन पर झारौ ॥
हम सेवा करिहैं अनुरागे । लड़िहैं उमगि तिहारे आगे ॥
जुद्ध वृत्ति छत्रिन की गाई । तातै यह मेरे मन आई ॥
अपनौ वर्नधर्म प्रतिपालौ । साहन के दल दौरि उसालौ[1] ॥
जे भुमिया[2] हम में मिलि रैहैं । तेई संग फौज के ह्वैहैं ॥
जे न लागिहैं संग हमारे । दोष न लागै तिनके मारे ॥
जे उमराव चौथ भरि दैहैं । तेई अमल[3] देस को पैहैं ॥
जिन में पेड़ जुद्ध की पावौ । तिनपै उमगि अस्त्र अजमावौ ॥

दोहा ।

तेग छाइहै देस में, देस आइहै हाथ ।
शत्रु भागिहैं मान भय, लोग लागिहैं साथ ॥ ७ ॥

छन्द ।

रतन कही यह क्यों बनि आवै । बिना भीत[4] को चित्र बनावै ॥
धन बल उदभट जो धन जाके । बिग्रह बनै भरोसौ ताके ॥
को रच्छक कौने मत दीनो । को बलवंत सहायक लीनो ॥
छता कह्यो रच्छक सो जानौ । सोइ बलवंत सहायक मानौ ॥
जो प्रभु तिहु लोक कौ स्वामी । घट घट व्यापे अंतरजामी ॥
सो मति देत नरनि कौं तैसी । होनहार आगै कछु जैसी ॥
जिनकौ जौन वृत्ति प्रभु दीनी । ताही मांह सिद्धि तिन लीनी ॥
आवत हमैं भरोसौ ताकौ । करुना सिंधु बिरद[5] है जाकौ ॥

१—उसालौ = छिन्न भिन्न कर दो । २—भुमिया = भूम्याधिकारी, जिमीदार ।
३—अमल = कर । ४—भीत = दीवाल, स्थल है ।
५—बिरद = कीर्ति, यहां यथार्थ गुणमय नाम से अभिप्राय है ।

दोहा ।

करुनानिधि प्रभु एक है, जाते यह संसार ।
ताकौ सेवन सार है, जग है और असार ॥ ८ ॥

छन्द ।

सो प्रभु है ऐसौ हितकारी । संगहि रहै करै असवारी ॥
सेवक जहां कहूं को धावै । तहां संग ही लाग्यो आवै ॥
जहां सेवकहिं निद्रा लागी । साहिब तहां संग ही जागी ॥
ग्राह गह्यो हाथी जब हारयो । कमल चढ़ावत ही निरधारयो ॥
गाढ़ परे प्रहलाद बचाये । खंभ फारि नरहरि कढ़ि आये ॥
द्रुपदसुता की लज्जा राखी । वेद पुरान सिमृति[1] सब साखी ॥
बहै साँकरे[2] होत सहाई । अति अद्भुत वाकी गति गाई ॥
रीती भरै भरी ढरकावै । जो मन करै तो फेर भरावै ॥

दोहा ।

जब जैसो चाहै करयो, तब तैसी मति देइ ।
जो जैसो उद्यम करै, सो तैसो फल लेइ ॥ ९ ॥

छन्द ।

चारि बरन जे जग में आये । सबकों प्रभु उद्यम ठहराये ॥
हाथ पांइ उद्यम कौं दीनौ । तातैं उद्यम करत प्रबीनौ ॥
उद्यम तैं संपति घर आवै । उद्यम करै सपूत कहावै ॥
उद्यम करै संग सब लागी । उद्यम तै जग में जसु जागी ।
समुद्र उतरि उद्यम तैं जैयै । उद्यम तै परमेश्वर पैयै ॥
जब यह सृष्टि प्रथम उपजाई । तेंव वृत्ति क्षत्रिन सब पाई ॥

१—सिमृति = शुद्ध रूप स्मृति है । २—साँकरे = विपत्ति में ।

जितनी जाहि बीरता दीनी । तितनी पुहुमि जीति तिहि लीनी ॥
तातै दौर देस कौ कीजे । पुहुमी जीति तेगबल लीजे ॥

दोहा ।

जदपि मंत्र छत्ता कह्यो, वेद पुरान प्रमान ।
तदपि रतन मान्यौ नहीं, होनहार बलवान ॥ १० ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते रतनसाह-छत्रसाल
संवादो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवाँ अध्याय ।

छन्द ।

प्रथम धीरता उमगि बढ़ाई । धर्मधर्म रुचि चित्त चढ़ाई ॥
राजनीति की रीति बताई । ईश्वर की ईश्वरता गाई ॥
फिरि उद्यम की करी बड़ाई । रतनसाह मन कछु न आई ॥
तब मन माह भये पछिताये । रोज अठारह वृथा गमाये ॥
त्यों सोवत सपनो हरि दीनो । समाधान नीकी विधि कीनो ॥
अंतरिच्छ बोले बरबानी । छत्रसाल काढ़ि कसौ कृपानी ॥
त्यों बसुधा बनिता ह्वै आई । हाथ जोड़ यह अरज जनाई ॥
हौं रहिहौं बस भई तिहारे । मन क्रम बचन कहत निरधारे[1] ॥

दोहा ।

यह सुनिकै ताकी तहाँ, करी निमा छत्रसाल ।
छुवन ठौर अनिमिष मनौ, भई पूर्व दिसि लाल[2] ॥ १ ॥

छन्द ।

भई पूर्व दिसि बदन ललाई । बिहसत कमलमुकुल छवि छाई ॥
तिमिर समूह दिसनि तैं भागे । बिछुरे मिले कोक अनुरागे ॥
उठे जागि छत्रसाल प्रवीनै । तुरत जीन घोरन पै कीनै ॥
मुरली मधुरध्वनि तँह बाजी । चली सिपाह संग उठि ताजी ॥
हाँते चले कूच करि ज्योंही । मिले आइ बलदाऊ त्योंही ॥
वो डेरा मैं डेरा पारे । डोर बजाइ बुंद के द्वारे ॥
छत्रसाल की खबर सुहाई । बाकीखान . बुँदेले पाई ॥
आगे लैन दूर तें आये । महिमानी करि आनँद छाये ॥

१—निरधारे = निश्चय करके । २—भई पूर्व दिसि लाल = प्रभात हो गया ।

दोहा।

वाकीखाँ सौ मिलि छता, दई दुंद[1] की नीउ।
लंक लैन कौ राम ज्यौं, किये मित्र सुग्रीउ॥ २॥

छन्द।

तहाँ आइ त्यौं मिल्यौ लवेरौ। कुँवरराज रनधीर धँधेरौ॥
तव सवहिनि मिलि मंत्र विचारयौ। सव कौ छत्र छता निरधारयौ॥
तँह सम अंस हुते द्वै साऊ[2]। छत्रसाल पंचम वलदाऊ॥
वलि दिवान त्यौं परम प्रवीने। सरस विचार चित्त में लीने॥
सौ के अंस वरावर कीने। तिन में पाँच जिठाई दीने॥
सौ में पैतालीसै आये। छत्रसाल ने पचपन पाये॥
या विधि अंस[3] दुहुनि ठहराये। उमगे प्रेम परस्पर छाये॥
छत्रसाल त्यौं परम प्रवीनै। सील सुभाइ सवै वस कीनै॥

दोहा।

एक मंत्र ह्वैकै तहाँ, वढ़े परस्पर प्यार।
काँधे वर विक्रम सवनि, वाँधे उमगि हथ्यार॥ ३॥

छन्द।

त्यौं यह खवर सुनत चितचाही। पहुँचे धाइ कदीम[4] सिपाही॥
तीस अस्वार सैन तँह साजी। उमड़ी तुपक तीन सै ताजी॥
प्रथम दौर कै तँह इलाज के। जँह सरीक हे कुँवरराज के॥
गह्यौ[5] धँधेरन दुरग आसरो। गाँउ गढ़ी फो हृढ़ दुगासरौ[6]॥
इतहि वीर छत्रसाल उमंडे। उतहि धँधेरन रनरस मंडे॥
दुहुँ दिसि तुपक तराभर[7] माची। उदभट भीर वीररस राची॥
पसर करी छत्रसाल वुँदेला। टूट्यो गाँउ प्रथम वगमेला[8]॥
मारि गाँउ मनभायो कीनौ। पहिलौ वैर वाप कौ लीनौ॥

१—दुंद = युद्ध। २—साऊ—शाह = शिरोमणि। ३—अंस = भाग। ४—कदीम = प्राचीन। ५—गह्यो धंधेरन दुरग आसरो = धंधेरों ने कोट का आसरा लिया अर्थात् कोट में जा घुसे। ६—दुगासरो = छिपाव। यह शब्द दुगना से जिसके अर्थ बुंदेलखंडी में छिपना है बना है। ७—तराभर = तड़ातड़। ८—वगमेला = आक्रमण।

दोहा।

खेत छाँड़ि बैरी भगे, गढ़ी गही सफराइ।
धरमद्वार[1] माँग्यो तबै, पाये प्रान बराइ ॥ ४ ॥

छन्द।

तब हितु आइ धँधेरन कीनौ। तुरत ब्याह कौ बीरा दीनौ ॥
बीरा लै रतनागर मारचौ। धाकनि कँपि उठी दिसि चारचौ ॥
दौरि बेढ़[2] सिरौंज कौ कीन्हो। कुंदा के गिरि डेरा दीन्हो ॥
तहाँ केसरीसिंह धँधेरौ। मिल्यौ आइ करि नेहु घनेरौ ॥
त्यौंही तेज छता के फैले। परी सिरौंज सहर में पेलै ॥
तँह उमराउ हते जगजानै। महमद हासिम नाम बखानै ॥
आनँदराइ चौधरी बंका। दीनौ दुहुन जुद्ध कौ डंका ॥
विकट पठान जुद्ध कौ साजै। धौंसा निकट जुझाऊ बाजै ॥

दोहा।

धौंसा धुनि सुनि कै छता, दई फौज फरमाइ[3]।
पाइ रोपि बाँध्यौ उमड़ि, घाट[4] तोपचिन धाइ ॥ ५ ॥

छन्द।

प्रबल पठान जुद्धरस छाये। करै विचार हला कौं धाये ॥
सनमुख बजी बँदूखैं ज्यौंही। ये विचारि चित आये त्यौंही ॥
जदपि पठान सुद्ध पिल जैहैं। गोलिन वृथा बजाये[5] ह्वैहैं ॥
तातैं रहै फौज मन बाढ़ी। सनमुख लाग लगाये ठाढ़ी ॥
हम चौघट[6] ह्वै हल्ला कीजै। तेगनि मार फते कर लीजै ॥
चौघट[6] धसे घाट इन छड्यौ। छत्रसाल लै तुपक[7] उमंड्यौ ॥
तुपकन मारि करे मनभाये। खेत पठान पचासक आये ॥
त्यौं वैरिन दिल दहसत खाई। बिहरी फौज सिरौंजहि आई ॥

१—धरमद्वार माँगना = धर्म की दुहाई देकर गढ़ को खाली करके जीवित निकल आने के लिये शत्रु से मार्ग माँगने की प्रार्थना करना।

२—बेढ़ करना = गाय बैल आदि पशु छीन लेना। ३—फरमाइ दई = आज्ञा दी। ४—पाट रोपना = रास्ता रोकना। ५—बजाये होना = मारा जाना। ६—चौघट = घुराइ। ७—तुपक = बंदूक।

दोहा ।

विडरी फौज सिरौंज को, दिल में दहसत खाइ ।
चंड[1] तेज छत्रसाल को, रह्यो दिसनि में छाइ ॥ ६ ॥

छन्द ।

छत्रसाल पंचम रन जीत्यौ । तुरकनि पर परलो[2] सो बीत्यो ॥
मारि फौज औड़ेरहि[3] आये । त्यौरी त्यों रन ते उठि धाये ॥
लूटि गांव कीने मनभाये । पकर पटैल[4] जैत को ल्याये ॥
लई लूट घोरी अति चांडी । उखरी गढ़ी न सामा छांडी ॥
छत्रसाल करुनारस मंडे । जैत पटैल डांड बिन छंडे ॥
ह्वांते फिर औड़ेरहि आये । चंड प्रताप चहूं दिसि छाये ॥
महमद हाशिम संका मानी । चपे[5] चौधरी उतर्यो पानी ॥
रहे ससाइ[6] सांस लै दोऊ । बाहर सहर न आवै कोऊ ॥

दोहा ।

त्यों धामौनी में सुनै, खालिक जाको नाउ ।
बैठ्यो जोर मवास कै, थानै दै हर गांउ ॥ ७ ॥

छन्द ।

सो जीतन छत्रसाल विचार्यो । गौनो गांउ दौर करि मार्यो ॥
घेरि पिपरहट में ते कूटे । भगे थनैत तुरंगम लूटे ॥
धौरासागर डेरा पारे । गंजि गरब खालिक के डारे ॥
तहां गौंड़ जोरे बनबासी । मिल्यो दामजीराइ मवासी ॥
ह्वांते हनूटूक कों आये । हनूमान के दरसन पाये ॥
धामौनी सों लई लराई । भेड़ा मारि पथरिया लाई ॥
लखरौनी बड़िहारन मारी । रहे रामठां जगथरि जारी ॥
गिरिवर मार खेभरा मार्यो । सोखि सुनौदा पल में गार्यो ॥

१—चंड = प्रचंड । २—परलो = प्रलय । ३—औड़ेरी = गांव, राठ के निकट । ४—पटैल = ज़मीदार । ५—चपे = झंपे, लजाने । ६—ससाइ रहे = भयभीत हो गये ।

दोहा।

रहे सिदगवा गांउ के, बिकट पहारनि जाइ।
धामौनी तें जोर दल, खालिक पहुंच्यो धाइ ॥ ८ ॥

छन्द।

धामौनी तै खालिक धाये। डंका आन नजीक बजाये ॥
उमड़ि चल्यौ छत्रसाल बुँदेला। तुरकन के घोड़े धगमेला ॥
तब दिल में दहसत अति जागी। मुरकि फौज खालिक की भागी ॥
चले फौज चंद्रापुर जारयो। दौर मुलक मेंहर[1] कौ मारयौ ॥
छाती फेरि रानगिरि[2] लाई। खालिक चमू तहां चलि आई ॥
उमडि रानगिर में रन कीन्हो। खालिक चालि मानि मै दीन्हो ॥

दोहा।

लये नगारे ऊँट हय, लूट निसान बजार।
खालिक बचे बराइ जब, माने तीस हजार ॥ ९ ॥

छन्द।

तीस सहस खालिक जब डाडे। लूटि पाटि अपने कर छाडे ॥
छूटे डांड मानके ज्यौंही। उठ्यौ दस्त[3] खालिक कौ त्यौंही ॥
करै देस में कही न कोई। खासिल[4] डांड कहांते होई ॥
जब छत्रसाल बीर यह जानी। तब बरात बासा पर मानी ॥
दागी केसौराइ तहांकौ। जाहिर जोर मवासी बांकौ ॥
तहां बरात लिवाइ पठाई। देखत अति धाकै रिस आई ॥
बांधि बरात डारि उठि दीनो। तुरतहि तमकि तेग कर लीनो ॥
फिरी बरात बुँदेला जानी। तब बासा पर फौज पलानी ॥

दोहा।

ठिल्यौ बुंदेला घंब[5] दै, बासा घेरयो जाइ।
त्यौंही सनमुख रन भिर्यौ, दागी बड़ो बराइ ॥ १० ॥

१—मेंहर = सागर के निकट एक राज्य है। २—रानगिर = सागर के मार्ग में देवहर नदी के तट पर एक स्थान है जहाँ हरसिद्धि देवीजी का मंदिर है और जो तीर्थ स्थान समझा जाता है। ३—दस्त = अधिकार।
४—खासिल = प्राप्त। ५—घंब देकर = घोर नाद करता हुआ।

छन्द ।

खुरी कराइ तुरी चढ़ि धायो । फेरत सहिथी बलगत आयो ॥
छत्रसाल इत कौन कहावै । सो मेरे सनमुख कढ़ि आवै ॥
देखौं समर छत्र पन ताको । कढ्यो नाम जुद्धन में जाको ॥
उमड़ि वचन ज्यों बलमि सुनायो । त्यों छत्रसाल तुरग झमकायो[1] ॥
झमकि तुरंग भयो कढ़ि सोहैं । बोल्यो वचन वदन विहसोहैं ॥
पहिल घाउ घालो तुम आछे । हिये [2]हौस रहि जैहै पाछे ॥
जो रन बहस परस्पर बाढ़ो । देखत फौज दुहू दिस ठाढ़ो ॥
त्यो उहि बहक[3] सैहथी बाही[4] । बच्छ[5] आड़ि छत्रसाल सराही ॥

दोहा ।

बच्छ आड़ि बरछी रुप्यो, छत्रसाल रनधीर ।
त्योंही सांगि उछाल कर, हुमकि[6] हन्यो वह वीर ॥ ११ ॥

छन्द ।

अरि के सांगि दुहूं दिस साली[7] । तऊ न वाकी हिम्मत हाली ॥
फेरत सांग सामुहो आवै । पै कृपानु को घाउ[8] न पावै ॥
अरि की चोट मान त्यों कीन्हीं । चेहू तेग मान मुंह लीन्हीं ॥
त्यों सर दीपसाह को छूट्यो । तऊ न वीर समर तें छूट्यो ॥
तब छत्रसाल करी मनभाई । हुमकि सांगि दुहु हस्त हलाई ॥
ठेलाठेल हलाइ गिरायो । वीर बरआह खेत वह आयो ॥
जो रन में कपि रुद्र रिझायो । दागी कों सिर काटि चढ़ायो ॥
लूटि लाट वासा सब लीन्हो । बड़ी पटारी को मन कीन्हो ॥

१—झमकायो = चमकाया, तीव्र किया । २—हौस = इच्छा, उमंग ।
३—बहक = उछल कर । ४—बाही = साधी । ५—बच्छ = ढाल ।
६—हुमकि = आवेश से । ७—साली = छेद दी ।
८—घाव—दांव ।

दोहा।

घड़ी पटारी मारिकै, फतै लई तनकाल।
आकीधां के देस कौ, पहुंचे श्री छत्रसाल ॥१२॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते केसौराइ-दांगी-वध-वर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

चौदहवां अध्याय।

छन्द।

मधु दिन तहाँ मुकाम बजायो। सुरह्यो घाउ चाउ चित आयो॥
छरी भीर छत्रसाल बुँदेला। सुभट छ सातक आपु अकेला॥
सहज सिकार खेल रस पागे। बनबराह मृग मारन लागे॥
सैद बहादुर हिम्मत कीनी। खबर जसूसनि सैां सब लीनी॥
दल सजि उचकि आनि हंकारयो। खलभल सहज खेल में डारयो॥
ज्यों हरिनन की होत हँकाई। उचका उठै बाघ बिरझाई॥
त्यौंही सैदबहादुर धायैा। डंका निकट नगीच बजायो॥
सुनि डंका छत्रसाल रिसाने। छत्रधरम को बांधे बाने॥

दोहा।

फौज बहादुर सैद की, परी फंद में आइ।
बाके॥ थल बीरन दई, गोलनि गोल गिराइ॥१॥

छन्द।

गिरी गरज गाजै सो गोली। डगडग चमू अरिन की डोली॥
मुगल पठान खेत में जूझे। बैरिन ब्यौंत चाल के सूझे॥
चमकि चाल तुरकन त्यौं दीनो। जीतपत्र छत्ता तंह लीनो॥
हांतें उमड़ि बराबा मारयो। धूमघाट पर डेरा पारयो॥
गोपाचल पै खलभल माच्यो। सैदमनोवर त्यौं रिस राच्यो॥
जोरी फौज निसान बजाये। धूमघाट पर उमड़त आये॥
त्यौं छत्रसाल बीररस बाढ़े। सनमुख गये जूझ कैा ठाढ़े॥
माची मार रुद्र अनुराग्यैा। बाजन सार सार सो लाग्यैा॥

दोहा।

सेल्ह डवेलनि ठेल दल, पिले बुँदेला वीर।
महा भयानक भांति लख, पगनि डगमगे मीर ॥२॥

छन्द।

डगे मीर तजि खेत पराने। पिले बुँदेला रन सरसाने॥
मुगल पठान हने जे जूरे। सेद सहर भीतर लै लूटे॥
सहर लूट कीनी मन भाई। गढ के गेरत रहटो लाई॥
लूटि ग्वालियर मुल्क उजारयो। ह्वांते दौरि कजियो मारयो॥
गिरिवर मारि करे अरि हीने। कटिया केनव डेरा कीने॥
त्यों महमद हाशिम चलि आये। सग अनंद चौधरी धाये॥
पिले उमंडि तीन सजि गोलै। तीन्यो मार खग्ग झक झोलै॥
ते आवत छत्रसाल निहारे। अरुनि उमडि तिहूं दिस मारे॥

दोहा।

तीन्यो गोल विदार कैं, फतै लई छत्रसाल।
सुधि करि त्रिपुर सँहार की, नाचे भूत बिताल ॥३॥

छन्द।

ह्वांते हनूटूक को आये। भयो ब्याह त्यों बजे बधाये॥
अति आतंक चहू दिसि फैले। भय बदन बैरिन के मैले॥
हीन फतूह लगी मनमानी। चली चौथ चुकि जग में जानी॥
सुनत चाह कुंवरन मन कीनो। सबन संग छत्रसालहि दीनो॥
रतनसाह त्योंही चलि आये। अमर दिवान खबर सुनि धाये॥
सबलसाह हितु आये कीनै। वेसौराइ मिले मनु लीनै॥
धारू चरु कीरति मन भाये। दीप दीवान दीप छबि छाये॥
मिले रामजू समर सूरे। पृथीराज बल बिक्रम पूरे॥

दोहा ।

माधोराइ बसंत अरु, उदैभान त्यौं बर्न ।
अमरसिंह 'परताप तँह, मिले चंद अरु कर्न ॥४॥

छन्द ।

अब सब सुनै। साहिगढ़[१] वारे । जिन रन मध्य अस्त्र झुक भारे ॥
आइ इन्द्रमनि मिले अगाऊ । उग्रसेन सम काहि गनाऊ ॥
जगत सिंह बानैत बुँदेला । रन मॅ करत प्रथम बगमेला ॥
सकतसिंह त्यौं गुननि गरूरे । दान कृपान बुद्धि बल पूरे ॥
जामसाह अंगद मरदाने । मनसिब छांडि मिले जग जाने ॥
आये परबतसिंह प्रवीने । रूपसाह त्यौं रन रस भीने ॥
देव दिवान प्रेम उर बाढ़े । भारत साह समर अति गाढ़े ॥
चंद्रहंस अरिकुल को घाती । मिल्यौ सुजानराइ को नाती ॥

दोहा ।

दूजे भारतसाह त्यों, राइ अजीत बसंत ।
बलि दिवान के नंद द्वै, चित्रांगद जसवंत ॥५॥

छन्द ।

रामसिंह जैसिंह बखाने । जादैाराइ करनजू जाने ॥
गाजीसिंह कटेरा[२] वारे । द्वै करनाल दुवन जिन मारे ॥
जगतसिंह मुनि कविन प्रमाने । त्यों गुपालमनि परम सयाने ॥
ग्रैार अनेक कहां लगि गाऊँ । गनती सत्तर कुंवर गनाऊँ ॥
केते सगे सोदरे सारे । ग्रैार पमार अँधेरे भारे ॥

१—साहिगढ़ = महाराज हृदयशाह के राज्याधिकारी पन्ना नरेशों की एक शाखा का राज्य साहिगढ़ में था परन्तु अब वह राज नहीं रहा ।

२—कटेरा = यह एक राज्य झांसी प्रान्त में है । यहां का राज ओड़छाधीशों के वंश की एक शाखा है । यहां के अधीश्वर बड़े वीर

नाते ममा फुफू के जेते। मिले आइ छत्रसालहिं तेते॥
उच्च निसान दलनि फहराने। धौंसा धुनि घन से घहराने॥
उमडि चली गोलन पर गोलैं। दल के भार फनी¹ फन डोलैं।

दोहा।

लगन लगे कुल कटक में, तनू तुग कनात।
झंडा गड़े बज़ार में, अति ऊँचे फहरात॥६॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सैदबहादुर जुद्ध या कुंवरन कै आगमन वर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

पन्द्रहवां अध्याय।

लागी चमू चढ़न चतुरंगै। ज्यों जलनिधि की तरल तरंगै॥
ऐंड़दार[1] जितही सुनि पावैं। फौजैं उमड़ि तहां को धावें॥
वासा अरु बृंदावन वारचो। प्रलै पथरिया ऊपर पारचो॥
दीनी लाइ निदर निदराई। फौज बहुत राई पर आई॥
पहिली पसर रनेही टूट्यौ। कोटा कूट दमोयो लूट्यौ॥
धामोनी में धूम मचाई। जब न और की बचै बचाई॥
तब खालिक ऐसी मति कीनी। वाकन खबर साह को दीनी॥
लिखो बहादुरखां को ऐसैं। बादर फट्यौ ढाकिये कैसैं॥

दोहा।

चहूं चक्क गमड़े फिरत, बड़े बुँदेला वीर।
अमल गये उठि साह के, थके जूझ करि मीर॥१॥

छन्द।

कोका खबर हजूर जनाई। वहै लिखी वाकन में आई॥
सुनत साह मन में अनखानें। भेजे रनदूलह मरदानें॥
सँग बाइस उमराइ पठाये। आठक लिखें मदती टाये॥
विदा भये मुजरा करि ज्योंही। वजे निसान कूच करि त्योंही॥
दतिया अरु ओंडछौ बगौनी। सजी सिरोंज कोंच धामोनी॥
उमड़ि इंदुरखी चढ़ी चँदेरी। पिलि पाडोर जुद्ध की टेरी॥
ये मुदती उमड़ि चढ़ि आये। मनसिबदार तीस टिक टाये॥
करचो गढ़ा[2] कोटा पर पेला[3]। जहां सुनै छत्रसाल बुँदेला॥

१—ऐंड़दार = विरोधी, विमुख २—गढ़ा = यह दुर्गम दुर्गसागर के निकट है। ३—पेला = आक्रमण।

दोहा।

उमड़्यो रनदूलह सजे, तीस हजार तुरंग।
बजे नगारे जूझ के, गाजे मत्त मतंग ॥२॥

छन्द।

दिन के पहर तीन तब बाजे। लागी लाग मीर गल गाजे॥
त्यौं छत्रसाल चढ़ाई भौंहें। बड़े बंब द्वै भये भिरौहें॥
उमड़ि रारि तुरकन त्यौं मांडी। छूटे तीर उड़ति ज्यौं टांडी[१]॥
त्यौं रन उमड़ि बुंदेला हांके। रंजक[२] धुँवन घामनिधि[३] ढांके॥
बाजन लगीं बंदूकें सोई। गिरे तुरक जे लगे[४] अगोई॥
गिरत हरौल गोल के साऊ। कढ़ि कतार तें ठिले अगाऊ॥
लगे खान गोलिन की चोटैं। नट ज्यौं उछल लाग लै लोटैं॥
समर विलोकि सुरन भय कीनो। सूरज सरक अस्तगिरि लीनो॥

दोहा।

जोत जामगिन[५] में जगी, लागे नखत दिपान।
रन असमान समान भौ, रन समान असमान॥ ३॥

छन्द।

पहर रात भर भई लराई। गोलिन सर सैथिन झर लाई॥
घाइ घाइ सब स्वान अघाने। लोह मानि तजि कोह पराने॥

१—टांडी = टिड्डी, टीड़ी। २—रंजक—यह बारूद जो तोप या बंदूक के भीतर भरी हुई बारूद में आग पहुँचाने को बाहरी छिद्र पर रक्खी जाती है रंजक कहाती है। ३—घामनिधि = सूर्य। ४—लगे अगोई = आगे थे। ५—जामगी = ढाक की जड़ को कूट कर उसकी डोर बट लेते हैं और उसे आग में सुलगा कर जला लेते हैं। यह आग उस डोरी में बराबर सुलगती रहती है और बिना बुझाये नहीं बुझती। इसी को रंजक में छुआ देने से वह जल उठती है। इस डोर को जामगी कहते हैं। यह शब्द फार्सी "जामगीर" से बना है।

डेरा कोस ढूंक पर पारे। हिम्मत रही हिये सब हारे॥
अड़े बुँदेला टरै न टारे। जीते जूझ बजाइ नगारे॥
रनदूलह रन ते विचलाये। ह्वांते हनूटूक को आये॥
मारि गुनाह मरोरी टोरी। खग्ग भार भागर भझझोरी॥
फिरि मवास रतनागर मारयौ। ओड़ेरा में डेरा पारयौ॥
दल दौरन हरथौन उजारी। धामौनी में खलभल पारी॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चहुँ दिस उठै, सूबाखान खुमान।
अवधो धावै कौन पर, छत्रसाल बलवान॥ ४॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे रनदूलहपराजयो नाम
पंचदशोऽध्यायः॥ १५॥

—

सोलहवाँ अध्याय।

छन्द।

त्यौंही दौर करफरा कूट्यो। आसपास नरवर कौ लूट्यो॥
सो गाड़ी सकलात[1] सहीनो। पातसाह कौ जात पठौनो॥
सो ताकौ छत्रसाल बुँदेला। लई लुटाइ फौज सो पेला॥
सबही लूट छूटकर पाई। लुंगी[2] मोल मैधुवन लाई॥
लूटी रसद साह की ज्यौंही। याकन लिखी हकीकत त्यौंही॥
सुनी दिलीस खबर ठिकठाई। सूबा दल कौ नालस आई॥
रनदूलह डांडे रणझमी। पठये साह रोस करि रूमी॥
लै मुहीम रूमी रिस कीनी। मोट[3] उठाइ झरे[4] की दीनी॥

दोहा।

फौज जोरि रूमी चढ्यो, बाजे तबल निसान।
छत्रसाल तासों करयो, बसिया में घमसान॥ १॥

छन्द।

बसिया में माच्यो रनखेला। उत रूमी इत वीर बुँदेला॥
तुपक तीर सैथी तरवारे। धाम पजायन बीर हँकारे॥
उमगे भिरत जुद्धरस पागे। कटि कटि गिरन परस्पर लागे॥
चढ़यो कल्यानसाह मन आछे। पग परिहार न दीने पाछे॥
मीर यहबहे उमड़त आये। सनमुख जुटे हटे न हटाये॥
गना रूम के तके बुँदेला। किया तुरकदारनि कौ पेला[5]॥

१—सकलात = (सौगात) भेंट। २—लुंगी = फौज की भीड़।
३—मोट = गठरी। ४—झरा = झगड़ा। ५—पेला = धावा।

तिन चोटैं कीन्हीं चितचीती[1]। साखे भई सबनि की रीती॥
गनी रूम कौ समर पहारू। बाटन लग्यो सबनि कौ दारू॥

दोहा।

भई भीर गलबल मच्यौ, दारू बाटत लेत।
लग्यो पलीता सीढरन[2], उद्यो धूम उहि खेत॥ २॥

छन्द।

त्यौंही हला बुँदेलनि बोले। समर खेत खग्गनि के खोले॥
लागे मुँह ते मारि गिराये। पिलिवन बीर धुँवा पर धाये॥
दारू उड़े उड़े अरि ज्यौंही। मारे बीर बुँदेलनि त्योंही॥
रूमी बिडरि खेत तें भाग्यो। छत्रसाल जस जग में जाग्यो॥
ज्यौं रँग मच्यौ दिल्ली में औरै। दुदिलै[3] भये साह कित दौरै॥
नृप जसवन्तसिंह के बेटा। कढ़े दिल्ली कौं मारिव चेटा॥
फिरि जोधापुर धनी अन्यारे। अंतिसाह अजमेर पधारे॥
त्यौं अकबर सहिजादौ साऊ। राठौरन पर पिल्यौ अगाऊ॥

दोहा।

त्यौं प्रपंच रचि बुद्धि बल, दुरगदास राठौर।
सहिजादे सों मिलि किये, तखत लैन के डोर॥ ३॥

छन्द।

तखत लैन के लोभ बढ़ाये। पुत्रहिं पितहिं बैर उपजाये॥
सहिजादौ संगी कर पायौ। तब दच्छिन कौ वाहि चलायौ॥
ताकी पीठ साह उठ लागे। दच्छिन कौं उमगे रिस पागे॥
रूमी भगे साह त्यौं जाने। कारी परी कुल तुरकाने॥
बल व्यवसाद सबनि के थाके। तब दिलीस तहवर मन ताके॥

१—चितचीती = मनचाही।

२—सीढ़रा = सिंगड़ा, बारूद भरने की कुप्पी, जो बहुधा काठ, पीतल अथवा चमड़े की बनती है।   ३—दुदिलौ = दुचित्ता, चिंतित।

जानि जुद्ध अमनैक अठायौ। तहवरखाँ इहि देस पठायौ॥
चढ़ी चमू तहवर की बाँकी। दिसा धूरि घँघरि सौ ढाँकी॥
ज्यौं तहवर की सुनी अवाई। त्यौंही लगन ब्याह की आई॥

दोहा।

सावर तै आई लगन, मिले बोल बंधान।
दवादवे[1] बीरा[2] दियौ, अब हितु भयौ निदान॥४॥

छन्द।

जब दिन निकट ब्याह के आये। मंगलगीत दुहूँ दिस गाये॥
तब दल बलदाऊ सँग राखे। लागे करन काज अभिलाखे॥
छरी बरात ब्याह की साजी। तीन सवार बंध अरु बाजी॥
दूलह छत्रसाल छवि छाये। करन ब्याह सावरहि सिधाये॥
तँह बिधि सौ आगौनी कीनी। बाँध्यो मौर इंद्रछबि लीनी॥
लागी परन भाँउरें ज्यौंही। परी फौज तहवर की त्यौंही॥
अगो बनो दोई बनि आई। दोऊ बरी करी मनभाई॥
इतहि भाँउरें सजी सुहाई। उत तुरकनि सौ मची लराई॥

दोहा।

रन रुपि तहवर खान कौ, मुह मुरकायौ मारि।
पूरन बेद बिधान सौ, लई भाँउरें पारि॥५॥

छन्द।

मारि फौज तुरक मुरकाये[3]। तँह सब धाये बजे बधाये॥
ब्याही बरी जीति अरि लीनी। कंकन छोड़ि तुरंगम दीनी॥
धामौनी दौरन झकझोरी। फिरि पिंढ़ौरि सब बरी पिढ़ौरी[4]॥
बारी बार मवासी फूटें। गाँउ कलींजर के सब लूटें॥

१—दवादवे = सुपके से। २—बीरा = पान। ३—मुरकाये = लौटा दिये, भगा दिये। ४—पिढ़ौरी = झकझोर डाली। बुंदेलखंड में पिढ़ौरी दौरा को भी कहते हैं।

रामनगर मारयौ करि डेरा। कालिंजर कौं पारयौ घेरा॥
रोज अठारह गढ़ सौं लागे। चौकिन तहाँ द्यौस निसि जागे॥
बाहिर कढ़न न पावै कोई। रहे संक सकराइ गढ़ोई[1]॥
लई रोकि चारिउ दिस गैलै। गढ़ पर परै रैन दिन पैलै॥

दोहा।

चिंतामनि सुर की तहाँ, कीनौ आइ सुदेस।
अति आदर सौं लै चले, न्योतौ करि निज देस॥ ६॥

छन्द।

न्योतौ करि कीनी महिमानी। धन्य घरी सबही वह मानी॥
तातें तुरी तिलक मैं दीनौ। उर आनंद परस्पर लीनौ॥
ह्वाँतै कूच बिदा ह्वै कीनौ। कालिंजरहिं दाहिनौ दीनौ॥
लरे उमडि तहँ सुभट अन्यारे। घाटी रोकि वीर गढ़वारे॥
छत्रसाल त्यौं हल्ला बोल्यौ। खग्गन खेल बुँदेलन खोल्यौ॥
समर भूमि अरिलोथिन पाटी। रोकी रुकै कौन की घाटी॥
बारि बनहरी लूट मचाई। धामौनी सौं लई लराई॥
पटना अरु पारौलि उजारे। तहवरखाँ पै परी पकारे॥

दोहा।

फौज जोर तहवर तहाँ, ठने जूझ के ठान।
गौने मैं छत्रसाल के, दल कौ परयौ मिलान॥ ७॥

छन्द।

परयौ मिलान जाइ जब गौनै। करकै तंबू तनै सलौने॥
दहिनी दिस उतरे बलदाऊ। जहँ गोली पहुँचै पहुँचाऊ॥
थम्हे अपनी अपनी पाली[2]। परयौ पहार पीठ तन[3] खाली॥
ऊपर सिखर चौपरा[4] जान्यौ। सो देखन छत्ता उर आन्यौ॥

१—गढ़ोई = गढ़वाले। २—पली = दल। ३—तन = ओर।
४—चौपरा = छोटा वर्गाकार तालाब जो सब ओर से पक्का बँधा हुआ हो।

छरी मीर कौतुक मन बाढ़े। चढ़ि करि भये शिखर पर ठाढ़े ॥
ज्यौं यह खबर असुलन दीनी। त्यों तहयरखां आगी लीनी[1] ॥
बखतरपोस सहस दस धाये। प्रलै मेघ से उमड़त आये ॥
निकट आइ धौंसा घहराने। हयखुरधार छटा छहराने ॥

दोहा।

बड़ी फौज उमड़ी निरखि, रच्यौ छता घमसान।
चढ़ि सनमुख रनमुख तहां, बरषन लाग्यौ बान ॥ ८ ॥

छन्द।

बरषन लाग्यौ बान बुंदेला। कियौ तुरक दै ढाल ढकेला ॥
बखतरपोस बान सों फूटे। नल से क्षतज छोंछ के छूटे ॥
कौतुक देखि जोगिनी गाई। खप्पर जटनि माजती धाई ॥
बिसुनदास तहँ मार मचाई। चोप करेरहि[2] भली चढ़ाई ॥
रह्यो पहार बुंदेला गाढ़े। त्यौ पठान पैठे मन बाढ़े ॥
चंड लेहु दुहूँ दिस ठहराने। सूरज गगन मध्य ठहिराने ॥
सोर सिंहनादन के माचे। भूत बिताल ताल दै नाचे ॥
डेरन खबर जूझ की पाई। सुभट मीर त्यौं उमड़त आई ॥

दोहा।

चढ़े रंग सफजंग के, हिन्दू तुरक अमान।
उमड़ि उमडि दुहूँ दिस लगे, कौरन लोहौ बान ॥ ९ ॥

छन्द।

कौरन लोह बान भट लागे। दुहूँ ओर रन में रस पागे ॥
सुतरनाल[1] हथनालै[2] छूटी। गरजि गरजि गाजै सी टूटी ॥

१—आगी लीन्ही = अग्रसर होकर आक्रमण किया। २—करेरहि = करेरावाले को। ३—कौरनलोह लान लगे = विकट युद्ध होने लगा और शस्त्र चलने लगे।
१—सुतरनाल = तोपें २—हथनाल = वे तोपें जिनके चरस हाथी खींचें।

गोलिन तीरन की झर लाई। माची सेल्ह[1] समसेरन घाई॥
त्यों लच्छे रावत प्रभु आगे। सेल्हन मार करी रिस पागे॥
प्रबल पठान मारि कै साऊ। कढ़्यो मिश्र हरिकृष्ण अगाऊ॥
उमड़ि लोह लपटन मन दीनो। तन के होम स्वामि हितु कीनो॥
वाघराज परिहार पचारयो। सार पेर रवि मंडल फारयो॥
जूझयो नन्दन छिपी[2] सभागो। ज्योतन लग्यो इन्द्र को वागो॥

दोहा।

कृपाराम सिरदार त्यों, कढ़्यो धँधेरो धीर।
बैठ्यो जाई विमान चढ़ि, भानु भेदि वह बीर॥ १०॥

छन्द।

उतहि पठान चढ़त गिरि आवैं। इत छत्रसाल बान बरसावैं॥
इक इक बान दुद्वे भट फूटे। झुक झुक तऊ झपट रन जूटे॥
बान वेग जगतेस हँकार्यो। त्यों करवान झरप झुकझारयो॥
घाउ ओड़ि भुज ऊपर लीने। उमड़ि पांउ रन सनमुख दीने॥
गिरे पठान डील त्यों भारे। गोलनि सेल्ह सरनि के मारे॥
जंघा घाउ छतारे ओढ्यो। भुजडंडन रनसिंधु विलोड्यो॥
पिले तुरक जे वखतरवारे। ते रन गिरे छता के मारे॥
बढ़े गिरिन स्रोनित के नाले। धर धमकन धरनीतल हाले॥

दोहा।

कहर[3] जूझ द्वै पहर भो, झरयो[4] सार सो सार।
तेज अरिन को त्यों घट्यो, लोथन पट्यो पहार॥ ११॥

छन्द।

बारह वीर खेत इत आये। सत्ताइस घाइल छवि छाये॥
तुरक तीन से खेत खपाये। घाइल द्वै सै वीस गनाये॥

1—सेल्ह = भारी सांग। 2—छिपी = छीपा जाति [illegible]प जो कपड़े पर वेल बूटे रंग से छापते हैं। 3—कहर = कठिन। 4—झरयो सार सो सारु = लोहा बजा, शस्त्र चले।

मारि तुरक को मुँह मुरकायौ। रन में जिते बुँदेला पायो ॥
मुरके तुरक खग्ग फिर तोल्यौ। बल दिवान पर हल्ला बोल्यो ॥
बजे नगारे फेर जुझाऊ। रन में रुप्यो उमडि बलदाऊ ॥
पहर राति भर मार मचाई। मुरक्यौ तुरक उहाँ खग्ग खाई ॥
छोडि अरिन के दाल दकेला। भलौ लरयौ बलकरन बुँदेला ॥
उभरि खेत तहवर बिचलायो। सूबन के उर साल सलायो ॥

दोहा।

सले साल सूबानि के, धकनि हले पठान।
दियौ भाल छत्रसाल कै राजतिलक भगवान ॥ १२ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते तहवर युद्ध वर्णनं
नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सदर लूटि थानो फिर मांड्यो। डांड चुकाइ करोरी[1] छांड्यो॥
डामोनी को मुलक उजारयो। दल दौरन, गढ़रौला मारयो॥

दोहा।

लूटपाट मुरकी लई, दई करहिया लाइ[2]।
मदर मदापुर जारि कै, रहे राजगिर जाइ॥२॥

छन्द।

तहवरखां हेरत हिय हारयो। याहि दवाइ दमोयौ धारयो॥
सुनी पुकारन तहवर टेरे। तव डेरा कीन्हो पट हेरे॥
दौर अजुनहर पर पुनि कीनी। भुमियन तमकि तेग कर लीनी॥
सत्ताइस गांवन के ठाये। ढोल बजाइ बोठ जुर धाये॥
मची मारु त्यों छिले बुँदेला। गिमिर कियो सगन रिज खेला॥
किरपाराम चौधरी मारयो। घाउ मान बगसी तन धारयो॥
ज लगि न सूझा सनमुख आवे। त लगि मवासिन खेत खपावे॥
जब लगि द्रगनि न दुरद निहारे। तब लगि केहरि हरिन सँहारे॥

दोहा।

मियां दुरद भुमिया हरिन, कानन मुलक बिसाल।
फाँद्रि सिकार खेलन लग्यो, समरसिंह छत्रसाल॥३॥

छन्द।

छत्रसाल रनरंग प्रवीने। दौरन दबटि देस बस कीने॥
भेड़ा मारि सिनेशा धारयो। दौरि दलीपुर दलमल मारयो॥
धारी बरिहा रंग भैलोनी। मिठुली मारि लई हाकोनी।
मलि मुगावली अरु महरौनी। दलि मुराऊ ठोनी मगरौनी॥
पटहेरे पंचहार गँवाये। घर की रही न ईंट रहाये॥

१—करोरी = बादशाही में एक राज्य कर्मचारी के पद का नाम था जो वर्तमान काल के तहसीलदार के समान होता था।

२—लाइ = आग लगा दी।

लूट्यो अमोदा ईसुर बारो। दल्यौ दौर करि दांगी वारो॥
दई पजारि पलोर पठारी। सिरला भीत भीत सों मारी॥
सिलवानी बिलवानी लाई। वासैाधे में लूट मचाई॥

दोहा।

वारि बिलखुरा रमपुरा, रइसैदी परजार।
चेइढ़ डैागरु ग्यासपुर, घानावाद उजार॥४॥

छन्द

दौरि बिलेरा बरहो बारयौ। बजि बबूरिया डेरा पारयौ॥
बड़खेरा बलहरा बलेहो। दौरि दलनि दल मलयौ रनेहो॥
बड़ी बचैया आग लगाई। धूम धुंधु धुव धामनि लाई॥
धासी एक राममनि धावै। चालिस कोस दौरि करि आवै॥
नृप छत्रसाल ताहि इत राख्यौ। और देस जीतनि अभिलाख्यौ॥
उतरे नदी पार दल ज्योंही। मिले आइ सब सेंगर त्योंही॥
झमकि झार सागर पै झारयौ। धासनि धमकि धमहरा मारयौ॥
टोरी टोर पलक में लीनी। लपक लाल लदट्टी दीनी॥

दोहा।

बीची बारो कोपरा, फारो वाग झपेट।
लगत बडोए में बड़ी, लूटी हाट लपेट॥५॥

छन्द।

हटरी मार करयौ मन भायो। हटि हिंडोरिया हलन दलायो॥
लभरी खोद खूंद छिमला सो। रोंद राखि भंज्यो भोंरा सो॥
अंधसेरी उमराव न मान्यो। मारयौ दोस उतारयौ पान्यौ॥
हाड़ा दुरजनसाल प्रवीनो। तिन हित छत्रसाल सों कीनौ॥
दियो देस तिनको तव डेरो। धूपसि मार खदोयो खेरो॥
मारि मयापुर वारी वेरी। घुरहट मारि पिपरहट पेरी॥

ले रमगढ़ा सुनागढ लीनो। मारि गढ़ा काटा बस कीनो॥
दई पजारि पैठि पुरवाई। लीनी लूटि कठिन कुरवाई॥

दोहा।

पते दसौंधी कर कढ़े पीछे हटे न पाउ।
बैस बसत उमड में मोड्यो सनमुख घाउ॥६॥

छन्द।

कुम्भराज कजियो उजार्यो। कम्कन कचरि कु वरपुर डार्यो।
लै कबीरपुर लयौ घटौना। कन्हरापुर में रह्यो न कौना॥
रौंदि रौनदू रनगिरि लाई। इडति जमहटा लूट मचाई॥
फनीपुरा चन्द्रापुर लीनौ। चापि बाढिपुर चपटौ कीनौ॥
लयौ लाउरी लोधा वारी। अघराटा मार्यौ भय भारौ॥
दोरनि उमडि अमानौ लीनौ। मारि उदैपुर कौतुक कीनौ॥
सय्यद लरे रातगढ टूट्यो। गढधारनि कौ धीरज छूट्यौ॥
लई सौरई अरु साडौरो। लूट गांउ गिरद के भौरो॥

दोहा।

टारी आर तिलात लै, लई तौर तूमान।
लयौ गौरझामर झिल्यौ, झुकझोरी झरखान॥७॥

छन्द।

पसै समै यौर विधि कीनी। सिद्द सुजान स्वर्ग गति लीनी॥
त्याही राज इन्द्रमनि पायौ। छत्रसाल सों हित बिसरायौ॥
मांग मुहीम छता पर ठानी। तौ छत्रसाल न्रिप रिस मानी॥
मारि मुलक में लूक लगायौ। सतघारैं हय पानी प्यायौ॥
चढि गुदनार गरौठा मार्यो। त्यौ ही कगर कजनयौ बार्यो॥
बाधि घेरि जैतीन उजारी। धार जजहरा ऊपर पारी॥
सुनत इन्द्रमनि कौ मन आर्यौ। तरल सुआमदार कौ तास्यौ॥
तब दल धामौनी पर धायौ। तहपरसां सौ अमल उठायौ॥

दोहा ।

दौरि दमैाया दलमल्यैा, लखरैानी परजार ।
गैानो हीरापुर लयैा, दई बार मिलवार ॥८॥

छन्द ।

कर हरथैान हनैाता हेला । डहुली पै पारयो बगमेला ॥
झपटत झार झ्रोल करि डारी । रहिली पहिली दौर उजारी ॥
बारि मुलक होरी से दीने । सबै भये भूपाल अधीने ॥
साठ कोस की दौरन दौरे । रन के ब्यैांत न बैरिन ग्रैारे ॥
चैाथ भेलसा लैा की आनी । अकबकाइ[1] उज्जैन परानी[2] ॥
चैाकी गढ़चांदा चकचैाके । दहसत मान देवगढ़ दौके ॥
धाकनि आनि गढ़ापति माने । सूबा उर में संक समाने ॥
रन सनमुख उमराउ न आवै । चैाथ देइ तब देस बचावै ॥

दोहा ।

अमल उठाये साह के, देस दिली के बार ।
आड़े आवै ग्रैार को, सूबन मानी हार ॥९॥

छन्द ।

सूबन सबन हार हिय मानी । छत्रसाल की बजी कृपानी ॥
दौरन देस दिली के बारे[3] । भये ब्योम में अनल उज्यारे[4] ॥
उमड़ि धूम रविमण्डल पूरे । टौर टौर जनु उठे बघूरे ॥
त्यांहि पातसाह फरमायैा । सेख अनैार साजि दल धायैा ॥
बख्तरिया पखरैत हथ्यारी । चढ़े सहस दस होत तयारी ॥
आगे सैाक झुमत गज माते । गजत अरावे होत न हाते ॥

१—अकबकाइ = घबरा कर, बिलबिला कर । २—परानी = भागी ।
३—बारे = जलाये । ४—अनल उज्यारे = अग्नि का प्रकाश हुआ ।

सैयद सेख पठान अन्यारे। माय बजत ते होत निन्यारे॥
बान रहकला[1] तोप जँजालै[2]। सहसनि सुतरनाल हथनालै॥

दोहा।

लोहदात दल साजि त्यौं, उमड्यो सेख अनौर।
उठत धूम चहुँ दिसि तकै, करै कहाँ को दौर॥१०॥

छन्द।

दौर अनौर कोस दस आवै। धुआँ कोस चलिस लौं आवै॥
दौरन देस बुँदेला आवैं। छोर अनौर न छोवन पावै॥
धावै तुरक जुद्धरस भीनै। पीठ लगाई बहबहे कीनै॥
जानी फौज फंद में आई। तब त्योंधै में मार मचाई॥
मीर बहबड़े उमड़त आये। डंका निकट नजीक बजाये॥
तब छत्रसाल चढ़ाई भोहैं। पैढ़यो उमड़ि फौज के सोहैं॥
ओढ़ि अस्त्र छत्रिन के बाँके। बखतरपोस हला करि हांके
छमकि तुरी बरछा उलछारै। बच्छ ताकि प्रतिबच्छ हिंधारै॥

दोहा।

गाइन के धमके उठे, दियो डमरु हर डार।
नचे जटा फटकारिकै, भुज पसारि ततकार॥११॥

छन्द।

घाइन धमके मचे घनेरे। बखतरपोस गिरे बहुतेरे॥
फरफरात फार में धर लागे। सेख अनौर मानि भय भागे।
गिरे खेत अनवर के साथी। लुटे भँडार ऊँट हय हाथी॥
घेरे अनवर जान न पाये। डांड मान तब प्रान बचाये॥
मारि लूट अनवरखां डांडे। चौथ सियाँ दुलारा लै छांड़े॥

1—रहकला = तोप की गाड़ी।

2—जंजाल = वह तोप जिसमें जंजीरदार गोले भरते हैं।

आलमगीर खबर यह पाई। अनवर कौं तागीरी[1] आई॥
बोले साह कोप करि ऐसे। फैले हुकुम हमारे कैसे॥
मनसिवदारन हिंमत खोई। देखो निमकहलाल न कोई॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते अनवरपराजयो
नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

१—तागीरी = बदली।

अठारहवां अध्याय।

दोहा।

यों कहि ताके तुरतही, सुतरदीन की ओर।
जे ईरानी निसबती, काबिल कौम अमीर ॥१॥

छन्द।

सुतरदीन त्यों कोरनिस[1] कीनी। तिन्है साद धामौनी दीनी ॥
देसनि देसनि लिखे पठाये। क्यों फिसाद पेसे फैलाये ॥
सरे मुहीम साह रिस छाका। क्यों वे लिखन दुद के याका ॥
जेर सिख दई सुनी सब बौली। भेजे सुतरदीन धामौनी ॥
त्यौं मिरजा धामौनी आये। बंदोबस्त कीनै मनभाये ॥
सजी हजार तीस असवारी। दल में निसु दिन रहै तयारी ॥
छत्रसाल पै पांच पठाये। बचन जौम के आनि सुनाये ॥
वे मिरजा उदित ईरानी। रन में जिनकी बड़ी कृपानी ॥

दोहा।

इन्है मुकाबिल मार को, दिल्ली में उमराउ।
चाहत है इनसों सबै, सूबादार सदाउ ॥२॥

छन्द।

इन समान उमराइ न कोई। को रन इन्हैं मुकाबिल होई ॥
बड़े भाग छत्रसाल तिहारे। मिरजा आप सुडौल निहारे ॥
मिहरबान ह्वै लिखे पठाये। तब हम पास रावरे आये ॥
ते अब लिखे बोलके बांधौ। इनकी दबट[2] दौर तैं बांधौ ॥
इनकी रिस खोटी हम जानें। को इनसौं सनमुख रन ठानें ॥
इनसौं बचे जूझ जबही लौं। कुसल मानि लीजे तबही लौं ॥

१—कोरनिस = अभिवादन। २—दबट = झपट।

तातैं इनको भलो मनावो । इन देसनि मत दुंद मचावो ॥
रजावंद तुमसो जो ह्वैहै । तो मँगाइ मनसिब पुनि देहै ॥

दोहा ।

तातें इनके देस को, छोर छाँड़ अब जाउ ।
जो मिरजा कहुँ कोपिहै, तो फिर कहां निबाहु ॥ ३ ॥

छन्द ।

ज्यों छत्रसाल बचन सुनि लीने । त्यों बोले वर बुद्धि प्रवीने ॥
मिरजा बड़े सबनि ते गाये । याकी चौथ पाइ हम आये ॥
सो हमेस हमकों भरि देहै । तो हम इनको छोर न छैहै ॥
चौथ न देहै जो मनमानी । तो मुलकन को परे न छानी[1] ॥
विग्रह उठै देस लुटि जैहै । मिरजा अमल कहां ते लैहै ॥
जिन प्रभु हमको तेग बँधाई । ते सब ठौरन सदा सहाई ॥
गरबीलिन के गरबनि ढाहे । गरबप्रहारी बिरद[2] निबाहे ॥
केतिक मिरजा की रिस खोटी । प्रभु के हाथ सबन की चोटी ॥

दोहा ।

जे जग में दुसमन बड़े, काम क्रोध अरु लोभ ।
ते मिरजा हितुवा करै, कहे मानिहै छोभ ॥ ४ ॥

छन्द ।

बिनहीं जुद्ध जीति अभिलाषे । त्योंही बचन क्रोध के भाषे ॥
चौथ लोभ के देन न माने । तीनो सत्रु मित्रु करि जाने ॥
मिरजा के विग्रह मन भायो । तो हमहू याते सुख पायो ॥
प्रथम सृष्टि करता जब कीनी । तब रनवृत्ति छत्रियनि दीनी ॥

१—छानी = छत्त, छप्पर, खपरैल "मुलकन को परे न छानी" से अभिप्राय है कि देश भर में घरों पर छाया न रहने दी जायगी अर्थात् देश उजाड़ दिया जायगा । २—बिरद = बान, टेक, यश ।

पग पग अश्वमेध फल चाहै। ते कृपान रन सनमुख वाहै ॥
भेदत भानु सुभट रन मावे। रन में रुद्र ताल दै नावे ॥
रन अवलोकि अमर सुख पावे। रन में उमड़ि अपछरा गावे ॥
रन में रूपे सुजस जग छावे। ताते रन छविन कों भावे ॥

दोहा।

जौ रन कौ सनमुख पिलै, मिरजा बड़े जुझार।
तौ सेलहन घमके मचै, समसेरन झनकार ॥ ५ ॥

छन्द।

जो उछाह रन के बढ़ि आये। है वर दये पांच पहिराये ॥
दीने पान सँदेस सुनाये। रन वनवीरन के मन भाये ॥
पै हम इन्हैं रोकिहैं तौलौं। फिर न आइहै उत्तर जौलौं ॥
जो मिरजा दै चौथ पठाई। तौ सलाह निवही ठिकठाई ॥
दिन दस वाट हेरिहैं आछै। मनभाई करिहैं ना पाछै ॥
चले पचौर बिदा ह्वै ज्यौंही। बजे निसान कूच के त्यौंही ॥
चहूँ चक्क माचे भय भारे। तिन समाल पर डेरा पारे ॥
दल की दौर जौन दिसि जानी। तहां समाधानी ठिक ठानी ॥

दोहा।

फिरि पचौर हाते गये, सुतरदीन के तीर।
गोसे ह्वै बातैं कही, टारि सभा की भीर ॥ ६ ॥

छन्द।

देखे बली बुँदेला गाढ़े। जोति जोति फौजै मन बाढ़े ॥
विग्रह करैं ये न बस ह्वैहै। हितु कीनै फिरि छोर न दैहै ॥
जाकी धर्मरीति जग गावे। जो प्रसिद्ध बलवंत कहावे ॥
लै अवतार बड़े कुल आवे। जुद्धन जुरै जगत जसु छावे ॥
जाहि ओट मैयनि कौ भावे। करत अनारथी[1] न बन आवे ॥
सत्य :बचन जाके ठिक ठावे। प्रीति जोग ये सात गनावे ॥

१—अनारथी = धनार्थपन।

इनसें भूलि विरोध न कीजे । साम दाम सों बस करि लीजे ॥
जो वे चैाथ देस की पावैं । ते काहे के दूंद[1] उठावैं ॥

दोहा ।

ऐसें मंत्र सुनाइ कै, रहे पांच गहि मैान ।
त्यैां मिरजा बोले तमक, कही बात यह कैान ॥ ७ ॥

छन्द ।

जो हम सत्रु चैाथ दै साधैं । तो हथ्यार काहे को बांधै ॥
वाकन लिखि खबर जो धावै । तो हमकैां बदनामी आवै ॥
जान प्रवीन तुम्हे हम भेजा । तुम तो दिया जलाइ करेजा ॥
यों कहि ह्वां तें पांच उठाये । सैयद सेख पठान बुलाये ॥
सब सों कही सजो असवारी । करो जूझ की सबे तयारी ॥
सब सों जीति जीति मन बाढ़े । रन मैं रुपत बुँदेला गाढ़े ॥
उचकैं फैांज इहांतें धावैं । लैन हथ्यार न कोऊ पावैं ॥
जिहि दिसि होत खरी हुसियारी । पैठो ताकी ताक पछारी ॥

दोहा ।

काटि कटक किरवान बल, बांटि जंबुकनि देहु ।
ठाठ जुद्ध इहि रीत सों, वार धरन धरि लेहु ॥ ८ ॥

छन्द ।

लगा लगाइ उमड़ि दल धाये । वाट छोड़ि औघट ह्वै आये ॥
ठैार ठैार इत चढ़ी रसोई । भोजन कहो कैान विधि होई ॥
धूरि धुंध नभमंडल देखो । आंधी उठी सबनि उर लेखी ॥
छत्रसाल के तुरग नवीने । चैाकिन खरे काइजा कीने ॥
त्यैां छत्रसाल बुद्धि उर आनी । चढ़ी चमू तुरकन की जानी ॥
ह्वै असवार तुरी झमकाये । दल मैं सबनि हथ्यार बँधाये ॥

१—दूंद = द्वंद ।

सुभट छ सातक आपु अकेला। दल सनमुख कीनौ बगमेला॥
कही पुकार चलत हम आगै। पहुँचो सबै लाग[1] के लागै॥

दोहा।

ज्यौं अरिदल सनमुख पिल्यौ, छत्रसाल रनधीर।
कुंभ सूनु सनमुख चल्यो, सोखन समुद गँभीर॥ ९॥

छन्द।

सुभट घटा कवचनिजुत भारी। उमडत आवत निकट निहारी॥
त्यौं छत्रसाल जुद्धरस छाये। तानि कमान बान बरषाये॥
कवच समेत कवचधर फूटे। संग के सुभट साथ से छूटे॥
करी उमाड़ि सेल्हन घन घाई। हठि हरौल की गोल हलाई॥
ठेल हरौल गोल जब हकी। जूझ्यौ परसराम सोलंकी॥
उद्भट बीर उकिल सब आये। दुद्दे तिन असवार गिराये॥
झलकी बदन सबनि के लाली। हांकी[2] हरषि आपनो पाली[3]॥
उठी हूल अरिदल अधिकारी। कोसक लौं भगि गई पछारी॥

दोहा।

त्यौं मिरजा अपनी अनी, थाँभी तबल बजाइ।
कही सबनि सैां बलगनै, लेहु गनीम न जाय॥ १०॥

छन्द।

जौलगि तुरकन कटक सम्हारे। तौलगि कढ़ि बनबीर हँकारे॥
सनमुख घाट तैापखिन बाँधे। कलह कराल जुद्ध है काँधे॥
उमड़ि चमू तुरकन की धाई। बनबीरन गोलिन झर लाई॥
सैयद सेख पठान अग्यारे। गिरे खेत गोलिन के मारे॥
हटे न मीर जुद्धरस भीने। धरि धरि लोथ मोरचा कीने॥
घने मीर बनबीर उद्दोने। पेलि मनंग घाट उन लीने॥

१—लाग के लागै = सहायता के लिये। २—हांकी = आगे बढ़ाई।
३—पाली = दल।

छुटत घाट करके पग रोपे। त्यों पठान पैठे उत कोपे॥
तहँ मिरजा रन के रस भीने। बांधि कतार गोल द्वै कीने॥

दोहा।

दुहूँ ओर द्वै गोल करि, बाँधी बार कतार।
जनु रन को द्वै सिखिर कौ, जंगम भयो पहार॥ ११॥

छन्द।

पिले पठान जुद्धरस बाढ़े। रन में रुपे बुँदेला गाढ़े॥
माची मार दुहूँ दिस भारी। जनि जम दई तमकि करतारी॥
उमड़ि नरायनदास हँकारयो। सोक सँहार घाट तन धारयो॥
विरचि अजीतराइ रन कीनो। मीरनि मार घाट तब लीनो॥
बालकृष्ण विरच्यो मन आछे। घाउ ओड़ि पग धरयौ न पाछे॥
गंगाराम चौदहा चांडो। लरयौ बजाइ खेत में खांडो॥
मेघराज परिहार अगाऊ। रन में रुप्यो[1] हनत अरिसाऊ॥
सनमुख पिल्यो राममनि दैावा। अरु हरौल के हने अगौवा[2]॥

दोहा।

लरे हांक हिंदू तुरक, झरयो सार सो सार।
भये भानु रथ रोक के, कौतुक देखनहार॥ १२॥

छन्द।

ठिले मीर सनमुख त्यों बांके। त्यों रन उमड़ि बुँदेला हांके॥
भारी भीर परी जब जानी। छत्रसाल कर कढ़ी कृपानी॥
बखतरपोस हला करि काटे। रुंड मुंड रनमंडल पाटे॥
फौजदार मिरजा को प्यारो। जूझो बरगीदास अन्यारो॥
बरगीदास कट्यो रन ज्योंही। परयो चाल मिरजा को त्योंही॥
गिरे तुरक छत्ता के मारे। जोजन लों धर[3] पे धर डारे॥

१—पाठान्तर—कट्यो। २—अगौवा = अग्र भाग, आगेवाले लोग।
३—धर = धड़, शरीर।

खायो चाल सुतरदी हारे। गरवप्रहारी गरब उतारे॥
दल बिडारि डेरन पर आये। पाई फतै निसान बजाये॥

दोहा।

सुरतदीन को कूटि दल, लीनो चौथ चुकाइ।
पहुँचे दल दरकूच ही, चित्रकूट कौं जाइ॥ १३॥

इति छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सुतरदीनपराजयो-
नामाष्टादशोऽध्याय॥ १८॥

उन्नीसवाँ अध्याय ।

—○—

छन्द ।

तहाँ हमीदखान चढ़ि आयो । तासों जुद्ध जीति जस पायो ॥
ह्वाँते फिरत बीरगढ़वारे । तीन बेर रन में रुपि मारे ॥
ह्वाँते दौरि गड़ोला तोरयौ । गज धकनि नरसिँहगढ़ मोरयौ ॥
डांड मारि पेरछ परजारी । कचर कनार कालपी डारी ॥
उरई अरु खगसील उज्यारी । दौरि दलनि बरहट त्यों बारी ॥
लै अत्तापुर सोह सँहारी । धारि उमंडि खलापुर पारी ॥
चहुँ दिसि घेरि कोटरा लीनो । जूझ लतीफ मास द्वै कीनो ॥
उपराला करि सक्यो न कोई । संकित भयो लतीफ गढ़ोई ॥

दोहा ।

त्यों हमीर आयो तहाँ, तुरत अँधेरो धीर ।
डांड चुकायो लाख भर, मरत बचाये मीर ॥ १ ॥

छन्द ।

दासी धरै चमू उचकाई । बचे मीर घर बजी बधाई ॥
घेरि डांड चंडोत चुकायो । फिर खंडोत मुकाम बजायो ॥
चौकी पटै कालपी दीनी । चौथ मौदहा लौ की लीनी ॥
खेर महेरा की सब मारी । दल की दौर त्रिहोनी बारी ॥
वारपार के जुरे मवासी । नदी बेतवै तट के वासी ॥
सब गांउ बीसक के धाये । समर ठानि उपहर[1] को आये ॥

१—उपहर = नदी के ऊपरी भाग पर की भूमि ।

अपनी भीर जान अधिकारी[१]। दल पै दियौ दरेरो[२] भारी ॥
सब निसि छोड़ दरेरो दीनौ। भोरहि उठत जुद्ध जुरि कीनौ ॥

दोहा।

जुरे जुद्ध कर तेग लै, पंचम के असवार।
गंजि गोल गरबीन के, करै अरिन पर वार ॥ २ ॥

छन्द।

तेगनि वार करन भट लागे। छाँड़ि समाधि त्रिलोचन भागे ॥
वही तेग पंचम की ऐसैं। बाढ़े[३] लपट खात खर जैसे ॥
ऐसे कछू ठाट बिधि ठाटे। चारि हजार खेत अरि काटे ॥
खाइ मास मसहार अघाने। जोजन दसक गीध मँडराने[४] ॥
पाई फतै मुस्करा लूट्यौ। कुलि मवास कौ फाटिक टूट्यौ ॥
भये मवासी सबै अधीनै। तब जलालपुर डेरा कीनै ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते हमीदखान सेद लतीफ बसि मवासी पराजयो नाम ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

—:o:—

१—अधिकारी = बलवती, अधिक।

२—दरेरो = अचानक धाया बंदूकें चलाते हुए

३—जैसे लपट चलने पर गदहा एक एक तृण चान कर खा जाता है और कुछ नहीं छोड़ता वैसे बुँदेल वीरों की कृपाण ने रण में कोई शत्रु न बचने दिया सब को मार गिराया। ४—मँड़राने = उमड़े।

...ीसवाँ अध्याय ।

—:o:—

छन्द ।

त्यौंही पातसाह फरमायो । अब्दुलसमद साजि दल धायो ॥
सजे समद के संग सिपाही । साहिन जिनकी तेग सराही ॥

दोहा ।

सैयद सेख पठान सब, सजे समद के संग ।
सार बजत ते समर में, बढ़ि बढ़ि चढ़त उमंग ॥ १ ॥

छन्द ।

सजि दल अब्दुलसमद उमंड्यो । धूरधार नभमंडल मंड्यो ॥
बजे गाजधुनि निडर नगारे । गर्जे मेघ ज्यौं गज मतवारे ॥
पखरैं तुरी तरल तन ताजे । बखतरपोस सुभट छबि छाजे ॥
बान जजाल रहकला तोपें । सुतरनाल हथनालनि ओपें ॥
उमड़त फौज सहस दस आई । भई छतारे की मनभाई ॥
बखतर बांधि सिपाही साजे । निकट समद के दुंदुभि बाजे ॥
यौं छत्रसाल समद के सौंहे । भयो खेत चढ़ि भाइ भिरोहे ॥
दहिनी दिसि बलदाऊ ठाढ़े । जिहि थल भरक भिराऊ गाढ़े ॥

दोहा ।

राजत दीवा राइमनि, बांई तरफ अडोल ।
उमगत अगहर जूझ कैां, ताकत प्रतिभट गोल ॥ २ ॥

छन्द ।

आवत कटक समद को देख्यो । सूरन जनम सुफल कर लेख्यो ॥
दुहूँ दल बंदिन बिरद सुनाये । दुहूँ दल कलह कंधि भट आये ॥

दुहुँ दलनि धौंसा घहराने। दुहुँ दलनि बाने फहराने॥
दुहुँ दल छार छटा छहराने। दुहुँ दल चंई लोह लहराने॥
दुहुँ दल बीर झुंड भहराने। दुहुँ दल सिंहनाद करराने[1]॥
दुहुँ दल ठौह तुरगनि दीनी। दुहुँ दल युद्धि जुद्धरस भीनी॥
दुहुँ दलनि दोऊ दल ताके। दुहुँ दलनि माने रन साके॥
दुहुँ दल पिले हरौल अगाऊ। दुहुँ दल बाजे तबल जुझाऊ॥

दोहा।

उठे ढीठ ढाढीन के, दुहुँ दिस भनक रबाब[2]।
झलझलाइ बुंदा उठे, सूवनि के मुख आब॥ ३॥

छन्द।

छूटे बान[3] कुहु कुहु कुहु बोला। नभ गननाइ उठे[4] गुरु गोला॥

१—करराने = तीव्र हुए। २—रबाब = शुद्ध शब्द रुबाब है, आतंक।

३—छुटे बान कुहु कुहु कुहु बोला = बान से यहाँ अभिप्राय शर से नहीं है। बान एक प्रकार का मिट्टी का नल २० इंच के लगभग लंबा होता था और इसका व्यास ३ इंच के लगभग होता था और इसका दल मोटा होता था, इसमें बारूद भर कर मिट्टी की डाट लगाते थे और बारूद से पलीता लगा रहता था। इसके साथ एक ठोस बाँस की सात, आठ सात फुट लंबी छड़ लगी रहती थी और बान चलाते समय यह छड़ फाड़ दी जाती थी। पलीते के द्वारा आग पहुँचते ही यह बान शत्रु दल पर जिस ओर छोड़ा जाता था उस ओर बढ़ कर जाता था और शत्रु सेना में गिर कर चक्कर काटने लगता था। बाँस की फटी हुई छड़ उसी के वेग से घूमती थी और जिस पर पड़ जाती थी उसे आहत कर यमराज को सौंप देती थी। इन बानों के चलते समय उनसे कुहु कुहु शब्द निकलता था। ऐसे बानों का प्रचार सन् १८२७ के गदर के समय तक रहा है। सुना जाता है महारानी लक्ष्मीबाई की सेना के गुसाइयों ने झाँसी के दुर्ग पर से ये बान अंगरेज़ी सेना पर चलाए थे।

४—गननाइ उठे = सनसना उठे।

तरभर निविड़ बंदूखनि माची। धूम धुंधु नभमंडल नाची॥
दसहूँ दिसनि गई परकारी। देख्यो समै भयानक भारी॥
गोला गिरन गाज से लागे। विडर काल के किंकर भागे॥
त्यौं छत्रसाल वीररस छाक्यौ। सनमुख सैन समद कौ ताक्यौ॥
लई राइमनि दौवा वागै। पैठ्यो उमड़ि सवनि तै आगे॥
कौतुक लखत अमर अनुरागे। जूझन सुभट परस्पर लागे॥
विरच्यौ विकट राइमनि दौवा। घाइ खाइ अरि हनै अगौवा॥

दोहा।

दौवा की चौकी लरी[1], करी पसर विरझाइ।
कौन गनै वैरी घनै, दीनै खेत खपाइ॥ ४॥

छन्द।

तुरकन तमकि पसर त्यौं कीनी। इतहि वुँदेलनि वागैं लीनी॥
हिंमत कौं जसवंत कहावै। जूझत खग्ग वहवहे[2] पावै॥
भावतराइ पमारु रिसानै। भाइ मरद जूझौ मरदानै॥
पाइक सवदलराइ हँकारयौ। सारु पैरि रविमंडल फारयौ॥
लागर भोज पसर करि धायो। स्वामि हेत तन खेत खपायो॥
त्यौं दलसाह मिश्र पन पाल्यौ। रन सनमुख तन तजत न हाल्यौ॥
किसुनदास जूझौ मन आछै। उदैकरन पग धरयो न पाछै॥
काम भले भाई तहँ आये। सूरजरथ के तुरी कहाये॥

दोहा।

लरे सुभट भट उमड़ि कै, अरे[3] वुँदेला वीर॥
परे परस्पर खेत कटि, टरे न टारे धीर॥ ५॥

छन्द।

त्यौंही समद हला उठि वोल्यौ। कवच धरन खग्गन खिझ खोल्यौ॥
लरयौ अजीतराइ असि धाई। मुँह मुँह दै मुँहई मुँह खाई॥
मेघराज हरजू गलगाजे। धाइ ओड़ मारे अरि ताजे॥

१—पाठांतर = परी। २—वहवहे = साधुवाद, वाहवाही, शाबासी।
३—अरे = अड़े रहे।

धाइ दयाल गैानमहि आये। बले बैसु घाइल ठिकठाये॥
भूपतिराय बैस थल गाड़े। घाइ खाइ विरच्यौ बल बाढ़े॥
रनलायक घनश्याम लछेड़ो। सनमुख घाउ बच्छ पर थोड़ो॥
त्यौंहि दौरि रावत रिस कीनो। घाइल ह्वै घाइक सिर दीनो॥
ईसफखान भिरचौ रिस भीनो। रीझि तुरंग घाउ तन लीनो॥

दोहा।

परत भार घाइल लरत, कर से सुभट समाज।
थोड़ि अग्र सनमुख भिले, राखि हिये रनलाज॥ ६॥

छन्द।

त्यौं पंचम के भार अन्यारे। जगनराइ अरु नवल हँकारे॥
प्रेमसाह वृन्दीसुर चाँडो। सनमुख पैठि खेत जिन माँडो॥
राना रामदास धसि धायौ। बलगि उछाल सेल्ह भजमायौ॥
त्यौं पवार सुन्दरमनि हाँके। मल्ल सुजान भिले रनबाँके॥
सभासिंह त्यौं तुरग झमंक्यो। बली अलीखाँ उमड़त मंक्यो॥
हंक्यो हरजूमल्ल गहोई। उदैकरन रन भयौ अगोई॥
धुरमंगद धगसी विरझानो। नाहरखाँ नाहर भहरानो॥
फतेखान त्यौं रनरस छाक्यो। सो मारचौ जो सनमुख ताक्यो॥
ऐ सब सुभट धाय से छूटे। उत तै तमकि तुरक रन जूटे॥

दोहा।

लरे उमड़ि दुहुं घोर भट, झरे सार सो सार।
चले उमड़ि हरगन नचे, गजे गोल सिरदार॥ ७॥

छन्द।

कढ़ि सिरदार गोल तै गाजे। आनन मनौ मजीटन माजे[१]॥
धंगदराइ रनन बल बाढ़े। सनमुख भिले धोप कर काढ़े॥

१—आनन मनौ मजीटन माजे = मुख लाल हो गये। मजीठ खाज को कहते हैं जिसका रंग बड़ा पक्का होता है और लाल होता है। बुंदेलखंड में खारुवा इसी से रँगा जाता है।

उमड़ि नरायनदास हँकारयौ । देवकरन करवर झुक झारयौ ॥
अमरसाह कर कढ़ी कृपानी । पृथीराज बलग्यो वर बानी ॥
राइ अमान तेग कर लीनी । उमड़त ओप फटेरहि दीनी ॥
भारतसाह हाक दै धायो । त्योंही आसकरन छवि छायो ॥
रूपसाह रनरंग रिसानौ । परवतसाह पिल्यौ मरदानौ ॥
सबलसाह बरछी फिर फेरयौ । केसौराइ रोस करि हेरयौ ॥

दोहा ।

और बहुत उमड़े सुभट, कहौं कहां लगि नांउ ।
उतै समद के सूरमा, भिरे रोप रन पांउ ॥ ८ ॥

छन्द ।

उठिली भीर समद की भारी । कवचनि घटनि भीर भयकारी ॥
लखि छत्रसाल उमगि मन बाढ़े । वीरन ओप दई रन गाढ़े ॥
रनरस फूल भीम छवि लूटी । करकर,[१] करी[२] कवच की टूटी ॥
उठे फरक भुजमूल ठिकाने । मूछन सहित पखा[३] तरराने ॥
उठ्यौ करखि हिय हरषि बुँदेला । बाढ़े रन बहसनि बगमेला ॥
दुहुं दल विरचे वीर उमाहे । समर हरोल भयो सब चाहे ॥
दैदै हांक परस्पर जूटे । मानहु सिंह सिंहन पै छूटे ॥
मार मार दुहुं दिस दल माही । दूजो और सबद कोउ नाही ॥

दोहा ।

इतहि बुँदेला वीर उत, सैयद सेख पठान ।
दुहुं दल विरचे परसपर, रचे घोर घमसान ॥ ९ ॥

छन्द ।

तुपक तीर की मिटी लराई । मची सेल्ह समसेरन घाई ॥
बीर बहबहे अस्त्र निबाहै । कौतुक देखत देव सराहै ॥
जो खग्गन खेलत उत काढ़ी । बेलैं जनु बिजुरन की बाढ़ी ॥

१—करकर = तड़ातड़ । २—करी = कड़ियां, छल्ले । ३—पखा = गलमुच्छे ।

टोपन टूटि उटें असि सच्छी। दह में मनौ उछलें मच्छी[1] ॥
दुहुं दिस बीर जुद्धरस माते। कटत परस्पर होत न हाते ॥
असवारहिं असवार अरुझे। पैदर झुकु पैदर सन जूझे ॥
पखरैतन पखरैत हँकारे। कवचधरनन कवचधर मारे ॥
यों घमसान परस्पर मान्यो। डमरु बजाइ रीझि हर नाच्यो ॥

दोहा।

नाच्यौ समर बजाइ हर, मच्यौ घोर घमसान।
छके बीर रसरंग में, थके रोपि रथ भान ॥ १० ॥

छन्द।

भानु लखत कौतुक रथ रोपे। लरत बीर आनन दुति ओपे ॥
देवकरन केसरिया बागे। उमग्यो भिरत जुद्धरस पागे ॥
सो सिरदार पठान न जान्यौ। सबनि उमडि जीतन उर आन्यौ ॥
यह छत्रसाल आइ रे भाई। यौ कह घालि उठे घन घाई ॥
अंगद को अगद के पाइन। भिरयो घोडि अरि के घन घाइन ॥
जौ लगि एकहि हनै अगाऊ। तौ लगि चारिक भिरैं भिराऊ ॥
चारिक मारि खेत पर डारै। तौ लगि दस के झुंड हँकारै ॥
आइ घाइ दस दसक गिरावै। तौ लगि वृंद बीस को धावै ॥

दोहा।

देव करन पर यौं परयो, असि मंडल घन घेर।
बिज्जुली वृंद सुमेर के, मनौ लरयो चहुँ फेर ॥ ११ ॥

छन्द।

घनै घाइ सिरही सिर लागे। तीनक घाइ तुरग तन जागे ॥
पाइन अचल हाथ चल कीने। हाँकतु भिरत जुद्धरस भीने ॥
सुभट भतीजे ऊपर आरी। परी भीर छत्रसाल निहारी ॥
बदन रंग आनन छवि छाई। अरि सिर घालि ...

... गर्दन पर उँगली रखने से

1—मच्छी = मछली।

काटि कवचधर पुंज उठाये। मीचु बदन तैं देव बचाये॥
अरिन अजीतराइ त्यौं घेरे। तिहिं थल छत्रसाल तब हेरे॥
ते दरबर ही दौर उबारे। जम से जमन जैाम जुत मारे॥
परी भीर जिहिं ओर निहारे। तिहिं दिस तुरकन के दल फारे॥

दोहा।

या विधि श्री छत्रसाल कै, पौरुष कौं पहिचानि।
परे उमड़ रन हांक दै, तुरक तोम[1] त्यौं आनि॥ १२॥

छन्द।

बखतर पोस तीन बल बाढ़े। तिह्न ओर तरवारैं काढ़े॥
दहिनी दिस पीछै अरु आगे। उठे घाल घाई रीस पागे॥
उठ्यो हंकि हय झमकि छतारौ। कीनो तहां अचंभो भारौ॥
चोट चुकाइ तिह्नन की दीनी। आपु उमड़ि मनभाई कीनी॥
पछिलै हांकि हूल सैां मारयौ। काटि दाहिनै कौं कर डारयौ॥
सोहें सैां सोंही[2] असि झारी। तीन सुभट रन दई हँकारी॥
विरच्यैा रन छत्रसाल बुँदेला। कियो खभरि खग्गनि खिझ खेला॥
एक झमक अरु दमक सँहारे। लैहि सांस जब बीसक मारे॥

दोहा।

छत्रसाल जिंहि दिस पिलै, काढ़ि धोप[3] कर मांहि।
तिंहि दिस सीस गिरीस पै, बनत बटोरत नांहि॥ १६॥

छन्द।

छत्रसाल जिंहि दिस धसि[4] धावै। तिंहि दिस बख़तरपोस ढहावै॥
कटि अरिमुंड उछालत कैसे। बटनि[5] खेल खेलतु नट जैसे॥
रुधिर भभकि रुंडन ज्यों मंडी। मानहु जरंत ठुंड[6] बनखंडी[7]॥
घूमन लगे समर मैं घेहा। मनहु उभान भाउ भर भेहा॥

जो खग्गन खेलैंत रूण्ड। २—सोंही = सीधी। ३—धोपे = चौड़ी
—मकर। ४—बटनि = बटों का, गोलियों का।

१—करकर = तड़ातड़। २—[illegible]ढी = जंगल में।

कौन कौन की मार गनाऊँ। असी सवार संग तिहि ठाऊँ ॥
दलमल फौज समद की डारी। रचनहार की मुसकिल पारी ॥
चल दिवान त्यों हल्ला घाले। विरचि खेल खग्गन के खोले ॥
सनमुख सुभट समद के कूटे। तापै घैार रहकला लूटे ॥

दोहा।

लुटत रहकला ऊँट हय, रथत कनातनि खोट ॥
रवि अपनो रथ लै दुरयो, अस्ताचल की चोट ॥ १४ ॥

छन्द ॥

रवि अस्ताचल ओट सिधाये। कछुक तिमिर चकुर छिति छाये ॥
डेरन की करनाते दीनी। लोथैं[1] मांगि समद सब लीनी ॥
दियौ दाग इन उन खनि[2] गाड़ी। रन भारत फिर रार न माड़ी[3] ॥
दाग देत घटिका इक बीती। गोरैं[4] खनत राति सब रीती ॥
सौथ चुकाइ कूच निरधारे। समद कलिंदी पास सिधारे ॥
छत्रसाल परना[5] को आये। जग में जीत निसान बजाये ॥
रहे आपु परना में तौलौं। सुरहे[6] धाइ सबनि के जौलौं ॥
सुनी समद की सबनि लराई। सूबनि दिल में दहसत खाई ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते अबदुलसमद पराजयो नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

१—लोथ = शव। २—खनि = खोदकर। ३—माड़ी = की।
४—गोरैं = कबरें। ५—परना—पन्ना, यह बुंदेलखंड की छत्रशाली का एक बड़ा प्रतिष्ठित राज्य है। पन्ना नगर का प्राचीन नाम परना था।
६—सुरहे = पूरे हुए, मर आये, अच्छे हो गये।

इक्कीसवाँ अध्याय ।

—:०:—

दोहा ।

टोला लरि गजसिंह धरि, छांड़ो डांड चुकाइ ।
लूटि भैलसा की मुलक, दीनो आग लगाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

आग लगाइ देस में दीनी । सुनि वहलोलखान रिस कीनी ॥
त्यौं दल सजि इलगारन धायो । मरद मयानौ जौ जग आयो ॥
नौ हजार वखतरिया ताजे । देत पाइरै पाइग[1] राजे ॥
धामौनी तै चढ़यो मयानै । बांधे सीस जूझ कौ बानौ ॥
जगतसिंह बानैत बुँदेला । आड़े भयो ओड़ि बगमेला ॥
संग तीन से तुपक सकेलै[2] । नौ हजार सो लरयो अकेलै ॥
अरयो उमड़ि मड़ियादुहु मैड़े । तुरक दरेरि चल्यौ तिहि पैड़े ॥
फौज कोस चारक पर आई । वन बाघन तंह मार मचाई ॥

दोहा ।

मड़ियादुहु तै उमड़िकै, कोस चार पै धाइ ।
डेरा परत दमानिकिन, मारे तुरक बजाइ ॥ २ ॥

छन्द ।

गिरे तुरक चालिसं बल बाढ़े । नौक नौक लसगर तैं काढ़े ॥
त्यौं वहलोलखान रिस कीनी । तुरतहिं वंब कूच की दीनी ॥
ठिल्यो उमड़ि मड़ियादुह सोहे । जगतसिंह तंह अरयौ भिरोहै ॥
चढ़ि मड़ियादुह सैां दल लागे । उमड़ि पठान भिरे रिस पागे ॥
[illegible] [illegible] झुक्यो गलदारे । नौकि नौकि लसगर ते मारे ॥
जो खगन खेलत [illegible] [illegible] जूटे । त्यौं त्यौं गोलिन सौ रन फूटे ॥

१—करकर = तड़ातड़ । २—[illegible] रिसाला । २—सकेलै = इकट्ठा किये हुए ।

खाइ खाइ गोलिन की चोटैं। रनमंडल लोटन[1] से लोटैं ॥
जो दिन में दलि दुवन करेरे[1]। रात कटक पर दिये दरेरे ॥

दोहा।

सात धौस इहि विधि लरे, बान बांध बलवंत।
रातिहु दिनहु ठठाइ कै, करै ठोंठरे दंत ॥ ३ ॥

छन्द।

दंत ठठाइ ठोंठरे कीने। रहे पठान सकल भै भीने ॥
जगतसिंह के बजे नगारे। कढ़े दरेर बैरि मद गारे ॥
पंचम जगतसिंह को मारयौ। सूबा संक दहर हिय हारयौ ॥
छत्रसाल को सुभट भतीजो। मानहु नैन रुद्र को तीजो ॥
जहां हरौल हनू है ऐसे। तहां रामदल हैहै कैसे ॥
कियो मुकाम सोच उर बाढ़े। रन में विकट बुँदेला गाढ़े ॥
करत विचार कछु न बनि आवै। पातसाह कैसे मुख पावै ॥
तब उर में साहस धरि धायो। सूबा उमड़ि राजगढ़ आयो ॥

दोहा।

छत्रसाल बैठ्यो जहां, उमगतु अरिदल हेरि।
उमड दलन सूबा तहां, लयो राजगढ़ घेरि ॥ ४ ॥

छन्द।

सूबा उमड़ि राज गढ लाग्यो। छत्रसाल जंग रनरस जाग्यो ॥
पिले तुरकदल उमड़न आवै। गढ की सौंह[illegible] दाब न पावै ॥
पोडि पोडि अरि के बगमेला। गढ़ते[illegible] काढि लरै बुँदेला ॥
खान खपाइ खेत में डारे। भति[illegible] खाइ मसहार डकारे ॥
हाथी चढ्यो हरौल बिदासन[1]। धक[illegible] ताकि धनधोरन मारयो ॥
गिरयो हरौल हिंदुपस धावै। रन[illegible] फेरि महावत मार्यो ॥

सूबा लखी अमारी सूनी । त्यौं बाढ़ी दिल दहसत दूनी ॥
तीन द्यौस लौं लरयो मयानौ । चौथे दिन उठि कियौ पयानौ ॥

दोहा ।

खेत छांड़ि सूबा चल्यौ , दिल मे दहसत खाइ ।
छत्रसाल के धाक[1] तै , मच्यौ धमौनो जाइ ॥ ५ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते वहलोलखान मयानौ
मरणं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

बाईसवाँ अध्याय।

छन्द।

छत्रसाल त्यों करी तयारी। कुटरी मारि जसोपुर जारी॥
सील सुहावल कौं तंह कीनौ। सासन मानि सीस पर लीनौ॥
घटरा घेरि बनाफर मारे। मरद महोबे डेरा पारे॥
मौंधा लूट महा मन भाये। उमडि कटक सिंहुड़ा पर धाये॥
तहाँ मुराद खान मरदानो। उतै दलेलखान को थानो॥
पैठ्यो पैंठ चौथ बिन दीनै। जौम[1] दलेलखान कौ लीनै॥
तहाँ दल छत्रसाल के लागे। लरे पठान जुद्धरस पागे॥
कढ़े कोट तैं करि खग हेला। चोडि बुंदेलन के बगमेला॥

दोहा।

समसेरन सेल्हन तहाँ, मच्यो घोर घमसान।
घटे न मन जिनके लरत, कटे हजार पठान॥ १॥

छन्द।

खेत मुरादखान तंह आयौ। लूट्यो कटक जहाँ भर पायौ॥
छूट्यौ बैरीसाल[2] दतारौ[3]। झूकत झुमत सदा मतवारौ॥
लूटे अतुल निसान नगारे। तंबू लुटे कनातनि वारे॥
लये लूट चौदह सै घोरे। फिरत कटक में डोरे डोरे॥
लुटे सिलैखाने तोसदखानें[4]। लुट्यो सहर केतिक को जानें॥
जौ दलेल सूबा गजजायौ। अति बलवंत साह मन भायौ॥
धाइ सेर बीसक की रानें[5]। धकाधकी हाथिन सौं ठानें॥
आके धाक चहूं दिस धावै। रन में ताहि कौन थिरमावै[6]॥

१—जौम = अभिमान। २—बैरीसाल = हाथी का नाम था। ३—दतारौ = भीषण दाँत वाला। ४—तोसदखाने = शुद्ध तोशाखाना। ५—रानें = पट्ठों की जाँघें। ६—थिरमावै = रोके।

दोहा ।

छत्रसाल ताकौ सहर, लसगर[1] लीनौ लूट ।
कुल दिल्ली दल बद्दल कौं, गयौ धुरा लौ टूट ॥ २ ॥

छन्द ।

वाकनि खबर लिखी ठिकठाई । सो हजूर हजरत के आई ॥
चंपित के छत्रसाल बुँदेला । लियौ लूटि सिहुड़ा बगमेला ॥
मरद मुरादखान रस मारयो । गरब दलेलखान कौ गारयो ॥
यह सुनि साह कछु न रिस आनी । छत्रसाल की जीत सुहानी ॥
कबहु दलेल जौम जिय जागै । बोले दुनै साह के आगै ॥
ताकौ अनखु उतै उर छायौ । सो कहिबे कौ ऊतर पायौ ॥
त्यौं दलेल मुजरा कौं आयौ । पातसाह यह किसा सुनायौ ॥
भुजा भतीजे की बल बाढ़ी । खेल्यो खेल चचा की डाढ़ी ॥

दोहा ।

यह सुन स्रवन दलेलखां, रह्यौ अचंभै भोइ ।
यह धौं साह कह्यौ कहा, अर्थ अनूपम गोइ ॥

छन्द ।

मुजरा करि डेरन कौं आये । पहुँचे लिखे देस तें पाये ॥
लिखी खबर जैसी इत बीती । परी मुलक पर धार अचीती ॥
मांग चौथ छत्रसाल पठाई । सो बिन दियै फौज चढ़ि धाई ॥
लरे पठान उमड़ि रिस बाढ़े । दंतनि चाबि लोह कौं काढ़े ॥
त्यौं पिलि सेल्ह बुँदेलनि बाहे । सहस पठान खेत में ढाहे ॥
कस्यो मुरादखान मन आछे । रन सनमुख पग धरे न पाछे ॥
फर[2] में फतै बुँदेलनि पाई । लूट मताह[3] करी मन भाई ॥
खबर दलेलखान यह बाची । रिस बढ़ि कुटिल भृकुटि चढ़ि नाची ॥

१—लसगर = शुद्ध-लश्कर, सेना की छावनी, या सेना का बाजार ।
२—फर = रणभूमि ।   ३—मताह = माल ।

दोहा ।

नाची रिस भृकुटीन चढ़ि, जान्यौ जीवन बाद[1] ।
विदा चाहिं चित साह सों, तुरतहि करी फिराद ॥ ४ ॥

छन्द ।

तहाँ साह यह ऊतर दीनो । पावै क्यों न आपनो कीनो ॥
हैान चाह जो जैाम[2] जनावै । क्यों न सज़ाइ हालही पावै ॥
खिसी दलेलखान उर छाई । याद अनूप अरथ की आई ॥
डेरा दिये बार अनखानै । हाथ मीड़ मन मन पछितानै ॥
कछु दिन गये सुमति उर आई । होनहार सों कहा बसाई ॥
तब दच्छिन तै लिखे लिखाये । छत्रसाल के पास पठाये ॥
यह कछु लिखी लिखन में आई । चपति हुते हमारे भाई ॥
तुम उत करी कथा यह जैसी । तुम्हें बूझियत[3] हुई न ऐसी ॥

दोहा ।

लिखे बाँचि छत्रसाल तब, कियो सलूक विचारि ।
हरे सोच सों साँच ह्वै, विग्रह दियो बिसारि ॥ ५ ॥

छन्द ।

चैाथ बँधार देस में लीनी । सामा[4] सबै फेरि तब दीनी ॥
दियो फेरि नैासान नगारो । दियो फेरि हाथी मतवारो ॥
तोपैं दईं फेरि मन भाई । जग में जाहिर करी बड़ाई ॥
धनि छत्रसाल सुजस जग गावै । ऐसी विधि कासों बनि आवै ॥
काटत पहिल काटई हारी । फेरि पछेरै पैांछि सुधारी ॥
मिहुड़ा कुर्की चैाथ मन मानी । त्यैां मटैांध पर फैाज पलानी ॥
मुनिया जुरे तहाँ टिकठाये । अरु पठान मोंधा के आये ॥
हिंदू तुरक जुरे तंह ऐसे । भरत तीर तरकस में जैसे ॥

1—बाद = व्यर्थ । 2—जैाम = अहंकार । 3—बूझियत = उचित ।
सामा = सामान ।

दोहा ।

उदभट भीर मटौंध में, जुरी ठान रनठान ।
उमड़ि दलनि तासों लग्यो, छत्रसाल बलवान ॥ ६ ॥

छन्द ।

तीन तरफ ह्वै मटवध[1] घेरयौ । कठिन कोट जंह चहुं दिस फेरयौ ॥
मेघ राज बाईं दिस लागे । लीने संग सुभट अनुरागे ॥
दहिनी दिस उमड़े बलदाऊ । सनमुख छत्रसाल नृप साऊ ॥
धरयौ कोट गढ़धारिन गाढ़े । दुहुं दिस जुरे सुभट बल बाढ़े ॥
छत्रसाल के सुभट अगौवा । बागें लई राइमन दौवा ॥
तब उन एक पलीती[2] दीनी । जगत निरास विधाता कीनी ॥
बजी बंदूखें तरभर[3] माची । समर उमंगि कालिका नाची ॥
दौवा तमकि तेग कर लोली[4] । त्यौंहि लगी अचानक गोली ॥

दोहा ।

गोली ज्यौं उत ह्वै कढ़ी, बाढ़ तुरीतन फोरि ।
घोरा ले फर में गिरयौ, भूमि रुधिर में बोरि ॥ ७ ॥

छन्द ।

घाइल ह्वै हरि बंस तहांहीं । गिरयौ उमँडि रन मंडल मांही ॥
ज्यौं अरि हरषि हूह करि धाये । सिर काटन कौं बलगत आये ॥
त्यौं अनखाइ हियै रिस कीनी । काढ़ि कृपान पानि में लीनी ॥
काटि दुचन सिर संभु नचाये । घाइल हुवौ सुमार बचाये ॥
त्यौं उत ढोल जुझाऊ बाजे । कठिन कोट धरि गढ़धर गाजे ॥
छत्रसाल त्यौं भाइ भिरौहे । झमकि नैन सोभा भयो सोहे ॥
अरुन रंग आनन छवि लीने । माथे घूघ[5] लोह की दीने ॥
घूघहि नाक लोह की लागी । छाती छटा छूट छवि जागी ॥

१—मटवध = मटौंध स्थान विशेष जिला बांदा में है । २—पलीती दीनी = बत्ती लगा दी, आग लगा दी । ३—तरभर = खलबली । ४—लोली = हिलाई । ५—घूघ = शिरत्राण ।

दोहा।

तरल तुरंगम की तनक, तुरत बगग भमकाइ।
परदल में हांक्यौ छता, खाईं कोट नकाइ[1] ॥ ८ ॥

छन्द।

खाईं कोट अचानक नाक्यौ। परदल पैठि जनारौ हाक्यौ ॥
काढ़ि कृपान म्यान तें लीनी। जुरे जुद्ध तिनके सिर दीनी ॥
काटन लग्यो दुवनदल ऐसे। मिरयो भीम परदल में जैसे ॥
परवतसिंह संग नंद दीने। घन घमसान कृपानन कीने ॥
उत कमनैत[2] अचूक[3] सिपाही। भलक धूप की चित दै चाही ॥
तिहि सर लोह नाक तकि मारयो। गड़यो गड़यो टरयो नहि टारयो॥
सो छवि देख संभु सुख मान्यौ। दूजो[4] एकदंत करि जान्यौ ॥
यौं छत्रसाल लरे असिघाई। लोथैं गनै सात सै आई ॥

दोहा।

त्यौं अरिदल दहसत बढ़ी, मिले मवासी आइ।
डांड लियो तेंह तुरत ही, सोरह सहस मराइ ॥ ९ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते मौधामदौंध-
विजयो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

१—नकाइ = लंघा कर। २—कमनैत = धनुर्धर योद्धा।
३—अचूक = वह योद्धा जिनका ताका हुआ लक्ष्य कभी खाली नहीं जाता है।
४—दूजो एकदंत करि जान्यो = अर्थात् शिवजी ने उसे बाण से विधा हुआ देख कर दूसरा गणेश समझा।

तेइसवाँ अध्याय।

—:o:—

छन्द।

मारि मटौंध डांड़ लै छाँड़्यो। फेरि धमोनी विग्रह मांड्यो॥
मारि धुरौरा थुरहट घेरी। चहु दिस आन आपनी फेरी॥
कोटा मारि कचीरहि[1] आये। खंडि खडौतु करे मन भाये॥
फिरि जलालपुर दलमल मार्‌यो। दौरि दलनि विलगांवे वार्‌यो॥
उमड़ि वन्होली डेरा पारे। साहकुली त्यौं निकट हँकारे॥
साहकुली की सुनी अवाई। त्यौं अफगन पड़वारी पाई।
संग अस्वार चार सै लीने। पड़वारी आये भय भीने॥
दुंदु बुँदेलनि कौ अति भारी। चिंता मनै बड़ी अखत्यारी॥

दोहा।

मीचु अगल सु भीर लें, आये अफगनखान।
सुनि रनवीरन के हिये, बाढ़्यो अधिक गुमान॥ १॥

छन्द।

बढ़े गरव लघु फौज निहारी। होनहार गत टरै न टारी॥
लूट लूट सूबा बल बाढ़े। भये गरब गज पै चढ़ि ठाढ़े॥
सबनि परस्पर यों बल बांधे। विक्रम ब्यौंत न काहू कांधे॥
अब यह फौज लूटही लीजे। धेरिन घाउ न कोऊ कीजे॥
अफगन हिये दीनता धारी। जो दीनता दयालहि प्यारी॥
मन क्रम वचन यहे चित चाहे। अबके प्रभु तू सरस निबाहे॥
मरवौ अगै जुद्ध कौ आयों। मनौ कबंध सीस बिन धायो॥
हुती न मीच मरै वह कैसे। इनके चले अचानक जैसे॥

१—कचीर = यह स्थान झांसी के निकट है और कचीर ककरवई नाम से प्रचलित है।

दोहा ।

करन्यौ दपखूर्यो अरिदलन , परयो अचानक चाल ।
मुरकि मरकि फिर फिर लर्यौ , लै कमान छत्रसाल ॥ २ ॥

छन्द ।

चालु परै जे लरैं अकेले । भुजदंडन बल अरिदल पेले ॥
गाढ परे हिय हिम्मत आने । तेई सूर प्रसिद्ध बखाने ॥
मुरक लरयो छत्रसाल बुँदेला । तुरकन के घोड़े बगमेला ॥
बखतर पोस उमड़त आये । तिन पर तमकि बान बरसाये ॥
बखतरपोस पाँच तकि मारे । धर पर धर फरकैं फर डारे ॥
तंह सरदार सेरगो जूझौ । बैरिन ज्यौंन घाल कौ सूझौ ॥
छत्रसाल सौ सुभट न होतो । तौ दल चलत बजावन को तो ॥
सबै गाबगिरि दबत उबारे । डेरा आइ मऊ में पारे ॥

दोहा ।

कह्यौ सबनि समुझाइयो , जिन भजिये पछिताउ ।
भजे कृष्ण अवतार जे , पूरन प्रगट प्रभाउ ॥ ३ ॥

छन्द ।

कालजमन जब निकट हँकार्यो । सो मुचुकुंद डीठ सौ जार्यो ॥
द्रोनहि पीठ पंडवनि दीनो । कौरव मारि जीत सब लीनो ॥
दई पीठ बलि बावन काजै । ते बस करि राखे दरवाजै ॥
तातैं मन मानौ मत ऊनौ[1] । भीमहि भूमि छुयत बल दूनौ ॥
या बिधि सबै सुभट समुझाये । त्यौंही प्राननाथ[2] प्रभु आये ॥
तिन के मते फतै फुरमाई । सेना सावधान ह्वै आई ॥
दुहूदर जाइ दौर दल मेल्यौ । त्यौं अफगान उमग्यो दल पेल्यो ॥

---

[1]—ऊनौ = थोड़ा । [2]—प्राननाथ = पृष्ठ १२० देखो ।

दोहा ।

भयो जूझ मुरक्यौ तुरक, घट्यौ ना वाकौ जोर ।
फेरि पुरा के घाट पर, आयो उमड़ि अमीर ॥४॥

छन्द ।

अफगन अधिक गरब उर आन्यो । सब तें बली अपनपो मान्यौ ॥
जोरि फौज नीसान बजाये । उमहि पुरा के घाटहि आये ॥
छत्रसाल जँह अरे भिरोहे । तहां तुरक पेल्यो दल सोहे ॥
गोलिन मची मार तंह भारी । परी दिसान धूम अँधियारी ॥
त्यों तुरकन बोले रन हल्ला । जम के भये कटीले कल्ला ॥
लरयौ नरायनदास अगौवा । रन में रुप्यौ राइमनि दौवा ॥
खांडेराइ घाट तंह पायो । तुरकन कटक उमंड दबायो ॥
जम से जमन जोमजुत जूटे । सुभटन विकट मोरचा छूटे ॥

दोहा ।

छुटे मोरचा तोपची, आइ रुपे तिहिं ठोर ।
छत्रसाल जिहिं थल अड़े, छत्रिन के सिरमौर ॥५॥

छन्द ।

छत्रसाल छत्री छवि छायो । हांक्यौ उमड़ि सबनि बल पायो ॥
पेले पार घाट कों बांधे । मेघराज विक्रम है कांधे ॥
गलबल सुनत डरत उठि धायो । गोलिन घन घमसान मचायो ॥
माधोसिंह कटेरा वारो । सनमुख तुरक दरेरि हँकारो ॥
पिले तुरक त्यों रनरस भीने । तन कों लोभ न तनिको कीने ॥
त्यों छत्रसाल तान निज भौहें । लै बंदूक पट्यौ दल सौहें ॥
गोलिन तीन मीर तकि मारे । गिरे डील पर डील डरारे ॥
चले पाइ तुरकन के त्यांही । छत्रसाल रन गाजी ज्योंही ॥

दोहा।

मथ्यो मथ्य रन पैठि कै, मथ्यौ चहूं दिस चाल।
अफगन सैन समुद्र भौ, मंदर भौ छत्रसाल ॥६॥

छन्द।

सैदलतीफ तहां चलि आयौ। मरत सैद अफगनहि बचायौ॥
दई चौथ अरु डांड चुकायौ। जीवदान अफगन सब पायौ॥
थाकनि लिखी खबर तब ऐसी। सुनी साह बीती इन जैसी॥
अफगन कौ तागीरि आई। साहकुली कौ पाग बँधाई॥
आठ हजार सुभट सँग लीने। साहकुली उमड़यो रिस कीने॥
साहकुली के धौंसा बाजे। मिले नंदमहराजा ताजे॥
भये हरौलो फौज, बल पायौ। डंका देन मऊ पर आयौ॥
दौरि गुरैया गिरि सौं लागे। छत्रसाल जंह रनरस जागे॥

दोहा।

बोढ़ि अस्त्र धाइन नहीं, पिले नंदमहराज।
लै निसान परबत चढ़े, साहकुली के काज॥७॥

छन्द।

इन इन दीनो पक पलीती। अरि पर प्रलै राति सौं बीती॥
गिरि गरजि गाजै सी गोली। डगडग चमू अरिन की डोली॥
धाउ नंदमहराजहि जग्यौ। दहसन मानि तुरकदल भाग्यौ॥
तजे नंदमहराज तहांही। घाइल ह्वै करि गिरे जहांही॥
त्यौं छत्रसाल दया दिल धाये। धरमद्वार दै प्रान बचाये॥
साहकुली दहसन तहं मानो। तब अपने उर मैं यह आनो॥
भजौ भजौ जैसौ सब मारे। तिहिं डर डेरन डेरा पारे॥
डेरा परत मुली पर आई[1]। त्यौं छत्रसाल करी मनभाई॥

१—मुली पर आई = अंधेरा हो चला।

दोहा ।

साहकुली के कटक पर, दियो दरेरो[1] राति ।
अकबकाइ उर पेंड़ तजि, मानो डांड़ अराति ॥ ८ ॥

छन्द ।

आठ हजार डांड़ जब मान्यो । उतरयौ साहकुले मुख पान्यो ॥
चौथ सिवाइ दई मुहमांगी । सूबन के उर दहसत जागी ॥
कौंच लौचि कीने मन भाये । मऊ आइ निसान बजाये ॥
त्योंही प्राननाथ[2] प्रभु आये । दिल के कुल संदेह मिटाये ॥

---

१ --दरेरो दियो = छापा मारा ।

२—-प्राननाथजी = यह एक महात्मा थे जो काठियावाड़ प्रदेश के जामनगर नामक स्थान के रहने हारे थे । इनके उपदेश श्रीमान गुरु नानकजी के उपदेशों से बहुत कुछ मिलते हुए हैं । जिस प्रकार श्रीगुरु नानकदेवजी के अनुयायियों में श्रीगुरु-ग्रंथ साहब का आदर है वैसे ही श्रीप्राणनाथ जी के अनुयायियों में श्रीप्राणनाथ जी के उपदेशसंग्रह का जो "कुलज़म" नाम से प्रसिद्ध हैं आदर है । इन महाप्रभु के सम्प्रदाय के लोग "धामी' कहलाते हैं । प्राणनाथ जी का उपनाम "जी साहब" भी है । "कुलज़म" शब्द अर्बी भाषा का है जिसका अर्थ अगाध नद के हैं । "कुलज़म" ग्रंथ की भाषा में अर्बी, सिंधी, काठियावाड़ी तथा अपभ्रष्टरूप में संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं परंतु विशेष कर ग्रंथ की भाषा अर्बी और सिंधी शब्दों से भरी है और प्राणनाथ जी के उद्देश्य श्रीगुरु नानकदेवजी के उद्देश्यों से बहुत कुछ मिलते हुए हैं । ऐसा जान पड़ता है कि जब दुराचारी मुग़ल सम्राटों और विशेष कर क्रूर औरंगज़ेब के भीषण अत्याचारों से हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म पर घोर आघात हो रहे थे उस समय महानुभाव भगवान श्रीकृष्णचंद्रजी के पावन सिद्धान्त "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं-सृजाम्यहं । रक्षणाय च साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे" के अनुसार हिन्दू जाति तथा धर्म की रक्षार्थ भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों में महान आत्मायें अवतरित हो रही थीं । उत्तरीय भारत-भाग में धर्मकेशरी महा-

उन ऐसौ कछु ज्ञान बघान्यौ। अपनौ करि जातै जग जान्यौ॥
परम धाम की लीला गाई। प्रेम लच्छना भक्ति दृढ़ाई॥

वीर गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज अवतार ले धर्म तथा जाति की रक्षा के लिये उद्यत थे। दक्षिण में वीरकेशरी छत्रपति महाराज शिवाजी प्रगट हुए थे। इसी तरह भारत के मध्यमीय भाग में परम नीतिज्ञ धर्मधुरंधर महाराज प्राणनाथ जी ने जन्म लिया था। ये महाराज अपने पावन उपदेश देते हुए महेवा में पहुँचे और महाराज छत्रसाल से मिले। इन्होंने अपने उत्तेजित उपदेशों से छत्रसाल जी को औरंगज़ेब के अत्याचारों से हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये उत्तेजित किया। जनश्रुति है कि छत्रसाल जी ने महात्मा से निवेदन किया कि मेरे पास इतना कोष नहीं है कि मैं दिल्लीश्वर की सेना के विरुद्ध रण रोपने को सेना एकत्रित करूँ। उस समय महात्मा ने छत्रसाल जी को आशीर्वाद दिया और वे उन्हें अपने साथ पन्ने की ओर लिवा ले गये और कहा कि तुम अपने घोड़े पर चढ़ कर आज दिन भर घूम आओ, जितनी दूर तुम घूम आओगे उतनी दूर में "हीरा" पैदा हो जायगा। महाराज ने ऐसा ही किया, और कहा जाता है कि उसी समय से महात्मा के आशीर्वाद से वहाँ हीरा पैदा हो गया। वास्तव में ऐसा जान पड़ता है कि विज्ञ महात्मा ने उस भूमि को देख कर अनुमान कर लिया था कि यह भूमि हीरे की खानों से भरी है और यह बात महाराज छत्रसाल को बता दी। उसी समय से वहाँ से हीरा निकाला जाने लगा और उसी हीरे की पुष्कल आय से महाराज छत्रसाल ने एक बृहत् कोष एकत्रित किया और उसी कोष के बल एक बड़ी सेना औरंगज़ेब के विरुद्ध प्रस्तुत की। जिस स्थान पर महात्मा प्राणनाथ जी और महाराज छत्रसालजी वर्तमान पन्ना के निकट पहले पहल जाकर ठहरे थे वह "पुराना पन्ना" के नाम से प्रसिद्ध है और वहाँ एक दालान उस घटना के समय की अब तक बनी है। महात्मा प्राणनाथ के विषय में इसी स्थान के संबंध में एक और चमत्कृत वार्ता प्रसिद्ध है। वह यह है कि इसी स्थान के निकट एक स्रोत था। उसका जल विषमय था। जो जीव जन्तु उस जल को पी लेते थे अथवा छू लेते थे वे तुरंत मर जाते थे। महात्मा प्राणनाथजी ने अपना दाहना पाँव उस जल-स्रोत में डुबो दिया और कहा कि यह विष की नदी अब अमृत की नदी हो गई।

सब सौं कह्यौ जगौ रे भाई। प्रगटि जागिनी लीला आई॥
तुम हौ परमधाम के वासी। नित्य अखंड अनंद विलासी॥

सब लोग इसे मंझा कर पार उतर जाओ। सबने महात्मा के वचन पर विश्वास करके वैसा ही किया। यह घटना-स्थल अब तक प्रसिद्ध है। नदी पार जाकर पन्ना में धर्मसागर नामक तड़ाग के तट पर "मंदारतुंग" नामक पर्वत की तलहटी के अंचल में एक पत्थरशिला पर महाराज छत्रशाल के मस्तक पर महात्मा प्राणनाथ जी ने तिलक किया और अपना खड्ग निकाल कर उनको बँधाया। इस स्थान पर एक छोटी सी मढ़ी बनी है जो खजरामठ के नाम से प्रसिद्ध है। पन्ना नरेश दशहरे के दिन आकर यहीं खड्गपूजन करते हैं और सब से पहले यहीं पान का बीड़ा दशहरे के दिन महात्मा प्राणनाथ जी के नाम का रक्खा जाता है और यहीं से दशहरे के दिन की सिंधुरयात्रा प्रारम्भ होती है। यही प्राणनाथ जो महाराज छत्रशालजी के धर्म गुरु थ और जिस प्रकार प्रातस्मरणीय "समर्थ रामदासजी", छत्रपति शिवाजी के धर्मोपदेशक और उत्तेजक थे उसी प्रकार श्रीमहात्मा प्राणनाथ जी बुंदेल-कुल-तिलक महाराज छत्रशाल जी के लिये थे। इन महात्मा की समाधि एक बड़े दिव्य और भव्य मंदिर में पन्ने में है। वहीं इनकी टोपी, पंजा, और ग्रंथ अद्यापि रक्षित हैं। यह मंदिर धाम के नाम से प्रसिद्ध है और इसी धाम के संबंध से महात्माजी के अनुयायी धामी नाम से प्रसिद्ध हैं। ये लोग हीरे का व्यापार करते हैं और हीरे को सान पर चढ़ाते तथा उसके कमल आदि बनाते हैं। हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि हमने ऐसा दिव्य भव्य और स्वच्छ मंदिर अद्यापि और कहीं नहीं देखा है। इस मंदिर में धर्मशाला, उपदेशमंडप, महात्मा की सेज आदि नाना स्थान बड़े विस्तार में बने हैं और यहाँ महात्माजी तथा महाराज छत्रशाल के चित्र लगे हैं। यहाँ प्रति दिन धर्म उपदेश, तथा कुलज़म का पाठ होता है। इन महात्मा के अनुयायी बुंदेलखंड, काठियावाड़, नैपाल आदि स्थानों में बहुतायत से हैं और शरद पूर्णिमा के अवसर पर पन्ना में धाम के दर्शनार्थ आते हैं और बड़ा उत्सव मनाते हैं। सुना जाता है कि इस मंदिर में एक बहुत बड़ा कोष हीरों का है। समृद्धिशील भक्त जन आ कर इस मंदिर में उत्सव के समय हीरे भेंट करते हैं।

दोहा।

देखन कौं मांग्यौ हुतौ, तुम अच्छर पै खेल।
सो देखत ही जुग गये, उहां न पल को झेल[1] ॥ ९ ॥

छन्द।

अच्छर ब्रह्म अनादि बखान्यो। बाल खेल खेलन मन मान्यो॥
नैनकोर जिहि घोर निहारै। तंह ब्रह्मांड रचै संहारै॥
पूरनब्रह्म किसोर किसोरी। सखिन सहित बिलसै यह जोरी।
पूरन प्रेम सबै सुख साजै। आनँद मगन एक रस राजै॥
तंह मनिमय महलनि छवि छाई। हीरमई सोहत अँगनाई॥
प्रफुलित फलित बेलि द्रुम कुंजै। मधू मनोहर मधुकर गुंजै॥
जल थल द्रुम पंछी अविनासी। स्वय सिद्ध सब स्वयं प्रकासी॥
जाही समै जौन रिपु चाहै। तबही ताके गुन अवगाहै॥

दोहा।

सदा फरे फूले तहां, तरु बेलिन फल देत।
जुगल किसोर सखीन सँग, बिहरत कुंज निकेत॥ १० ॥

छन्द।

बिहरत तहां किसोर किसोरी। तहां होत चित ही की चोरी॥
कुटिल चलत तंह दोइ निहारै। भ्रू बिलास कै दृग अनियारै॥
तहं कठोर उन्नत कुच होई। पैार कठोर न उन्नत कोई॥
नैनन मह कज्जल मलेनाई। नूपुर मुखिन मुखरता पाई॥
सकल कलनि धुनि कोकिल बोलै। रतिरस तरुनि अनति जहं योलै॥
चंचलता चलदल ही में है। लहर सचलन जल ही में है॥
द्रोह बिछोह दुखन की नाही। कंटग्रहन केलि ही माही॥
आनँद मगन परस्पर खेलै। बिलसत लसत मीय मुख मेलै॥

---

[1]—पल को झेल = विलम्ब।

दोहा।

भूषन अंगन देत छवि, अंगन भूषन देत।
बसन सुगंध समानता, तन सुगंध की लेत॥ ११॥

छन्द।

तिहिं थल विहरत जुगल विहारी। सखिन समेत सदा सुखकारी॥
सरस विलास करैं मन मानै। पलकौ विरह न कोऊ जानै॥
तहां राज मन में यह आनी। ऐसै जोगहि के रस सानी॥
ए वियोग रस जानत नाही। त्यों होती सब के चितचाही॥
इनकों सब विलास हम दीनै। बिछुर मिलन के सुखहि न चीनै॥
बिछुरे मिले प्रेमरस सानै। तिनकौ आनँद कौन बखानै॥
इच्छा यहै राज उर लीनी। त्यों इच्छा अच्छर को दीनी॥
जो किसोर लीला रस सानी। सो अच्छर देखन मन आनी॥

दोहा।

चाह बढ़ी सब के हिये, लागे सखिन उमाह।
अच्छर कौ अदभुत हमैं, लेख दिखावो नाह॥ १२॥

छन्द।

खेल देखवे की रुचि जानी। तब सखीन सौं बोले बानी॥
देखत खेल मगन अति ह्वै हौ। हमकौ बिसरि सबै तुम जैहौ॥
दुख अरु विरह खेल में आही। तंह देखत ह्यां की सुधि नाही॥
तब सखियन पर वचन उचारे। दुख विछोह कैसे है प्यारे॥
हमहि छपाइ आजु लौं राखे। ते हम देखन कौ अभिलाषे॥
भूलि होंहि तुमतें जो न्यारी। तो सुधि लीजो नाथ हमारी॥
ज्योंही सखिन चाह यह कीनी। निमिष नींद अच्छर त्यौं लीनी॥
तातें सुपन सिष्टि उपजाई। तामें सुरति सखिन की आई॥

दोहा।

इहां और लीला भई, सुपन सिष्टि कों पाइ।
रचना रचिवे कौं चल्यो, अच्छर कौ मन भाइ॥ १३॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथशिक्षा नाम
त्रयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

चौबीसवाँ अध्याय ।

छन्द ।

रचना रचिबे कौं मनु धायौ । महत्तत्व सो इहां कहायौ ॥
काल शक्ति के छोभित कीने । अहंकार उपज्यौ गुन लीने ॥
अहकार तहं त्रिबिध जनायौ । सात्विक राजस तामस गायौ ॥
तामस अहकार उपजायें । पाचौ भूत पाच गुन ल्याये ॥
शब्द स्पर्श रस रूप बनाये । गंध सहित गुन पांच गनाये ॥
कान सबद सुनिबे कौं पाये । त्वचा परस के भेद बताये ॥
रसना स्वाद रसन के लीने । रूप देखिबे को दृग दीने ॥
गंध ग्रहन नासिका लीनै । पान्च पांच के भये अधीनै ॥

दोहा ।

पांच ज्ञानइन्द्रिय भये, पाच स्वाद के हेत ।
पाच भूत कौ जगत रचि, चेतन कियो निकेत ॥ १ ॥

छन्द ।

चेतन तहां आपुही आयें । सोरह कला रूप छबि छाये ॥
जल अगाध चारिहु दिस जोयै । सेज बिछाइ शेष की सोयै ॥
यह नारायन रूप कहायो । ताकी नाभि कमल उपजायो ॥
उपजे तहां चार मुखवारे । ब्रह्मा सृष्टि बनावनहारे ॥
ब्रह्मा अपने मन तै कीने । छहौ पुत्र तप के रस भीनै ॥
प्रथम मरीचि अत्रि पुनि आना । और अंगिरा उर मे माना ॥
फिरि पुलस्त्य अरु पुलह बखानै । ऋ छटए ते क्रतु पहिचाने ॥
इनतैं उपजी सृष्टि तहां लौं । थावर[1] जंगम जीय जहां लौं ॥

[1]—थावर = स्थावर

दोहा ।

लोक देस रचना रची, कही कौन सौं जाइ ।
तिन मैंव्रजमंडलरच्यो, रुचि सों अति सुख पाइ ॥ २ ॥

छन्द ।

तहं बसुदेव नंद तपु कीनो । तिन्हे आइ दरसन प्रभु दीनो ॥
मांग्यो वर यह दुहुन अकेलो । सुत ह्वै नाथ हमारे खेलो ॥
दयो दुहुन को वर मन भायो । लै अवतार आप इत आयो ॥
तो लगि आठ वीस जुग वीते । ह्यां पल के सह सांस न रीते ॥
वढ़े कालजमनादिक भारे । जरासंध से भूप अत्यारे ॥
तिनके दलनि भूमि भय भारी । पीड़ित ह्वै विधि पास पुकारी ॥
धेनु रूप धरि रोवत आई । ब्रह्मा पीर भूमि की पाई ॥
महादेव अरु देवनि लैके । छीरसमुद पर बोले जैके ॥

दोहा ।

तहँ अकासबानी सुनी, लख्यो न कछु आकार ।
हौं आवत व्रज नंद के, हरन भूमि को भार ॥ ३ ॥

छन्द ।

अपने अंस देव लै जाहीं । विलसैं गोप जादवनि माहीं ॥
अरु अपने अंसन सुरनारी । होंहि जादवन की अति प्यारी ॥
यह सुनि ब्रह्मादिक सुख छाये । अपने अपने लोकनि आये ॥
इत अवतार देवकी लीनो । भोजवंस कों भूपित कीनो ॥
तिन्हैं व्याहवे कों मन भाये । सजि बरात वसुदेव सिधाये ॥
भयो व्याह दुहुं दिसि रस लीने । गज रथ तुरग दाइजे दीने ॥
विदा भये वसुदेव प्रवीने । पठवन चले कंस रस भीने ॥
त्योंही उठी गगन में बानी । सुनि रे मूढ़ महा अज्ञानी ॥

दोहा ।

जाहि पठावन जात तू, कीनो हिये हुलास ।
ताको सुत जो आठयो, तातैं तेरो नास ॥ ४ ॥

छन्द ।

यह सुनि कंस मलिन मन कीनो । रस तैं विरस भयो मन भीनो ॥
रिस तैं भई अरुन दृग कोरैं । विष जनु पियो अमृत के भोरैं ॥
कढ़ी कृपान रोसरस छायो । भगिनी के मारन को धायो ॥
ताको देखि अनी सब छोभी । गनन न दोष राज रस लोभी ॥
तहँ बसुदेव विनय रस बोले । महामधुर मृदु बानी बोले ॥
भोजवंस भूपन तुम ऐसे । तुम लाइक नहिं कर्म अनैसे ॥
जौ याके सुत तैं भय जानहु । तौ यह बात हमारी मानहु ॥
अब याके जितने सुत ह्वैहैं । ते सिगरे तुम ही कौ दैहैं ॥

दोहा ।

फिरी कुमत कंस की, अविरज करौ न कोइ ।
कहा देहधारी करै, करता करै सो होई ॥ ५ ॥

छन्द ।

होत सबै करता की कीनो । नृप की विषम बुद्धि हर लीनो ॥
तबहि कंस यह बुद्धि बिचारी । ए बसुदेव भये हितकारी ॥
धावे पुत्र मीच ढिग ल्यावैं । पै प्रतीत यह कैसे आवैं ॥
तातैं इनै बंदि मैं दीजै । अपनैं राजकाज सब कीजै ॥
तब बसुदेव बोलि ढिग लीनै । जकरि जंजीरन में धरि दीनै ॥
त्यौंही तहाँ देवकी राखी । गन्यौ न दोष राज अभिलाषी ॥
बालक छहक देवकी जाये । खग बोलि ते सबै खपाये ॥
त्यौंही गर्भ सातये आये । शेष अंस बलभद्र कहाये ॥

दोहा ।

गिरयौ गर्भ यह सुनत ही, फिरयौ चकैन ह्वै कंस ।
धरयौ रोहिनी के उदर, जोग[१] नींद सौ अंस ॥ ६ ॥

छन्द ।

उदर रोहिनी के जो राख्यो । संकर्षन बल होतहि भाख्यो ॥
गरभ आठयें आयो नामी । सो बैकुंठ धाम को स्वामी ॥

१—जोग नींद = योगनिद्रा, योगमाया ।

सोभा धरी देवकी ओरै। कछु न उपाइ कंस कौ दौरै ॥
मेरौ प्रान लैन यह आयौ। जो अकासबानी मुख गायौ ॥
त्यौं अपनै भट निकट बुलाये। तिन्हैं कंस ए बचन सुनाये ॥
द्वारनि देहु किवारनि तारे। जे गरुड़ सौं टरै न टारे ॥
खबर देवकी की सब लीजै। बालक होइ हमैं सो दीजै ॥
चौकिन सावधान ह्वै जागौ। लोभ मोह के रस मति पागौ ॥

दोहा।

यौं कहि कै अपनै महल, कंस गयौ सुख पाइ।
सावधान ह्वै कै सुभट, चौकिन वैठे जाइ ॥ ७ ॥

छन्द।

चौकिन वैठे सुभट घनेरे। लै वसुदेव कोठरिन घेरे ॥
आये विष्णु गर्भ मैं जानै। ब्रह्मादिक सब गाइ सिहानै ॥
भादौं वदि आठैं जब आई। बुध रोहिनी अधरात सुहाई ॥
वाही समै जनम हरि लीनौ। मात पिता कौं दरसन दीनौ ॥
संख चक्र गद पदम विराजै। भुजनि चार आयुध छवि छाजै ॥
मनिमय मुकुट सीस पर सोहै। भृकुटी वंक चित्त कौं मोहै ॥
जग तैं उदित अंग भुज राजै। ललित पीटपट जुगल विराजै ॥
दीरघ दृग झलमलत अन्यारे। मुकतासुत सोहत अति भारे ॥

दोहा।

सुभग स्याम तन मुकुट अति, पीतवसन छवि देत।
जनु घन उमयौ है मनौ, उड़गन तड़ित समेत ॥ ८ ॥

छन्द।

वहसि रूप वसुदेव निहारै। कोटि जामिनी तिमिर उसारै ॥
खुले किवार दौर दिन दीनौ। द्वार पाल निद्रा वस कीनौ ॥
तब वसुदेव कह्यौ प्रभु प्यारे। खुले भाग अति आजु हमारे ॥
अदभुत रूप दृगनि हम देख्यौ। जीवन जनम सुफल करि लेख्यौ ॥

ये भय हमैं कंस के भारे। उहि मेरे छह बालक मारे॥
जो वह खबर तुम्हारी पैहै। तौ निरदई पापमति लैहै॥
अब तुमकौ केहि भांति बचाऊँ। कौन ठौर यह रूप छिपाऊँ॥
बालरूप तुमकौं करि पाऊँ। तौ दुराइ गोकुल धरि आऊँ॥

दोहा।

सुनत बोल बसुदेव के, बोले बिहँसि कृपाल।
पूरब नप तैं हम तुम्हैं, रूप दिखायौ हाल॥ ९॥

छन्द।

यौं कहि बालिक रूप दिखायौ। ब्रह्मि रूप बैकुंठ पठायौ॥
बाल रूप अच्छर जब कीनौ। तब बसुदेव गोद धरि लीनौ॥
सोवत चौकीदार निहारे। गोकुल कौं बसुदेव पधारे॥
जमुना बढ़ी पार नहिं सूझै। मग बसुदेव कौन कौं बूझै॥
सुत की प्रीति कंस भय भारी। जल में धस्यौ मीच अधहारी॥
करि करुना जमुना मग दीनौ। पाइन उतरि पार पद लीनौ॥
ताही समैं रैन रस भीनौ। जोग नींद जसुदा उर लीनौ॥
चलि बसुदेव नंद घर आयौ। ठौर ठौर सौं उत्सव पायौ॥

दोहा।

पुत्र धस्यौ जसुदा निकट, कन्या लई उठाइ।
फिर त्यौंही जमुना उतरि, मथुरा पहुंचे आइ॥ १०।

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते श्रीकृष्णजन्मवर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

——:o:——

पचीसवाँ अध्याय

दोहा।

सकल पुरान कुरान के, मत सो ज्ञान डिढ़ाइ[1]।
जाते जग छत्रसाल कौ, लग्यौ स्वप्न सम भाइ ॥ १ ॥

छन्द।

छत्रसाल कों ज्ञान सुनायो। परमतत्व परगट दरसायो ॥
त्यौं प्रभु प्राननाथ फरमायो। हुकुम धनी[2] कैा आगम गायो ॥
करौ राज छत्रसाल मही कैा। रन में होइ सदा जयटीकैा ॥
तुव कुल नृपति होहि अतियारे। लैहैं समर अरिन सों भारे ॥
बंस अखंड चलै छिति माहीं। जाकैा मेटि सकै अरि नाहीं
जो तुव बंसहि मेटन चाहै। ताकैा धनी अनीजुत ढाहै ॥
यह महि तुम्हैं दई तूरानी। जहाँ प्रगटि हीरन की खानी ॥
तुम दरपुस्त लहो सिरमोरे। तुव कुल विना फलै नहि औरे ॥

दोहा।

इहि विधि वह बरदान दै, कुल अखंड बल राखि।
राजतिलक छत्रसाल सिर, दैयो साखि दरसाखि ॥ २ ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथबरदानो नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

1—डिढ़ाइ=दृढ़ होता है।

2—धनी=स्वामी, ईश्वर।

छबीसवां अध्याय ।

दोहा।

बैठे कचन तखत पै भले बहादुरसाह ।
पीछे औरंगसाह के, कीन्हो हुकुम उछाह ॥ १ ॥

छन्द ।

तहा खानखाना अधिकारी । राजकाज की करै सम्हारी ॥
पातसाह ढिग तिन हित पाई । चपतिराय की करी बड़ाई ॥
चपतिराइ बड़ अतियारे । हजरत के बहु काम सम्हारे ॥
दारासाह दुंद जब कीन्हो । चपति वीर समर जस लीन्हो ॥
रन हरौल है फतै लियाई । औरंगजेब दिली तब पाई ॥
तिनके तनय छत्रपनधारी । छत्रसाल आहत भट भारी ॥
खुली कृपान अरिन मुख ताकी । जगी जीत जुद्धन में जाकी ॥
सुभट सिरोमनि समुझि अगौवा । करिये उनको वेग बुलौवा ॥

दोहा ।

इता वीर बुलवाइये, करिहै काम अनेक ।
हाल लोहगढ़ की विजै, लै देहै करि टेक ॥ २ ॥

छन्द ।

फतै लोहगढ़ की लै देहै । औरहु काम अनेक बनैहै ॥
सुनी खानखाना की बानी । साह हिये अति सुखद सुहानी ॥
विहँस बहादुरसाह बुलायो । छत्रसाल कौं गिरा पठायो ॥
लिख्यो खानखाना त्यों पाती । जामें सब विधि सबद सुहाती ॥

हजरत याद आप की कीन्हों। हित की मति सा खिन तें चीन्हों ॥
चहत लोहगढ़ किये महूमे[1]। तातें चित्त आप में झूमे ॥
या हित साह आपु बुलवाये। बड़े प्रीत सों लिखे पठाये ॥
तातें आप आइवी आछे। सकल सिद्धि हैहै तिंह पाछे ॥

दोहा।

वांच लिखे छत्रसाल नृप, लिखी साह कौ ज्वाव।
फतै लोहगढ़ की करें, हाजिर होत सिताब ॥ ३ ॥

छन्द।

पाती साह छता की वांची। हिये मान लीनी सब सांची ॥
फेर गये खत अब इत पेवी। करिकै भेंट लोहगढ़ जैवी ॥
छत्रसाल सुन मन सुख पाये। पातसाह के पास सिधाये ॥
सादर साह मिले हरपाई। भई प्रीतिजुत भेंट भलाई ॥
चले वेग ह्वै विदा उहातें। करी महूम लोहगढ़ जातें ॥
छेंकौ[2] किलौ लोहगढ़ वांकौ। भयौ समर नृप लरयो तहांकौ ॥
गोली गोला छुटत अरावे। दबकत कहू सुभट रन दावे ॥
हल्ला पसर करी अस रारी। माची मार परस्पर भारी ॥
दरवाजिन के फार किवारे। भीतर पैठ गये अनियारे ॥
तीन हजार तहां लर सूझे। सुभट किले के घाइल जूझे ॥

दोहा।

पंदरह सै बुंदेल कुल, घाइल जूझे बीर।
मार लोहगढ़ की फतै, लई छता रनधीर ॥ ४ ॥

छन्द।

फतै बजाइ दिली नृप आये। पातसाह तें अति सुख पाये ॥
कही लेव मनसब मनभाये। छत्रसाल तब बचन सुनाये ॥

१—महूमे = मुहिम्म, लड़ाई, युद्ध। २—छेकों = घेर लिया।

हम बगसीस यही करि पावैं । काम लगै जब आप बुलावैं ॥
हुकुम सुनत नम हाजिर होवैं । हजरत के रन काम सजोवैं[1] ॥
जा हमकौं बगसी दरपेसह । तामैं कौन होइ दिय पेसह ॥
दो करोर की जिमी ठिकानै । पुनि दीन्हो हीरन की खानै ॥
सो प्रभु की बगसीस बनीऊ । कर्म निमित्त निज हेत बनीऊ ॥
मनसबदार होइ को कावै । नाम विसुंभर सुन जग बांकौ ॥

दोहा।

इम प्रभु के विश्वासमय, बचन भाषि छत्रसाल।
विदा भये उर साह कैं, मुदित राखि महिपाल ॥ ५ ॥

छन्द ।

साह विदा कीनौ सुख पायौ। एक कुवँर रहिवो ठहरायौ ॥
छत्रसाल गृह आइ सिधाये। मऊ[2] पहुंच नौसान बजाये ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते दिल्ली तैं मऊ
आगमनो नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

१—संजोवै = पूर्ण करेंगे। २—मऊ = यह स्थान छत्रपुर राज्यान्तर्गत महेवा के निकट है और मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। यही पुण्यश्लोक प्रात स्मरणीय ... केशरी ... छत्रसाल का ... रहा है।